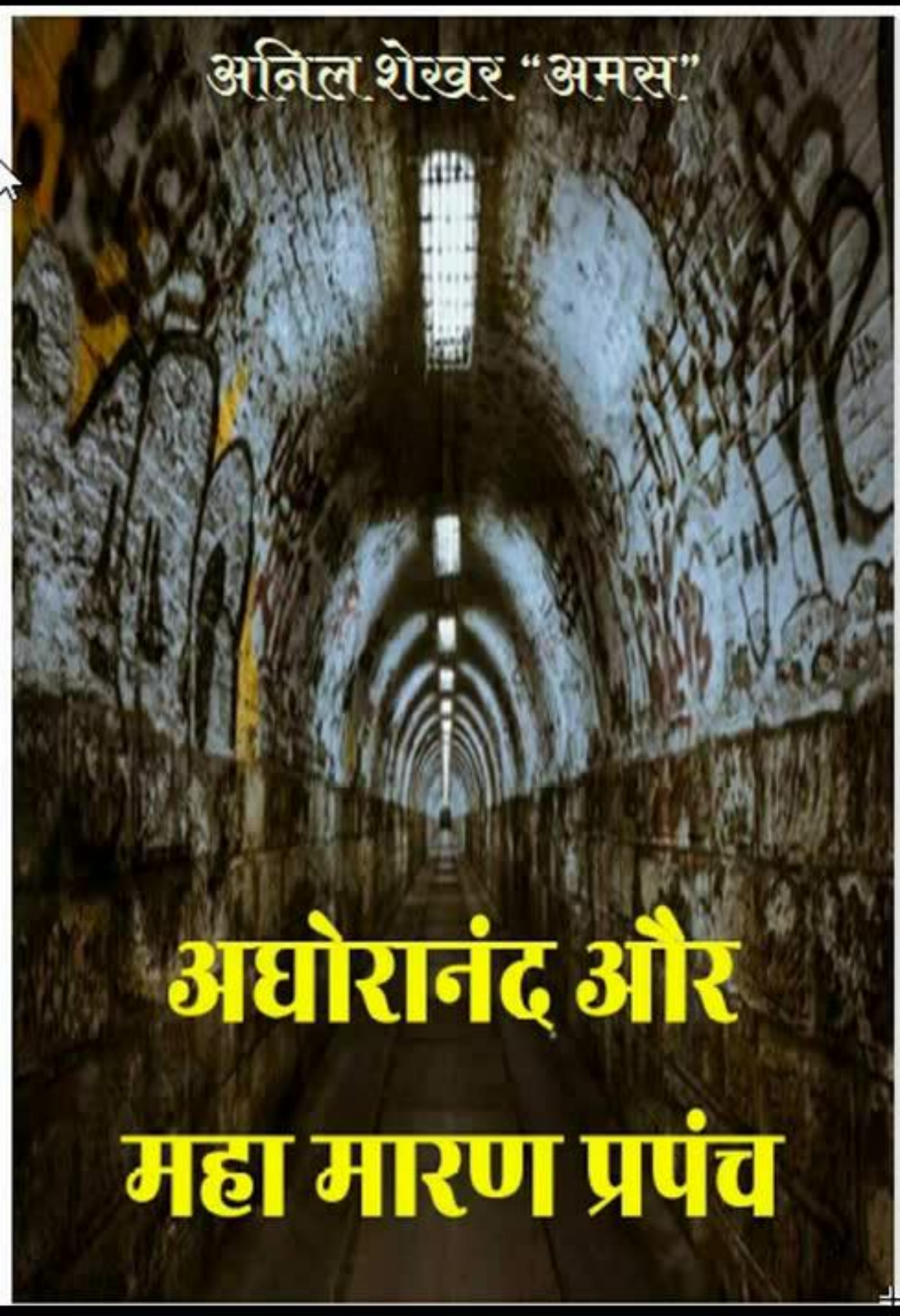
अनिल शेखर "अमर"
अघोरानंद और
महा मारण प्रपंच

अघोरानंद और महा मारण प्रपंच

॥ श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥

सभी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है,उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

इस कथा का नायक मैं, यानि अघोरानंद, 26 वर्षीय एक गृहस्थ युवा था । जो शासकीय सेवा में था और छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग शहर में रहता था । मेरी पत्नी का युवावस्था में ही देहांत

हो गया । उसके देहांत के बाद मैं बेहद अकेला पड़ गया । कुछ समय बाद मेरे जीवन में अजीब अजीब सी घटनाएं घटी । मेरे गुरु ने मुझे अघोर दीक्षा प्रदान की और मुझे अघोरानंद नाम दिया । जिसके बाद मेरा साधनात्मक जीवन प्रारंभ हुआ ।

साधनात्मक जीवन में मुझे अलग-अलग प्रकार के अनुभव मिले । जिसमें कई बातें ऐसी हैं जो नहीं लिखी जा सकती । कई बातें ऐसी हैं जो अविश्वसनीय है । बहुत सारी बातें ऐसी हैं जो बेहद रोमांचक हैं और जिसे पढ़ने में आपको आनंद भी आएगा । ऐसी ही कुछ घटनाओं को गुरु के आशीर्वाद से और भगवती महानील सरस्वती की कृपा से शब्द श्रंखला में बांधने का प्रयास किया है ..... जो आपको पसंद आएगा ।

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है ।
इसलिए इसके किसी भाग का अनुकरण
करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और
वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है
इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में
ही उतरें , अन्यथा आपको नुक्सान हो सकता है |

अंत में .....यह कथा मनोरंजन के लिए
लिखी गयी एक रचना है उसका आनंद लें ...

अनिल शेखर "अमस"

anilshekhar.amas@gmail.com

अघोरानंद और महा मारण प्रपंच

प्राकथन:-

मेरी अन्य कथाओं की तरह यह भी एक काल्पनिक कथा है । जो मैं आप लोगों को बताने जा रहा हूं ..

एक बात मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि महिलाओं पर किसी भी प्रकार के अत्याचार को मैं पूरी तरह से गलत मानता हूं । टोनही चुड़ैल इत्यादि कहकर किसी भी महिला को प्रताड़ित करना गलत है, और कानूनन अपराध भी है ।

यह एक काल्पनिक कथा है और इसमें इन शब्दों का उपयोग रोमांच पैदा करने के लिए किया गया है । इनके अस्तित्व की प्रमाणिकता यह कथा सिद्ध नहीं करती है ।

जैसा कि आप लोग जानते हैं कि मैं छत्तीसगढ़ राज्य में रहता हूं । यह भी वही की एक किंबदंती से प्रेरित

है । स्थान तथा पात्र दोनों काल्पनिक है । इनका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है ।

यह कथा रहस्य और रोमांच से भरपूर एक कथा है । इसे मनोरंजन के रूप में पढें और इसका आनंद लें.... आइये शुरू करते हैं .....

मनोहर दाऊ

मेरे शहर दुर्ग से लगभग 40 किलोमीटर दूर एक गांव है । उस गांव के जमींदार का नाम था मनोहर चंद्राकर । लगभग 100 एकड़ जमीन का मालिक था मनोहर । मनोहर खानदानी रईस था । उसके परदादा के समय से वे इसी गांव में बसे हुए थे । वे धान की खरीदी बिक्री का काम करते थे । खुद उनके खेत में भी काफी पैदावार होती थी । गांव की जमीन भी काफी उपजाऊ थी । वहां का धान बासमती के बेहतरीन किस्म का माना जाता था । उसकी काफी मांग रहती थी । घर में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं थी । लगभग हर सुख-सुविधा की चीज घर पर मौजूद थी । नौकर भी पर्याप्त मात्रा में थे ।

मनोहर लगभग 45 साल का गठीला बदन का मालिक था । स्वभाव से वह बेहद हंसमुख किस्म का आदमी था । उसकी पत्नी स्वर्णिमा भी गुणवान तथा अच्छे स्वभाव की महिला थी । गांव में दोनों का अच्छा खासा सम्मान था । उनकी बातों को ध्यान से सुना जाता था । गांव में किसी भी प्रकार की जरूरत होने पर मनोहर हर किसी की मदद करने के लिए तैयार रहता था । उसके पास संसाधनों की भी कोई कमी नहीं थी । गांव का कोई भी परिवार ऐसा नहीं होगा जिसकी मनोहर ने कभी ना कभी मदद ना की हो । इसलिए उसके एक इशारे पर पूरा गांव खड़ा हो जाता था ।

पिछले 15 सालों से वह निर्विरोध गांव का सरपंच चुना जाता था । सभी राजनीतिक दलों से भी उसके संबंध बहुत अच्छे थे । वह किसी विशेष राजनीतिक दल से नहीं जुड़ा था । सभी राजनीतिक दलों के लोग जानते थे कि उसके सामने किसी भी दल का सदस्य टिक नहीं पाएगा । सब जानते थे कि उसकी जमानत तक जब्त हो जाएगी । इसलिए कोई उसके खिलाफ अपना प्रतिनिधि खड़ा भी नहीं करता था ।

मंत्रियों से लेकर मुख्यमंत्रियों तक उसकी पहुंच हर जगह थी । चाहे वे किसी भी दल के हों । अपने इन्हीं संबंधों की वजह से वह अपने गांव में सभी प्रकार का विकास कार्य करवाता रहता था ।

उसके चार बच्चे थे । जिनमे 15, 13 और 12 साल के तीन लड़के थे । महेंद्र, राजेंद्र और गजेंद्र । एक 8 साल की नन्ही बिटिया थी । उसका नाम था उर्मिला । कुल मिलाकर सभी प्रकार से ऐश्वर्य पूर्ण और समृद्ध परिवार था । मेरे परिचित जगतराम जी ने मुझे उनके बारे मे बताया और किसी समस्या के समाधान के लिए मिलने की बात भी कही । मैंने हामी भर दी |

एक दिन मैं जब अपने घर में रोटियां बना रहा था तभी घर के बाहर एक गाड़ी के रुकने की आहट आई । फिर दरवाजे की घंटी बजी । अब आप जैसा कि जानते होंगे जब आदमी शादीशुदा रहता है और उसकी बीवी रहती है तो घर बड़ा सलीकेदार रहता है । अगर पत्नी मायके चली जाए तो उसका सलीका 50% कम हो जाता है । मेरी तो पत्नी अब इस दुनिया मे ही नहीं रही तो घर की सजावट के मामले में मेरा सलीका तो लगभग 0% था ।

मैं उसी प्रकार आटे से सने हुए हाथों के साथ दरवाजा खोलने पहुंच गया । दरवाजा खोला तो सामने एक प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी रोबीला व्यक्ति शानदार कपड़ों में खड़ा हुआ था । उसके दो साथी उसके पीछे भी खड़े हुए थे ।

मुझे देखते ही उसने कहा - मुझे अघोरानंद जी से मिलना है ।

मैंने उन्हें अंदर आने का इशारा किया और दरवाजा खोल दिया ।

उनको बैठक में बिठाकर मैंने कहा - पांच मिनट में आता हूं । दो रोटियां बच गई है ।

मैंने किचन में जाकर जल्दी-जल्दी वे दोनों रोटियां बनाई । उन्हें डब्बे में रखकर हाथ धोकर मैं बैठक में पहुंचा ।

मैं उस समय लुंगी और बनियान में था । वह शायद मुझे घर का नौकर समझ रहे थे ।

उन्होंने फिर कहा - मुझे अघोरानंद जी से मिलना है ।

मैंने कहा - बोलिए ! मैं ही हूं ।

उनकी आंखों में घोर अविश्वास के भाव उभरे । वह शायद विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि जिसके बारे में सुना है, वह बिना किसी विशेष गेटअप के इस प्रकार लूंगी बनियान में मिलेगा । उन्हें शायद अपने मिलने आने के फैसले पर भी शक हुआ होगा । कुछ देर उनको सामान्य होने में लगे । सामान्य हो जाने के बाद उन्होंने बातें प्रारंभ की । अविश्वास अब भी उनकी आंखों में छलक रहा था ।

उन्होंने कहा - मेरे एक परिचित जगतराम जी ने मुझे आपके बारे में बताया । शायद उन्होंने आपसे बात की होगी ।

मैंने बताया - जगतराम जी ने इस संबंध में मुझे जानकारी दी थी कि आप मिलने आना चाहते हैं । अभी मेरे ऑफिस जाने का समय हो रहा है । जल्दी से अपनी बात कह सकें तो बेहतर होगा । अगर बात ज्यादा लंबी है तो शाम के 6 बजे के बाद अगर आप आएंगे तो हम आराम से 10 बजे तक बैठ सकते हैं ।

उन्होंने कहा - बात थोड़ी सी लंबी ही है । मैं आप को आमंत्रित करने के लिए ही आया था । अगर आप शाम को फ्री होंगे तो मैं अपनी गाड़ी भेज दूंगा । आप मेरे घर आएंगे तो वहां की परिस्थिति भी देख पाएंगे और मैं अपनी समस्या भी खुलकर आपके सामने रख पाऊंगा ।

मैंने हामी भर दी । मनोहर जी चले गए । दिनभर कार्यालय के कामों में व्यस्त रहा । शाम को लगभग 5:30 बजे अपने घर पहुंचा । हाथ पैर धोकर कुर्सी पर बैठा ही था कि बाहर गाड़ी के खड़े होने की आवाज आई । घंटी बजी तो मैंने दरवाजा खोला । सामने मनोहर जी का ड्राइवर खड़ा था ।

मैंने कहा - मुझे 10 मिनट लगेंगे । कपड़े बदल लेता हूं । फिर आपके साथ चलूंगा ।

ड्राइवर ने सिर हिलाया और अपनी गाड़ी में जाकर बैठ गया । जैसा कि आप लोग जानते ही होंगे कि मेरे गुरु ने मुझे गृहस्थ जीवन में रहने का आदेश दिया हुआ था । इसलिए मैं अघोरी होने के बावजूद गृहस्थ वेशभूषा में

ही रहता था । मैंने जींस और टीशर्ट पहनी और ड्राइवर के साथ चल पड़ा ।

प्रकृति का सौंदर्य अगर देखना है तो आपको शहर छोड़कर गांव की ओर जाना ही पड़ेगा । शहर अब कंक्रीट के जंगल बस रह गए हैं । जहां देखने लायक ! आनंदित होने लायक ! कुछ भी नहीं है ।

खुली सड़क थी । दोनों तरफ हरियाली बिखरी हुई थी । धान के खेत लहलहा रहे थे । छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है । ठंडी ठंडी हवा चल रही थी । जब भी इस तरह की सड़क पर घूमने का अवसर मिलता है दिल खुश हो जाता है । लगभग 1 घंटे में हम लोग दाऊजी के गांव पहुंच गए । छत्तीसगढ़ के गांव में धनी और जमींदार व्यक्तियों को दाऊजी ही कहा जाता है ।

वहां पहुंचने पर मैंने देखा कि उनकी कोठी काफी पुरानी थी । लेकिन उसमें आधुनिक निर्माण भी साफ साफ दिखाई दे रहा था । गाड़ी खड़ी करने के लिए फाइबर प्लास्टिक के शेड बने हुए थे । दो ट्रैक्टर उनमें खड़े थे । उसके अलावा तीन कारें और खड़ी थी । यूं कहिए कि

एक नजर में पता चल जाता था कि बेहद संपन्न परिवार है ।

ड्राइवर ने मुझे बैठक में ले जाकर बैठाया और अंदर बताने के लिए चला गया । थोड़ी ही देर में उनकी पत्नी हाथ में पानी की ट्रे लेकर आई और मेरे चरण स्पर्श के लिए झुकी । छत्तीसगढ़ में सम्मान प्रदर्शित करने का यह एक तरीका है कि महिलाएं दूर से आपके चरण स्पर्श करती हैं ।

मैं मन ही मन या सोच रहा था की जब धन आता है तो लोगों का अहंकार आसमान पर होता है । लेकिन ऐसे भी लोग हैं , जो धनी मानी होने पर भी मुझ जैसे फकीर का सम्मान कर रहे थे । मुझे अच्छा भी लगा और संकोच भी हुआ । क्योंकि वह उम्र में मुझसे बड़ी थी । वैसे भी जब कोई मुझे चरण स्पर्श करता है तो मुझे बड़ा संकोच होता है ।

उन्होंने कहा - दाऊजी अभी खेत पर हैं । मैंने फोन कर दिया है वे आते ही होंगे ।

इतना बता करके वे वहां से चली गई । उनका घर पुराने तरीके से बना हुआ था । घर के बीच में खुली जगह थी । जैसा कि आमतौर पर छत्तीसगढ़ के पुराने घरों में होता है । जहां से सूर्य की किरणें घर के अंदर तक आती है । यदि आप देखे तो अधिकांश पुराने घरों में इस प्रकार की व्यवस्था रहती थी कि सूर्य का प्रकाश घर के अंदर तक आ सके । आज परिस्थितियां बदल गई है और लोग ज्यादा से ज्यादा सूर्य के प्रकाश से बचने की कोशिश करते हैं । जो कि शरीर के और हड्डियों के स्वास्थ्य के लिए अच्छी बात नहीं होती ।

खैर .....

मैं यह कह रहा था कि उनका घर बहुत ही बड़े आकार का था । घर के अंदर की साफ-सफाई और सजावट बता रही थी कि गृहणी बेहद कुशल और गुणी महिला है । हर चीज सलीके से रखी हुई थी । कोई भी सामान इधर-उधर बिखरा हुआ नहीं था ।

रहस्यमय कुआँ

दलान के एक हिस्से में एक कुआं बना हुआ था । जिसके ऊपर जाली लगी थी । यह एक नई चीज थी क्योंकि मैंने आमतौर पर छत्तीसगढ़ में किसी घर में दालान के अंदर कुआं नहीं देखा था । कुआं आमतौर पर घर के बाहर बनाया जाता है । लेकिन दाऊजी के घर में कुआं अंदर ही बना हुआ था ।

मैं वैसे ही बैठकर मुआयना करता रहा । टीवी चल रहा था । थोड़ी देर में चाय आ गई । चाय का प्याला आधा खत्म हुआ होगा कि दाऊजी आ गए । चाय पीने के बाद बातों का दौर चालू हुआ ।

मनोहर जी ने बताया - हमारे खानदान पर कोई अभिशाप मंडरा रहा है । परिवार में जो भी बड़ा लड़का होता है, वह 25 वर्ष की आयु प्राप्त करने से पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है । मेरे दादा जी के बड़े भाई 18 वर्ष की आयु में समाप्त हो गए । मेरे पिताजी के बड़े भाई 22 वर्ष की आयु में समाप्त हो गए । मेरे बड़े भाई 20 वर्ष की आयु में ही समाप्त हो गए थे । अब मेरा पुत्र भी बड़ा हो रहा है । भगवान की कृपा से मेरे पास 3 पुत्र है ,

फिर भी मैं अपने ज्येष्ठ पुत्र को नहीं खोना चाहता । क्या आप इसमें मेरी कोई मदद कर सकते हैं ?

यह एक अद्भुत बात थी । एक ही परिवार में पीढियों से बड़ा पुत्र अकाल मृत्यु को प्राप्त हो रहा है । इस प्रकार की बात मैंने आज तक नहीं सुनी थी । फिर भी दुनिया में कुछ भी होना संभव है । इसलिए मैं थोड़ा विचलित हुआ ।

इतने बड़े और संपन्न परिवार से होने के बावजूद पति पत्नी दोनों का व्यवहार बेहद आत्मीयता से भरा हुआ था । दोनों की सरलता से मैं बहुत ज्यादा प्रभावित हुआ ।

मैंने कहा - दाऊजी ! मुझे कल सुबह ऑफिस जाना है और अगर आप मुझे सुबह 8 बजे गाड़ी में भेज पाए तो आज रात में यहां रुक सकता हूं । इस समस्या के समाधान के लिए कोई उपाय संभव हो तो वह निकालने की कोशिश कर सकता हूं । या फिर शनिवार की शाम को आ जाऊंगा तो रविवार को ऑफिस जाने की दिक्कत नहीं रहेगी । आप अपनी सुविधानुसार बता दीजिए ।

दाऊजी ने कहा - आप बिल्कुल चिंता मत करिए । सुबह 8 बजे मैं खुद आपको ऑफिस छोड़ आऊंगा ।

मैंने कहा - अगर 9 बजे तक मुझे छोड़ देंगे तो मैं 10 बजे तक ऑफिस पहुंच जाऊंगा | उन्होंने इस पर सहमति जताई ।

बातचीत का दौर चलता रहा और इस बीच उनकी माता जी भी बातचीत में शामिल हो गई ।

मैंने उनसे पूछा - माताजी , कोई और विशेष बात आपको याद आ रही हो तो बताएं ।

उन्होंने कहा - ऐसा तो कुछ विशेष याद नहीं आ रहा है । लेकिन मैं भी यहां जब से आई तब से यही सुनती आ रही हूं कि इस परिवार पर किसी प्रकार का अभिशाप है । जिसकी वजह से सबसे बड़ा बेटा जीवित नहीं रहता ।

अपने बेटे लल्ला को बड़ा होता हुआ जब देखती थी, तो मेरे अंदर भी कहीं ना कहीं वह पीड़ा बढ़ती जाती थी कि यह ज्यादा दिन मेरे पास नहीं रहेगा ।

जब आपको यह पता हो कि आपका पुत्र किसी भी दिन मृत्यु को प्राप्त हो सकता है तो दिन काटना बड़ा मुश्किल होता है । हम दोनों पति पत्नी ने बड़ी मुश्किल से वे दिन काटे हैं ।

एक दिन जब लल्ला तालाब में डूब गया तब हम समझ नहीं पाए कि वह कैसे डूबा । क्योंकि वह तो गांव का बच्चा था । बचपन से तालाब में तैर कर बड़ा हुआ । वह ऐसा बच्चा था जो तालाब के इस छोर से उस छोर तक तैर कर चला जाता था । ऐसा वह 10 साल की उम्र से कर रहा था । दो से पांच मिनट तक तालाब के अंदर डुबकी लगाकर दूसरे छोर पर निकलना उसका शौक था । जब वह तालाब में जाता तो दो-तीन घंटे पानी में ही गुजारता था । उसे फिर पकड़ कर लाना पड़ता था । ऐसा बच्चा जो पानी में मछली की तरह रहता था । वह पानी में डूब गया । इस बात पर किसी को विश्वास नहीं हुआ ।

हमको लगा कि किसी ने उसके साथ कुछ गड़बड़ की होगी । उसकी किसी से कोई दुश्मनी नहीं थी, पता नहीं

कैसे वह तालाब में डूबा और उसकी मौत हो गई ।
इतना बताते बताते माताजी रो पड़ी ।

काफी देर बाद वह संयत हुई तो उन्होंने आगे बताया - मेरी सास ने मुझे बताया था । इनके भैया दामोदर जी हट्टे कट्टे और कसरती बदन के मालिक थे । दामोदर जी किसी भी काम को करने में संकोच न करने वाले थे । दबंग ऐसे कि उनके सामने कोई आवाज तक नहीं उठा सकता था । उन्होंने अगर कह दिया तो वह बात पत्थर की लकीर मानी जाती थी । और जो नहीं मानता था उस की कुटाई तय थी । इसलिए कोई उनके मुंह नहीं लगता था । किसी के भी पेड़ पर चढ़ जाना । पहाड़ी या जंगल में दूर-दूर तक घूमना यह सब उनका शौक था । उनकी चपलता और फुर्ती की लोग मिसाल देते थे । उनकी मौत भी ऐसे ही अचानक हुई । वे इमली तोड़ने पेड़ पर चढ़े थे और न जाने कैसे वे उस पेड़ से गिर गए थे और वहीं उनकी मौत हो गई ।

घटनाएं बडी विचित्र लगती हैं ..... मगर यह घटी है । अब अगर आप कुछ कर सके तो शायद मेरा पोता जिंदा रह सकेगा ।

मेरे लिए यह घटनाये बड़ी अजीब है लेकिन मैं प्रयास ज़रुर करूँगा - मैंने उनको आश्वस्त करने के लिए कहा ।

कपालिनी का आह्वान

मुझे भी इसका कोई कारण समझ में नहीं आ रहा था । ऐसी परिस्थितियों में कपालिनी ही मेरी मदद करती थी । मैंने तय किया कि रात को उसका आह्वान करूंगा ताकि सच्चाई का पता चल सके और कोई मार्ग निकालने की संभावना हो तो वह भी तलाशा जा सके ।

थोड़ी देर में बच्चे भी आ गए और इधर उधर की बातें चलती रही । रात का भोजन हुआ और मेरे लिए ऊपर वाली मंजिल में एक कमरे की व्यवस्था की गई । मैंने दाऊजी से कहा था कि मेरा कमरा ऐसा दीजिएगा, जहां आजू-बाजू में कोई ना हो ताकि एकांत में मैं अपना कार्य आसानी से कर सकूँ । ऊपर वाले तल्ले में चार पांच कमरे बने हुए थे । रात में वहां कोई नहीं रहता था । सारे लोग नीचे के कमरों में सोते थे । इसलिए मुझे ऊपर का कमरा दिया गया था ।

लगभग 11 बजे मैं अपने कमरे में पहुंचा और अघोरी अवस्था में आकर कपालिनी का आह्वान किया । आह्वान पूजन लगभग 1 घंटे तक चलता रहा ॥

लेकिन ।

मुझे आश्चर्य हुआ ! कपालिनी स्पष्ट नहीं हो रही थी .....

समान्यतः वह आधे घंटे के बाद स्पष्ट हो जाती है लेकिन 1 घंटे के बाद भी उसका स्पष्ट ना होना किसी अनहोनी की तरफ संकेत कर रहा था ....

इसका मतलब यह हो सकता था कि वह घर किसी तांत्रिक के द्वारा इस प्रकार से बंधित हो की बाहर की शक्तियां वहां प्रवेश न कर सके । ऐसी परिस्थिति में मेरे पास कपालिनी नहीं आ सकती थी । मेरी समझ में यह बात आ गई कि कुछ ना कुछ तांत्रिक बाधा यहां पर मौजूद है । जिसका निवारण करना पड़ेगा ताकि समस्या का समाधान हो सके । जब कपालिनी अपने कार्य में असमर्थ लगी तो मैंने आगे प्रयास नहीं किया । यह तय किया कि घर जाकर इसकी जानकारी लेने का प्रयास करूंगा । जब आपको पता हो कि आपके सिग्नल ब्लॉक किए जा रहे हैं तो समझदारी इसी में है कि आप

ऐसी जगह से सिग्नल प्राप्त करें जहां इस प्रकार के ब्लॉकेज की समस्या ना हो ।

इसे अगर में आज के उदाहरण से बताता हूं तो तांत्रिक बाधाएं एक प्रकार का जैमर है । जैसे प्रधानमंत्री के काफिले के साथ एक गाड़ी चलती है जिसमें जैमर लगा होता है । यह जैमर उस जगह के मोबाइल तथा उस प्रकार के यंत्रों के सिग्नल को जाम यानी बंद कर देता है । जिसके चलते वे यंत्र उस क्षेत्र में काम करना बंद कर देते हैं ।

वे सारे के सारे यंत्र सही होते हैं । उनकी कार्यक्षमता भी बनी रहती है । जब तक वह जैमर वहां पर रहता है, सारे के सारे यंत्र निर्जीव जैसे हो जाते हैं और किसी काम के नहीं रहते ।

ऐसा उनकी सुरक्षा के लिए किया जाता है ताकि कोई गलत व्यक्ति इन उपकरणों के इस्तेमाल से किसी प्रकार की घटना को अंजाम ना दें । यह तकनीक विज्ञान ने विकसित की है ।

तंत्र साधनाएं या गुप्त विज्ञान जो होता है वह काफी ऊंचे स्तर पर कार्य करता है । उसमें यह प्रक्रिया हजारों वर्षों से मौजूद है । फर्क सिर्फ यह है कि यह मानसिक रूप से की जाती है और सूक्ष्म यंत्रों का मंत्रों का और तंत्र का प्रयोग किया जाता है । इसलिए इसकी प्रामाणिकता पर संदेह किया जाता है ।

जो चीज हजारों वर्षों से चली आ रही है , वह यथार्थ ना होती तो शायद कब की खत्म हो गई होती । मंत्र तंत्र तथा यंत्र अथर्ववेद के काल से चले आ रहे हैं । जो कि हजारों साल पुराना है । दिक्कत यह हुई कि साधकों की कमी हो गई . क्योंकि मंत्र साधना में समय भी लगता है और बहुत ज्यादा प्रयास भी करना पड़ता है ।

वास्तविक साधक !! जिन्होंने अपने शरीर को गला कर साधना की ! अपने शरीर को कष्ट देकर साधना की ! जिन्होंने अपने आप को विकसित करने के लिए साधना की !! वह कम होते चले गए .....

ऐसे लोगों की संख्या बढ़ती चली गई ... जिन्होंने यह दिखाना शुरू किया कि वह साधना करते हैं । वास्तव

में उनकी साधना दिखावा ज्यादा और साधना कम हुआ करती थी । लोगों ने उन्हीं को साधक मानना चालू कर दिया और तंत्र मंत्र यंत्र की बजाय पाखंड समाज में बढ़ता गया....

साधक कम होते गए....

कथावाचक , प्रवचन कर्ताओं की संख्या बढ़ती गयी ....

जिनहोने सुनी सुनाई बातों को चटपटे अंदाज मे मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत करना शुरु किया ।

कथा सुनने में सुनने वाले को बहुत ज्यादा प्रयास नहीं करना पड़ता । इसलिए वह भी बैठकर कथाएं सुनकर अपने आप को आध्यात्मिक समझने लगा । जबकि सच्चाई यह है कि कहानी सुनने से बहुत ज्यादा आपके अंदर आध्यात्मिक जागृति नहीं आएगी । जब तक कि आप स्वयं साधना नहीं करते ।

खैर.....

यह एक अलग विषय है इस पर चर्चा फिर कभी ....

हम अपने विषय पर लौटते हैं...

मुझे यह समझ में आ गया था कि उस स्थान पर कोई ना कोई ऐसी तांत्रिक बाधा उपस्थित है । जिसकी वजह से कपालिनी स्पष्ट नहीं हो पा रही है । मैंने यह विचार किया कि अब घर जाकर इस विषय पर और चिंतन मनन कर के उपाय निकालने की जरूरत पड़ेगी ।

तभी !

मुझे दरवाजे के बाहर हल्का खटका महसूस हुआ । मैंने जल्दी से कपड़े पहने और दरवाजा खोला लेकिन तब तक जो भी वहां था वह गायब हो चुका था । मुझे सीढ़ियों से सिर्फ हरे रंग के साड़ी जैसे कपड़े का एक हिस्सा बस दिखाई दिया .....
मैं दौड़ कर उस तक पहुंचा ... लेकिन तब तक वह जो भी था गायब हो चुका था ....

कपड़ा या साड़ी भी मैं हल्का सा ही देख पाया था । इसलिए यह भी स्पष्ट नहीं था कि वह स्त्री थी या पुरुष

था । जो भी रहा हो । मुझे यह बात समझ में आ गई कि यहां दिक्कत कुछ न कुछ है । उसको जारी रखने में कोई न कोई प्रयत्नशील भी है । वह यह नहीं चाह रहा कि मैं या कोई और व्यक्ति उसमें हस्तक्षेप करें । इसलिए वह क्या हो रहा है उसे जानने की कोशिश कर रहा है ।

मैं वापस अपने कमरे में लौट गया । आधी रात को किसी दूसरे के घर में ज्यादा भागदौड़ करना उचित नहीं था । इससे घर वाले भी घबरा सकते थे । मैंने वापस अपने कमरे में लौटने के बाद अपनी सामग्री तथा आसन को समेटा ।

इन सब प्रयासों में लगभग एक बज चुके थे । मैंने गुरुदेव को याद किया उनके चरणों में मानसिक पूजन समर्पित किया और बिस्तर पर लंबा हो गया । इसे आप महामाया की कृपा कहिए या गुरुदेव का आशीर्वाद ! बिस्तर पर लेटते ही पांच दस सेकंड में गहरी नींद आ जाती है और उस दिन भी यही हुआ ....

मैं गहरी नींद में सो रहा था । सुबह ब्रह्म मुहूर्त का समय रहा होगा, जब मुझे गुरुदेव की सूक्ष्म आकृति मानस पटल पर स्पष्ट हुई । उन्होंने निर्देश दिया - "कुआं बंद करवाओ" और फिर वह अदृश्य हो गए । गुरुदेव के संकेत इसी प्रकार के एक लाइन में या एक शब्द में ही होते हैं । उनका अर्थ कई बार समझ में भी नहीं आता था, अब धीरे-धीरे अनुभव के आधार पर 80% संकेत समझ जाता हूं । लेकिन अब भी 20% संकेत समझने के लिए प्रयास करना ही पड़ता है । क्योंकि गुरुओं की बातें ही ऐसी होती है....

उसके बाद मैं उठ गया । नित्य कर्मों से निवृत्त होकर पूजा आदि संपन्न करके लगभग 7 बजे नीचे उतरा तो मैंने देखा कि परिवार के सदस्य वहां पहले से मौजूद थे । परिवार के सदस्यों के अलावा गांव के भी कुछ लोग वहां मौजूद थे । गांव में बातें बड़ी जल्दी फैलती है । किसी के घर में भी मेहमान अगर आया हो तो आधे से ज्यादा गांव को मालूम रहता है कि फलाने के घर में मेहमान आया हुआ है । मेरे लिए भी चाय आई ।

मैंने बात छेड़ी - आपने यह कुआ घर के अंदर क्यों बनाया हुआ है ।

दाऊजी ने बताया - यह कुआं कम से कम 100 साल पुराना होगा । यह ऐसा कुआं है जिसका पानी कभी खत्म नहीं होता । गर्मी में जब पानी की जबरदस्त किल्लत रहती है तब भी इस कुए में पानी रहता है ।
लगभग आधा गांव गर्मी में इसी कुएं के पानी को इस्तेमाल करके अपनी प्यास बुझाता है ।

उस कुएं का इतना महिमामंडन हो गया था कि अब मैं भी संकोच में था कि मैं इसे बंद करने के लिए कैसे कहूं ?

मैंने कहा - आपने इसे खुला क्यों रखा हुआ है । उसे बंद करवा कर इसमें पंप लगवा दीजिए ।

यह सुनते ही वहां पर बैठी हुई एक महिला बड़े गुस्से में बोली - " काबर बंद कराबो ?" (याने क्यों बंद कराएंगे ।)

कुछ देर के लिए मैं भी चकित रह गया । मुझे समझ नहीं आया कि उसने ऐसा क्यों कहा.....

वहां बैठे हुए अन्य लोगो को भी कुए को बंद करने की बात पसंद नहीं आई थी । दाऊजी भी इस बात से इत्तेफाक रखते हुए नहीं दिखे ।

कई बार ऐसी बातें होती हैं जो 100 में से 99 लोगों को पसंद नहीं आती है । लेकिन उनको करना परिस्थितियों के हिसाब से बेहद जरूरी होता है । गुरुजी के निर्देश के बाद मैं भी यह जानता था कि इस समस्या का समाधान इस कुएं में हीं छुपा हुआ है । इसलिए इसकी व्यापक खोजबीन किए बिना मामला सुलझ नहीं सकता था । जिस भी व्यक्ति के द्वारा मामले में गड़बड़ की जा रही थी , वह भी घर के आसपास ही मौजूद था । मैं यह भी जानना चाहता था कि इसे बंद करने की बात कहने पर सबसे ज्यादा विचलित कौन हो रहा है, और मेरा पहला शक उसी महिला पर था क्योंकि रात में भी मैंने शायद साड़ी का छोर ही देखा था । जो संभावित महिला की ओर संकेत कर रहा था...

मनोहर जी ने कहा - इसी का पानी भरी गर्मी में सभी का सहारा होता है । इसे बंद करवाने में कोई खास फायदा नहीं है ।

मैंने कहा - आप बाहर एक कुआं खुदवा कर इसे बंद करवा सकते हैं ।

दाऊजी बोले - मैंने बाहर दो कुएं और खुदवा रखे हैं । उनमें से किसी में गर्मी के मौसम में पानी नहीं बचता है । मार्च होते होते दोनों सूख जाते हैं । अप्रैल मई और जून इसी कुए के सहारे निकलते हैं । हमारा परिवार तो इस्तेमाल करता है । इसके अलावा आधे गांव के लोग इसी कुएं के पानी को पीने के लिए इस्तेमाल करते है ।

अब आप देख लीजिये , यह महिला हमारे यहां बनिहारिन है , (इसका मतलब होता है काम करने वाली महिला), उसका पूरा काम इसी कुएं के पानी के भरोसे चलता है । इसीलिए वह भी उसके लिए इंकार कर रही है ।

मैंने फिर बात को आगे बढ़ाना उचित नहीं समझा । तब तक 8 बज चुके थे । दाऊजी अपनी गाड़ी में मुझे घर पहुंचा गए ।

मैंने रास्ते में उनसे कहा - आपकी समस्या का राज उसी कुएं में छुपा हुआ है । उसी लिए मैं उसे बंद करने की बात कह रहा था । क्या आपने कभी उसकी सफाई करवाई है ?

उन्होंने कहा - एक तो वह घर के अंदर है । ऊपर से आड़ में है । उसका पानी इतना साफ है कि उसे साफ करवाने की जरूरत कभी महसूस नहीं हुई ।

मैंने कहा - मुझे जो संकेत मिले हैं, वह इस ओर इशारा करते हैं, कि सारी समस्या उसी कुएं के साथ जुड़ी हुई है । आप उसकी सफाई करवाने की व्यवस्था रखिए , मैं शनिवार को फिर आता हूं । सफ़ाई मेरे सामने ही करवाइएगा ।

दाऊजी ने सहमति मे सर हिलाया ।

मुझे घर तक पहुंचा कर वे वापस चले गए । मैं भी तैयार हो कर ऑफिस के लिए रवाना हो गया ।

उस दिन गुरुवार था । रात को मैं वापिस साधना में बैठा । मैं भी जानना चाहता था कि आखिर वह कौन सा राज है, जहां तक मेरी कपालिनी भी नहीं पहुंच पा रही थी । मंत्र जाप करते हुए 15 मिनट गुजरे होंगे कि कपालिनी उपस्थित हो गई ।

उसने आते ही कहा - वहां बहुत प्रबल बंधन है जिसके कारण मैं वहां प्रकट नहीं हो पाई ।

मैंने उससे मार्ग पूछा उसने त्रिपुर भैरवी का हवन करने की सलाह दी । त्रिपुर भैरवी तंत्र साधना में देवी के स्वरुप जिन्हें महाविद्या कहा जाता है उनमें से एक है । इनकी साधना प्रमुख रुप से तांत्रिको के द्वारा ही की जाती है । इनका स्वरुप बेहद उग्र है और इनकी साधना के दौरान कई प्रकार के डरावने अनुभव भी होते हैं ।

रहस्यमय महिला

मैंने अगले दिन सुबह फोन करके दाऊजी को हवन करने की आवश्यकता के बारे में बताया। वह तुरंत राजी हो गए। तय हुआ कि शनिवार को सुबह हवन किया जाएगा। मैंने उनको सामान लिखवा दिया जो कि सामान्य हवन सामग्री थी जो आसानी से कहीं भी मिल सकता था। सिर्फ एक चीज विशेष थी और वह थी काली गोमची यह छोटे-छोटे दाने जैसे होते हैं। जिनका आकार लगभग छोटे देसी चने के बराबर होता है। यह काले सफेद दोनों रंगों में पाए जाते हैं। जो सामान्य रूप से पाए जाते हैं।

आमतौर पर पाया जाने वाला गोमची एक तरफ लाल और एक तरफ काला यानी आधा लाल और आधा काला होता है।

मुझे काली गोमची के मिलने पर संदेह था, लेकिन दाऊजी ने बताया कि मां की बाड़ी में ही काली गोमची उपलब्ध है। इस तरह से अब हवन की सारी सामग्री की व्यवस्था हो चुकी थी।

शनिवार को सुबह लगभग 8 बजे मैं अपने मित्र गोपाल के साथ गांव की ओर रवाना हो गया । गोपाल और मैं अक्सर ऐसे ही घूमने निकला करते थे । उस दिन शनिवार था । छुट्टी थी । तो जब मैंने गोपाल से बात छेड़ी तो वह मेरे साथ आने के लिए तैयार हो गया । मैंने दाऊ जी को फोन करके बता दिया कि गाड़ी भेजने की जरूरत नहीं है , मैं स्वयं पहुंच जाऊंगा ।
हम लोग लगभग 9 बजे गांव पहुंच गए । हवन की व्यवस्था करते-करते आधा घंटा और लग गए । लगभग 10 बजे हवन प्रारंभ हुआ । महाविद्या तंत्र का आधार मानी जाती है । कुल 10 महाविद्या हैं । जो अलग-अलग प्रयोजनों के लिए सिद्ध की जाती हैं और उनका विधान भी अलग अलग होता है । त्रिपुर भैरवी उसमें से एक प्रमुख महाविद्या है । जिनका प्रयोग विशेष रूप से तंत्र प्रयोगों की काट के रूप में होता है ।

वह रहस्यमय महिला भी तैयारियों के दौरान वहां पर मौजूद थी । लेकिन जैसे ही मैंने पृथ्वी पूजन प्रारंभ किया वह धीरे से वहां से बाहर निकल गई । लगभग

उस पर संदेह करने का कोई ठोस कारण मेरे पास नहीं था । और मैं बेवजह किसी महिला पर उंगली नहीं उठाना चाहता था । इसलिए मैंने सोचा कि देख लेते हैं कि क्या होता है ।

उसने अपनी साड़ी को धोती की तरह बांधा और मिनटों में कुएं मे उतर गई । कुएं में लगभग 8 से 10 फीट पानी रहा होगा वह कुएं में डुबकी लगाती और नीचे जाकर 2 मिनट में वापस आ जाती । एक बाल्टी नीचे की गई थी । नीचे से बाल्टी जब ऊपर आती तो उसमें कुछ सामान ऊपर आता । इस प्रकार से 8 या 10 बार उसने डुबकी लगाई । इस दौरान वह बाल्टी लगभग 4 बार ऊपर आ चुकी थी । उसमे से कभी तांबे का लोटा, कभी बच्चों के खेलने की गेंद, कभी चाबी, कभी पेन और एक बार तो बच्चों की स्लेट भी निकली । कुल मिलाकर ऐसे सामान थे । जो आमतौर पर उस कुएं में गिर सकते थे । यह सब करने के बाद वह सीढ़ियों तक आ गई और उसने बताया कि अब और कुछ नीचे में नहीं है । तब तक लगभग 2 घंटे का समय व्यतीत हो चुका था ।

कुएं से कुछ नहीं मिला था इसलिए आगे सफाई को जारी रखने का कोई मतलब नहीं था । मैंने अपनी और देखते हुए दाऊजी की तरफ सिर हिला दिया । दाऊजी ने उसे बाहर आने का इशारा कर दिया । जो चीजें बाहर निकली थी । उन्हें कुछ भी ऐसा नहीं था, जिस पर संदेह किया जा सके । इसलिए सभी लोग मेरी तरफ अजीब सी निगाहों से देख रहे थे ।

दूसरों की मदद करने का एक बड़ा नुकसान यह भी है । जब आप समस्या की जड़ तक पहुंच जाते हैं, तो कई बार वह समस्या की जड़ ऐसी होती है जिस पर घरवाले भी विश्वास करना नहीं चाहते हैं । उनको ऐसा लगता है कि संबन्धित तांत्रिक गलत धारणा बना कर बैठा हुआ है और जब उसकी धारणा गलत है ऐसा साबित होने लगता है तो वे उसे अजीब सी निगाहों से देखने लगते हैं । मेरे साथ भी वही हो रहा था ।

मैंने कुएं के बारे में शंका जाहिर की थी ....

घरवालों को ऐसा लग रहा था कि सफाई किए जाने के दौरान कोई भी अजीब चीज नहीं निकली है । इसलिए

कुएं से कुछ नहीं मिला था इसलिए आगे सफाई को जारी रखने का कोई मतलब नहीं था । मैंने अपनी और देखते हुए दाऊजी की तरफ सिर हिला दिया । दाऊजी ने उसे बाहर आने का इशारा कर दिया । जो चीजें बाहर निकली थी । उन्हें कुछ भी ऐसा नहीं था, जिस पर संदेह किया जा सके । इसलिए सभी लोग मेरी तरफ अजीब सी निगाहों से देख रहे थे ।

दूसरों की मदद करने का एक बड़ा नुकसान यह भी है । जब आप समस्या की जड़ तक पहुंच जाते हैं, तो कई बार वह समस्या की जड़ ऐसी होती है जिस पर घरवाले भी विश्वास करना नहीं चाहते हैं । उनको ऐसा लगता है कि संबन्धित तांत्रिक गलत धारणा बना कर बैठा हुआ है और जब उसकी धारणा गलत है ऐसा साबित होने लगता है तो वे उसे अजीब सी निगाहों से देखने लगते हैं । मेरे साथ भी वही हो रहा था ।

मैंने कुएं के बारे में शंका जाहिर की थी ....

घरवालों को ऐसा लग रहा था कि सफाई किए जाने के दौरान कोई भी अजीब चीज नहीं निकली है । इसलिए

यह कुआं बिल्कुल निर्दोष है और उसमें कोई समस्या नहीं है । मैं बेवजह तिल का ताड़ बना रहा हूँ । अब मेरे पास भी कोई दूसरा रास्ता नहीं था । क्योंकि कुए के अंदर से कुछ भी संदिग्ध नहीं निकला था ।

चाय पीने के बाद मैंने दाऊजी से विदा ली । विदा लेने के बाद मैं और गोपाल बाइक में बैठकर घर वापस आने के लिए निकल पड़े .....

उस समय तक शाम गहरा चुकी थी । अंधेरा होने लगा था । गांव की सड़कों में स्ट्रीट लाइट नहीं होती । इसलिए अंधेरा होने के बाद अगर सड़क के दोनों तरफ पेड़ हो तो ऐसा लगता है जैसे काली गुफा के अंदर से जा रहे हो ।

हम दोनों गांव से बाहर निकले । गांव से लगभग 1 किलोमीटर आए होंगे ।

तभी !

जो दृश्य हमने देखा .....

उसे देखकर हम दोनों की आंखें फटी की फटी रह गई.....

पूरी सड़क सुनसान थी .....

आगे पीछे दूर तक कोई नहीं दिखाई दे रहा था ...

और वही रहस्यमय महिला हमारे साथ दौड़ रही थी .....

दौड़ क्या रही थी यूं कहिए उड़ती हुई आ रही थी .....

उसके पाँव जमीन से लगभग एक फूट ऊपर थे.....

सबसे अजीब बात यह थी कि वह पूरी तरह निर्वस्त्र थी...

उसके लंबे लंबे बाल खुलकर बिखरे हुए थे और हवा मे उड़ रहे थे ...

मैंने पहले भी विचित्र घटनाएं देखी थी । इसलिए थोड़ा संतुलित था । मेरे पीछे बैठे हुए गोपाल ने डर के मारे

कांपना चालू कर दिया । उसकी कम्पकम्पाहट से मुझे भी गाड़ी को नियंत्रित करने में मुश्किल हो रही थी ।

मैंने गाड़ी की रफ्तार को धीमा कर दिया ।

अभी भी वह महिला मेरे बगल में चल रही थी । उसने गोपाल को अचानक पकड़ लिया । गोपाल की घिग्गी बंध गयी थी । उनकी झुमा झटकी में गाड़ी का संतुलन बुरी तरह डगमगा रहा था । अचानक वह पलटकर पेट्रोल की टंकी के ऊपर आ गई । अब मुझे सामने कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था । मैं दाएं बाएं झुकने की कोशिश करता तो वह भी उसी अनुसार झुक जाती थी । ताकि मैं सामने की कोई चीज ना देख सकूं । मुझे लगा कि अब मुझे मंत्र शक्ति का प्रहार कर लेना चाहिए ।

तभी ..... अचानक..... एक जोर की आवाज के साथ मोटरसाइकिल का पिछला टायर फट गया और गाड़ी लहराने लगी ।

उस महिला ने गुलाटी मार कर पीछे की तरफ छलांग लगाई । उसने मोटरसाइकिल को अपने हाथ से पकड़ लिया । मैंने मोटरसाइकिल को और तेजी से चलाने

की कोशिश की लेकिन वह बिल्कुल आगे नहीं चली । ऐसा लग रहा था । जैसे उसके चक्के जाम हो गए हो । इंजन की गुड़गुड़ाहट बढ़ती थी । लेकिन चक्का आगे नहीं बढ़ पा रहा था ।

अंधेरी रात.....

सुनसान सड़क.....

और मोटरसाइकिल को पकड़ कर खड़ी हुई वह महिला.....

कुल मिलाकर बड़ी अजीब सी स्थिति थी !

गोपाल बेहोश हो चुका था । पता नहीं कैसे वह मेरे ऊपर लटका हुआ था । मैंने भी उसका बाया हाथ पकड़ लिया था कि वह नीचे न गिरे । बड़ी जटिल स्थिति थी मैं सोच में पड़ा हुआ था कि गाड़ी से कैसे उतरू और वापस प्रयोग कैसे करूं ।

खोरबहरिन की आंखें लाल-लाल चमक रही थी ...

ऐसा लग रहा था जैसे लाल रंग के दो बल्ब अंधेरे में चमक रहे हो ।

उसकी आंखें बिल्कुल वैसी ही लग रही थी , जैसी अंधेरे में जानवरों की आंखें लगती है.....

वह कोई चीज चबा रही थी और उसके मुंह से चमकती हुई लार जैसी कोई चीज जमीन पर टपकती थी । जमीन से थोड़ी दूर हवा में ही एक विस्फोट जैसा होता था । जिसके साथ रोशनी का गोला उभरता था ।

मुझे यह पता था कि महामाया की कृपा से मेरा कुछ भी बिगड़ने वाला नहीं है । इसलिए मैं गोपाल को संभालते हुए उस महिला के द्वारा प्रदर्शित किए जा रहे चमत्कारिक दृश्यों को देख रहा था ।

उसने मेरी तरफ तमतमाई हुई नजरों से देखते हुए चेतावनी दी - इस गांव से दूर रहने में ही तेरी भलाई है ! मेरी बात मान ले ! वरना ! तुझे कोई नहीं बचा पाएगा !

मैंने उसे जवाब देने का मन बनाया ही था कि तभी दूर से किसी चार पहिया वाहन की रोशनी आती हुई दिखाई दी । उसकी हेड लाइट की रोशनी जैसे ही उस महिला पर पड़ी । वह गायब हो गई । गाड़ी धीरे धीरे पास आई । पास आने पर मैंने देखा कि वह दाऊजी का ड्राइवर था जो अपने साथियों के साथ था ।

उन्होने पूछा - क्या हुआ ?

मैंने उनसे कहा - हम लोग गांव से आ रहे थे और यहां पर आकर गाड़ी पंचर हो गई ।

उन्होंने पूछा - वह औरत कौन थी । शायद उनको उसकी एक झलक मिल गई थी ।

मैंने कहा - मुझे वह खोरबहरीन जैसी लगी ।

गोपाल को जीप में लिटाया गया और मेरे पानी छिड़कने पर काफी देर में वह होश में आया ।

इस बीच वह सारे लोग टॉर्च लेकर आसपास लगभग एक फर्लांग का इलाका ढूंढ आए लेकिन वह कहीं नहीं

मिली । सब आश्चर्य में थे कि वह इतनी जल्दी कहां गायब हो गई ....

अब मैं उनको क्या बताता कि वह जब मेरे बाइक की स्पीड में उड़ते हुए साथ आ सकती है तो इतने समय में तो न जाने कहां की कहां पहुंच रही होगी ।

मेरी बाइक को उठाकर जीप में डाला गया । उसमें बैठकर हम सब वापस गांव चले गए । उस समय तक लगभग आठ बज गए होंगे ,जब हम मनोहर जी के घर पहुंचे ।

हमें दोबारा से घर में देखकर मनोहर जी आश्चर्यचकित हुए उन्होने कारण जानना चाहा ।

मैंने उन्हें सारी बात बताई ।

यह सब सुनकर मनोहर जी सकते मे आ गए । अब उन्हे थोड़ा यकीन होने लगा । हम लोगों ने खाना खाया । खाना खाने के बाद फिर से घर पर सभी लोग बैठे । जिसमे मैं, गोपाल, मनोहर, उनका भाई सुधाकर, दोनों की पत्नियां और उनकी मां शामिल थे । मैंने पूरी कहानी

विस्तार से बताइ कि किस प्रकार से घटनाएं घटित हुई ....

कुएं का नरमुंड

मैंने कहा - कई बार समस्या की जड़ वहाँ होती है । जो हम कभी सोच भी नहीं सकते । मेरा अनुभव यह कहता है कि अधिकांश समस्याओं में, समस्या पैदा करने वाला व्यक्ति, घर का, परिवार का या, अपने परिचय का ही कोई व्यक्ति होता है । जिसकी पहुंच घर के अंदर तक आसानी से हो । वही आमतौर पर तंत्र प्रयोगों में सफल हो पाता है ।

मुझे ऐसा लगता है कि वह महिला इस पूरे मामले में इन्वॉल्व है और यह संभव है कि इसके पहले की पीढ़ियां भी आपके इसी हवेली में आना-जाना करती रही हो ।

माताजी तुरंत बोल पड़ी - खोरबहरीन की मां भी यहीं पर काम करती थी । उसने बताया था कि उसकी सास भी यहीं पर काम करती थी ।

मैंने कहा - देख लीजिए यह लोग पिछले कई पीढ़ियों से आपके यहां आ रहे हैं । हो ना हो यह मायाजाल इनमें से ही किसी के द्वारा बिछाया गया है ।

अब दाऊजी के चेहरे पर चिंता की लकीरें दिखने लगीं और पूछा - क्या किया जाए ?

मैंने कहा - आप एक काम करें कि अपने विश्वस्त नौकरों को बुलाकर कुएं को साफ करवाये । यदि संभव हो तो बाहर से आदमी बुलाकर करवाएँ तो और अच्छी बात है । एक बार कूये की सफाई कर दें तो मामला थोड़ा और साफ हो पाएगा ।

अगले दिन सफाई कार्यक्रम तय हुआ । जिसके लिए मैंने मनोहर जी को पहले ही ताकीद कर दी थी कि बाहर के किसी भी आदमी को उस दिन दोपहर तक घर में घुसने ना दे । जब तक कि सफाई का कार्यक्रम पूरा ना हो जाए । विशेष रूप से उस महिला को तो बिल्कुल न घुसने दे ।

अगले दिन वह महिला सुबह-सुबह आई , लेकिन उसे भाभी जी ने घर भेज दिया और कहा कि दोपहर के बाद आना । जो भी आ रहा था उसे दोपहर के बाद आने के लिए कह कर वापस लौटा दिया जा रहा था ।

उस कुएं में लगभग 10 फुट पानी था । घरवालों ने बताया कि कुएं का पानी एक बार खाली होने के बाद वापस 8 से 10 घंटे में भर जाता था । तय यह हुआ कि उनके आने के बाद कुएं का पानी पंप डालकर खाली कराया जाएगा और उसके बाद उसकी सफाई की जाएगी ।

अपने खेत से पंप सेट मंगवाया गया और उसमें पाइप लगाकर कुवे से पानी निकालने की व्यवस्था बनाई गई । इस दौरान सुधाकर जी ने अपने मित्र को फोन कर दिया था और चार लड़के सफाई के लिए बुला लिए थे ।

उनके आने तक पंप लगाकर सफाई करने के लिए चालू किया गया । उसके चालू होने के बाद 1 घंटे में कुआं लगभग खाली हो गया उसके अंदर कुछ गोल-गोल चीजें पड़ी हुई दिखाई दे रही थी ।

चारों 17-18 साल के लड़के थे । मुझे संदेह था कि उन बच्चों को किसी प्रकार की दिक्कत आ सकती है । इसलिए मैंने अपने तांत्रिक झोले में से हनुमान जी के

मंत्रों से सिद्ध किया हुआ रक्षा धागा निकालकर चारों के हाथों में बांधा । सभी के माथे पर सिंदूर का तिलक लगाया । गुरुदेव से प्रार्थना की कि उनकी रक्षा करें ।

कुआँ खाली होने के बाद चारों लड़कों को नीचे भेजा गया । पहले दो लड़के नीचे तली तक उतर गए । बाकी दो लड़कों को मैंने कहा कि सीढ़ियों के पास वाले हिस्से को अच्छी तरह से देखो । अगर कोई गड्ढा या ऐसी कोई चीज दिखाई दे तो उसमें भी कोई चीज होगी तो उसे भी निकाल लेना ।

बाल्टीया लटका दी गई और खोज भी चालू हो गई । जो दोनों लड़के नीचे पहुंचे थे । उन्होंने वह कीचड़ सनी गोल गोल चीजें उठाकर बाल्टी में डाल दीं । गोल गोल चीजें कुल 3 थी । उन्होंने उसे उठाकर बाल्टी में डाला । बाल्टी हम लोगों ने ऊपर खींची ।

उसके अलावा वहां पर डंडे जैसी तीन चार चीजें और पड़ी हुई थी । उसको अगली में डाल दिया गया । वह भी ऊपर खींची गई ।

जो लड़के सीढ़ियों के नीचे की जगह देख रहे थे । उन लोगों ने भी कुछ कुछ चीजों को वहां से निकालकर बाल्टीयों में डालना चालू किया । थोड़ी देर में दोनों बाल्टियाँ जो उनके पास थी , वह भी भर गई । उनको ऊपर खींच लिया गया और बाहर पलटा कर फिर से उनको दे दिया गया ।

वे दोनों बाल्टियाँ भी अजीब अजीब सी चीजों से भर गई । उन्हें भी बाहर खींच लिया गया । अब सारी चीजों को एक जगह इकट्ठा किया गया ।

पाइप से पानी डालकर उसकी सफाई की गई ।

उन चीजों को देखकर घर वालों के पांव तले की जमीन खिसक गई ।

जो गोल-गोल तीन चीजें निकली थी ..... वे तीन नरमुंड थे.....

यानी ..... इंसान की तीन खोपड़ीया ।
उसके अलावा जो सामान सीढ़ियों के नीचे से बरामद हुआ उसमें कई हड्डियां थी । लम्बे लम्बे महिलाओं के

बाल के गुच्छे थे । टूटी हुई चूड़ियां थी । अलग-अलग रंग के धागे थे । चमड़े की बनी हुई रस्सी जैसी चीजें भी थी । जो संभवत किसी जानवर या पक्षी की आंते रही होंगी । जिसे सुखाकर रस्सी जैसा बनाया गया था । उससे बहुत सारी सामग्री को बांधा गया था ।

तीनों मुंड भी आपस में बंधे हुए थे । उनको एक लोहे के छल्ले में फंसा कर एक दूसरे से जोड़ा गया था । तीनों खोपड़ीयों के माथे के बीचो-बीच लोहे की एक एक कील धसी हुई थी । उनको देखकर ऐसा लग रहा था कि वह काफी साल पुरानी रही होंगी । वह कीले किसी लोहार के द्वारा बनाई हुई कीले लग रही थी । उनका डिजाइन भी अभी वाली कीलो से अलग था । वे ठीक वैसी ही थी जैसी पुराने लकड़ी के दरवाजे में लगाई जाती थी गोल मुंडी वाली.....

यह सब देखकर घरवालों के होश फाख्ता हो गए ..... उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या करें ?

क्योंकि .....

जो दृश्य सामने था वह बेहद भयावह और अजीब था ।

जिस कुएं के पानी को अमृत समझ कर पी रहे थे , उस कुए के अंदर से निकली हुई भयानक सामग्रियों को देख कर सब बुरी तरह से घबरा गए थे । वह सारी की सारी चीजें इतनी अजीब थी , कि उनको देखना भी भय पैदा करता था ।

उन सारी चीजों को इकट्ठा करके एक बोरे में डाल दिया गया ।

उसे निकालने वाले मजदूर भी डर के मारे कांप रहे थे । उन्हें लग रहा था कि अब हम लोगों का क्या होगा ।

मैंने दाऊजी से मौली धागा मंगाया और उन सभी के हाथों में मंत्र जाप करते हुए उस मौली धागे को बांध दिया । उसके बाद गंगाजल की कुछ बूँदों को सभी पर छिड़क कर उनको विदा किया । सबको यह सख्त ताकीद भी दी कि इस बारे में किसी को भी ना बताएं । बताने से उनका ही नुकसान है ऐसा भी बोल दिया था । ताकि वे उसे किसी के सामने उजागर ना करें ।

समस्या का समाधान

अब समय था समस्या के समाधान का ....

मैंने कहा - इसके दो रास्ते हैं । एक वह महिला जो मुझे संदिग्ध लग रही है वह सारी बातें बताएं या फिर मुझे अपनी शक्तियों से पूछ कर पता करना पड़े । पहला रास्ता आसान है, अगर वह महिला गांव में मौजूद है तो उसे बुलवा लो ।

दाऊजी ने अपने आदमियों को उसे लाने के लिए भेजा । जब वे उसके घर पहुंचे तो पता चला कि अचानक उसकी तबीयत खराब हो गई और उसे जिला अस्पताल ले जाया गया है । अब दूसरा उपाय ही शेष रह गया था ।

मैंने कहा - मैं प्रयास करके देखता हूं ।

ऊपर के कमरे में मैं फिर से अघोरी अवस्था में आकर ध्यान में बैठा ।
जैसे ही मैं बैठा । मुझे कमरे में भारीपन महसूस हुआ । साथ ही अजीब सी दुर्गंध भी आने लगी । यह सारे

लक्षण किसी नकारात्मक शक्ति की उपस्थिति के लक्षण थे । मुझे आभास हुआ कि संभवत कोई शक्ति सामने आने को आतुर है । मैंने प्रतीक्षा करने का निर्णय लिया और शांति से बैठ गया ।

लगभग 15 मिनट के बाद मुझे कमरे में किसी की उपस्थिति का आभास हुआ । दरवाजे के नीचे से काले रंग का धुआं सा अंदर आ रहा था । मेरे पास आकर उस धुएं ने धीरे-धीरे आकार ग्रहण करना प्रारंभ कर दिया ।

यह वही महिला थी । खोरबहरीन ।

काली तंत्र विद्या में भी बहुत सारी शक्तियां जागृत होती है , लेकिन उनके साथ दिक्कत यह है कि वह नकारात्मक मानसिकता के साथ चलती है ।

उनका पूरा खेल दूसरों को नुकसान पहुंचाने के लिए ही होता है ।

खैर.....

अब खोरबहरिन का बिम्ब मेरे सामने प्रकट हो चुका था । मेरे सामने पहले भी इस प्रकार के बिंब आ चुके थे । विशेष रूप से गुरुदेव बिंबात्मक रूप में ऐसे ही उपस्थिति देते थे । दोनों बिंबो में बहुत ज्यादा असमानता थी ।

जब गुरुदेव या देवी शक्तियों का बिंब स्पष्ट होता था तो उनका आभामंडल बिल्कुल स्वस्थ और सफेद रंग का चांदनी के जैसा होता था । उसे देखने से बेहद सुख और शांति की अनुभूति होती थी ।

खोरबहरीन का बिम्ब एकदम अलग ही किस्म का था । उसका आभामंडल मटमेले , लगभग काले रंग के आसपास का प्रतीत होता था ।

उसकी उपस्थिति से बेहद बेचैनी सी महसूस होने लगी थी .....

ऐसा लग रहा था जैसे कमरे की प्राणवायु कम होती जा रही हो .....

सांस लेने में तकलीफ बढ़ रही हो ....

यह वैसा ही आभास था, जैसा तब होता है जब आप किसी धुए से भरी हुई जगह पर जाते हैं.....

या ठंडी के मौसम में ऐसे मोहल्लों से होकर गुजरते हैं जहां पर कोयले से चलने वाली सिगड़िया जलाई जाती है । ठंड की वजह से वह धुआं जमीन के साथ सटा हुआ रहता है और सांस लेते समय घुटन जैसा आभास देता है । ठीक वैसा ही मुझे उस समय महसूस हो रहा था....

खोर बहरीन का बिंब अब पूरा आकार ले चुका था ।

उसकी आंखें क्रोध से तमतमाई हुई थी ....

वह एकटक मेरी ओर देख रही थी ....

मैं भी उसके कुछ कहने की प्रतीक्षा कर रहा था ।

उसने क्रोध से तमतमाते हुए मुझसे कहा - तू यहां से चला जा । वरना मैं तुझे बर्बाद कर दूंगी । तू मेरी ताकत को जानता नहीं है ।

मैं शांति से उसकी बात सुनता रहा ....

तांत्रिक अभिचार प्रयोगों की एक विशेषता यह भी है कि किसी भी प्रकार के नुकसान पहुंचाने वाले प्रयोग तब तक काम नहीं करते जब तक कि जिस पर प्रयोग हो रहा है वह व्यक्ति क्रोधित अवस्था में ना हो । गुरुदेव ने मुझे यह बात समझाई थी इसलिए मैं पूरी तरह से शांत था ।

अंत में मैंने उससे पूछा - तुम ऐसा क्यों कर रही हो ?

उसने वितृष्णा के साथ पूछा - तू जान कर क्या करेगा ?

मैंने कहा - तुम अगर मुझे बताओगी तो हो सकता है कि हम उस कारण को निराकरण कर सके । जिसकी वजह से तुमने यह सब किया है ।

उसने अपने हाथ का इशारा किया और तभी .....
मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मेरे सर को दोनों तरफ से दबा रहा है .....
अवसर पाकर उसने अपनी शक्ति का प्रयोग कर दिया था .....

मैं भी सतर्क था.....

मन ही मन पशुपतास्त्र का जाप चल रहा था .....
कोई 5 या 10 सेकंड तक सर में दबने का एहसास रहा ।
उसके बाद कराहने की आवाज आई .....

और मेरा सर मुक्त हो गया ....

ऐसा लगा जैसे किसी ने उस शक्ति को मार भगाया हो ....

उस बिम्ब के चेहरे पर निराशा का भाव एक क्षण के लिए आया, फिर उसने एक जोर का अट्टहास किया और बोली - मुझे पता है । तू कुछ नहीं कर पाएगा .....

तू अपनी जान बचाने की फिक्र कर .....

वरना आज की रात तेरी आखिरी रात होगी ....

इतना कह कर उसने फिर जोरों का अट्टहास किया और जैसे आई थी । वैसे ही गायब हो गई....

मैं कुछ क्षणों तक अपने आप को संयत करता रहा कमरे में फैली हुई दुर्गंध की तीव्रता कम हो गई थी लेकिन पूरी तरह से साफ नहीं हुई थी ।

मैंने अपने झोले से अगरबत्ती का पैकेट निकाला और उसे जला दिया । धीरे-धीरे कमरे में खुशबू फैलने लगी ..... लगभग 5 मिनट बाद कमरा वापस सामान्य लगने लगा ....

अब मैं कपालिनी का आह्वान करने लगा । थोड़ी देर में वह स्पष्ट हुई ...

कहानी की शुरुआत

उसने कहानी बताना प्रारंभ किया - लगभग 100 साल पहले की बात है । उस समय खोरबहरिन की मां की दादी सास जुगनी इसी कोठी में काम करती थी । उस समय दाऊजी के परदादा दुष्यंत चंद्राकर यहाँ के दाऊ थे । उनकी पत्नी का देहांत 17 वर्ष की आयु में हो गया । उस समय दुष्यंत 20 वर्ष के थे ।

दोनों की शादी को साल भर भी नहीं हुआ था । पति पत्नी दोनों बचपन के मित्र थे । इसलिए दोनों की पति पत्नी से ज्यादा दोस्तों जैसी बनती थी । पत्नी के निधन के बाद दुष्यंत का मन किसी काम में नहीं लग रहा था । वह इधर-उधर आवारा भटकता रहता ।

उसके लिए दूसरे विवाह की कोशिश प्रारंभ हुई । लेकिन उसने विवाह करने से साफ इंकार कर दिया और शराब और गांजे का सेवन करने लगा । दुष्यंत के पिता की मृत्यु हो चुकी थी और अब उसकी मां विजया ही पूरी संपत्ति तथा खेतों की देखभाल कर रही थी ।

दुष्यंत उनकी इकलौती संतान थी । उसे इस स्थिति में देखकर उसकी मां विजया बड़ी परेशान हुआ करती । विजया ने दुष्यंत को वापस गृहस्थी खींचने के लिए जुगनी को मोहरा बनाने का विचार किया । उस समय जुगनी 16 वर्ष की थी ।

जैसा कि उस समय हुआ करता था नौकरों की स्थिति लगभग गुलाम जैसी ही हुआ करती थी । महिला नौकरानीयों का शारीरिक शोषण एक आम बात थी ।

जुगनी गोरी चिट्टी हंसमुख स्वभाव की लड़की थी ...

प्रकृति यौवन और सौंदर्य देने के मामले में गरीबी और अमीरी नहीं देखती है ....

वह जिसे उन्मुक्त भाव से बाँटती है उसकी झोली भरती नहीं है बल्कि छलकती रहती है.....

जुगनी का यौवन ठीक वैसा ही झलकता हुआ यौवन था । सोलह साल की उम्र में उसके शरीर का हर अंग मादक और खिला हुआ था । जो किसी भी पुरुष को मोहित करने के लिए पर्याप्त था । इसे देखकर दुष्यंत की माँ

ने जुगनी को दुष्यंत के हृदय परिवर्तन के काम में लगा दिया ।

उन्होंने जुगनी को निर्देश दिया कि अब से वह दुष्यंत की सारी देखभाल करें उसके सारे काम करें ।

अब वही उसका कमरा साफ करती । बिस्तर लगा कर देती और जब वह देर रात घर आता तो उसे खाना भी खिलाती ।

जवानी और आग

दोनों युवा थे । धीरे-धीरे दोनों के बीच में आकर्षण बढ़ता गया । दोनों के बीच मालिक और नौकर का जो दायरा था वह काफी दिनों तक कायम रहा लेकिन धीरे-धीरे वह दायरा सिमटने लगा । दोनों के बीच मुस्कुराहटों का आदान-प्रदान चालू हो गया ।

दुष्यंत की मां विजया भी रात को दुष्यंत के आने से पहले थकावट या दर्द का बहाना बनाकर अपने कमरे में दरवाजा बंद करके सो जाती । ताकि दोनों को ज्यादा से ज्यादा एकांत मिल सके । यह एकांत धीरे धीरे रंग लाने लगा ।

एक रात जब वह दुष्यंत को खाना खिला रही थी तब उसने जुगनी का हाथ पकड़ लिया । दुष्यंत युवा था । सुंदर आकर्षक और धनवान । सभी दृष्टिओ से किसी भी युवती के लिए आकर्षक था । हाथ पकड़ना खींचना और इस प्रकार की क्रियाएं धीरे-धीरे बढ़ती गई ।

फिर आई वह रात ....

जब दुष्यंत थोड़ा ज्यादा नशे में था । उसने दरवाजा खोलते ही जुगनी को अपनी बाहों में भर लिया ।

जुगनी ने भी आपत्ति नहीं जताई .....

खाना परोसने और खाने के दौरान दोनों के बीच छुअन छूवाई का खेल चलता रहा .....

खाना खतम होते होते दोनों की धैर्य की सीमा समाप्त हो चुकी थी ....

देह की भाषा के लिए शब्दों की आवश्यकता नहीं होती.....

बस आंखों ही आंखों में बातें तय हो गई.....

रात को जुगनी सारा काम निपटा कर अपने कमरे में जाकर लेट गई ....

जल्द ही दुष्यंत उसके कमरे में पहुंच गया .....

दोनों ने सीमाएं लांघ दी । उसके बाद वह रोज का क्रम हो गया ।

एक दिन जुगनी को विजया ने रोक लिया और कहा - दुष्यंत तेरे कमरे में आता है .....तू ठीक से ध्यान रख रही है न ...

सहमति मे सर हिलाकर, शरमाकर जुगनी सिर झुकाकर जमीन कुरेदने लगी....

विजया ने आगे कहा - घर की बात बाहर नहीं जानी चाहिए इसका ध्यान रखना । उसे तेरे कमरे में आते हुए कोई देख लेगा तो ठीक नहीं है इसलिए तु दुष्यंत के कमरे में ही सो जाया कर ।

जुगनी ने सहमति में सिर हिला दिया ।

उसके लिए तो वह बेहद खुशी की बात थी और दुष्यंत के लिए तो स्वप्न साकार होने जैसी स्थिति थी ।

अब जुगनी दुष्यंत के कमरे में ही सोने लगी । दिनभर कोठी के दूसरे कामों में और मालकिन के सहयोग में जुगनी व्यस्त रहती और उसके बाद रात भर दोनों प्रेमी प्रेम क्रीड़ा में लीन रहते । दिन के समय भी जब अवसर

मिलता दोनों अपना जुगाड़ बैठा ही लेते थे । इस प्रकार से समय चलता रहा ।

विजया इस सारे प्रकरण पर नजर रखे हुए थे । जब उसे यह आभास हो गया कि दुष्यंत को नारी देह की लत लग चुकी है तो उसने अपनी अगली चाल चलने का मन बनाया ....

वह चाहती थी कि किसी भी प्रकार से दुष्यंत की शादी हो जाए तो कम से कम आने वाले समय में खानदान को आगे बढ़ाने के लिए संतान आ पाएगी .....

विपरीत परिस्थितियों में उसकी पत्नी ठीक वैसे ही सारे कारोबार की देखरेख करेगी जैसे वह अभी कर रही है ।

इसके लिए जरूरी था की जुगनी को दुष्यंत से दूर कर दिया जाए और उसकी अनुपस्थिति में अपनी योजना को मुकाम तक पहुंचाया जाए ।

विजया ने एक दिन जुगनी को महीने भर के लिए तीर्थ यात्रियों के साथ भेज दिया । तीर्थ यात्रियों के साथ जाना सौभाग्य की बात मानी जाती थी और इंकार का

तो खैर प्रश्न भी नहीं उठता । इसलिए जुगनी को जाना पड़ा ।

अब दुष्यंत बेचैन होने लगा क्योंकि उसे रोज देह सुख की आदत पड़ चुकी थी । अवसर देखकर उसकी मां ने उसके विवाह की बात चलाई .....

पहली पत्नी की छोटी बहन पहले से तैयार बैठी हुई थी । शरीर की प्यास से तड़पते हुए दुष्यंत ने हामी भर दी और चट मंगनी पट ब्याह के रूप में सादे समारोह में पूर्व पत्नी की छोटी बहन चपला से शादी कर लिया ।

बाबा धरमदास

उधर दूसरी तरफ.....

जिस तीर्थ यात्रियों के जत्थे में जुगनी गई थी , उस जत्थे में एक तांत्रिक धर्मदास भी था । वह लगभग 70 साल का बुजुर्ग था और काली विद्याओं का बहुत बड़ा विशेषज्ञ था ।

उस जत्थे में उसकी विशेषताओं तथा उसके बारे में कोई भी नहीं जानता था । वह बस्तर के दूर किसी गांव में रहता था और पिछले 15 वर्षों से गांव से दूर जंगल में झोपड़ी बनाकर निवास करता था । या यूं कह लीजिए कि गांव वालों ने उसे गांव से बेदखल कर दिया था और उसके बाद से वह जंगल में ही रह रहा था ।

उस समय लोग जत्थों में तीर्थ यात्राएं किया करते थे । आमतौर पर अधिकांश यात्री बुजुर्ग ही हुआ करते थे । उस समय संचार के साधन भी नहीं थे इसलिए दूर के गांव के बीच में किसी प्रकार का संपर्क ना होने से एक जगह की बात दूसरी जगह पता नहीं चलती थी । इसलिए कोई भी धर्मदास के बारे में बहुत ज्यादा

जानकारी नहीं रखता था और ना ही किसी ने उसके बारे में उससे ज्यादा जानने की कोशिश भी की । तीर्थयात्री यानी तीर्थयात्री ।। अगर वह जत्थे में शामिल होने का इच्छुक है तो उसे साथ में ले लिया जाता था...

इस प्रकार के काले तंत्र के विशेषज्ञों को छत्तीसगढ़ मे सोधे कहा जाता है । काला जादू करने वाली महिलाओं से इनकी शक्तियां तथा सिद्धियां कई गुना ज्यादा होती है , लेकिन इनकी संख्या बहुत कम होती है । यू कह सकते हैं कि यह बेहद दुर्लभ प्रजाति है । आमतौर पर महिलाओं को ही इस प्रकार की सिद्धियों के प्रति ज्यादा सक्रिय देखा जाता है ।

वह बुजुर्ग व्यक्ति दरअसल अपनी अंतिम यात्रा पर निकला था और उसका बनारस के मणिकर्णिका घाट में अपने आप को शिव चरणों में समर्पित करने का विचार था ।

उस समय और आज भी यह माना जाता है कि जो भी व्यक्ति बनारस में अपनी देह त्याग करता है वह सीधे शिवलोक की ओर गमन करता है ।

बाबा धर्मदास काले तंत्र का अद्भुत जानकार था । मारण वशीकरण और उच्चाटन की क्रियाएं उसके लिए बाएं हाथ का खेल थी । उसके प्रयोग के बाद प्रभावित व्यक्ति उसके हाथ की कठपुतली की तरह नाचता था ।

जवानी के दिनों में जिस स्त्री पर धरमदास का दिल आ जाता उसके देह का भोग करना वह अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता था । वह संबंधित स्त्री से किसी युक्ति से उसका बाल मांग लेता था । जिस स्त्री का बाल उसके हाथ लग गया वह उसी रात उसके बिस्तर पर होती थी । उसे पता भी नहीं चलता था और वह उसका देह सुख लेकर उसे वापस भी भेज देता था ।

जब वह लगभग पचास पचपन साल का था । उस समय की एक घटना से उसका भांडा फूट गया । जिसकी वजह से उसे गांव से निकाल दिया गया । तब से वह गांव से दूर जंगल में ही निवास कर रहा था ।

धरमदास के गांव गोडनी का ही एक परिवार था । जिसमें दो लड़के थे । जिनका नाम चतुर और मधुर था । उनकी पत्नियां दो बहने थी । हाली और बाली ।

हाली बड़े भाई चतुर की पत्नी थी और बाली छोटे भाई मधुर की पत्नी थी । दोनों ही बेहद सुंदर थी । धरमदास का दिल दोनों बहनों पर आ गया । उसने एक दिन हाली से उसके सिर का एक बाल मांग कर ले लिया । संयोग से यह घटना छोटी बहन बाली ने भी देख ली थी ।

उस रात जब सब सो गए थे तब बाली को पीछे का दरवाजा खुलने का आभास हुआ । उसने देखा की हाली मंत्रमुग्ध सी अवस्था में पीछे के दरवाजे से निकल कर जा रही है । यह देखकर बाली का माथा ठनका कि इतनी रात गए यह कहां जा रही है ।

उसने पीछे से आवाज भी लगाई लेकिन उसने उसकी आवाज को अनसुना कर दिया । वह चली गई । उसने हाली का पीछा किया ....

वह उस समय दंग रह गई । जब उसने देखा कि हाली धर्मदास के घर के सामने रुकी । उसकी झोपड़ी का दरवाजा खुला हुआ था । जिसमें से होकर वह अंदर चली गई ।

बाली को समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे ? उसने दरवाजे की दरार से झांक कर देखा तो दंग रह गई ....

धर्मदास पुरी निर्वस्त्र अवस्था में जमीन पर लेटा हुआ था और उसके देखते देखते हाली स्वयं अपने कपड़े उतार कर उसके साथ संलग्न हो गई । इसे देखकर बाली सन्न सी हो गई । उसे समझ में नहीं आया कि क्या करें ? हल्ला करने से बहन की भी बेइज्जती होती थी ।

जब उसे कुछ समझ नहीं आया तो वापस वह अपने घर आकर बहन का इंतजार करने लगी ।

लगभग दो घंटे के बाद उसी प्रकार मंत्रमुग्ध सी अवस्था में हाली घर में वापस लौटी । बाली ने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन ऐसा लग रहा था । जैसे वो उसकी बात ही नहीं सुन रही हो । उसने बाली को धक्का दिया और अपने पति के पास जाकर लेट गई ।

बाली अब कुछ करने की स्थिती में नहीं थी ।

वह भी अपने बिस्तर पर जाकर लेट गई ।

अगले दिन सुबह उसने हाली को रात की घटना के बारे में पूछा, लेकिन उसे कुछ भी याद नहीं था ।

उसने उसको याद दिलाने की कोशिश की । पूरी घटना भी सुनाई, लेकिन वह कुछ भी मानने को तैयार नहीं थी ।

यह सब देखकर बाली दंग रह गई । उसे समझ आ गया कि यह धर्मदास की कलाकारी है ।

कुछ दिन बाद धर्मदास ने बाली से भी उसका बाल मांगा । बाली ने पूरी बात अपने पति को बता दी । उसके पति ने अपने मित्रों को भी धर्मदास के बारे में बता दिया और सब ने मिलकर एक योजना बनाई ।

धरमदास कई सालों से यह कार्य कर रहा था । इसलिए उसे लगता था कि कोई उसे पकड़ नहीं सकता । यूं कह लीजिए कि अति आत्मविश्वास के कारण वह थोड़ा लापरवाह भी हो गया था ।

बाली ने अपने बाल की जगह घर में लगे हुए केले के पौधे से एक रेशा निकाला और उसे काले रंग में रंग

दिया । उस रेशे को बाली ने धर्मदास को दे दिया । अब सारे लोग रात का इंतजार करने लगे ।

इधर बाली उसका पति और उसके मित्र धर्मदास का भांडा फोड़ने का इंतजार कर रहे थे ।

उधर धरमदास अपने वस्त्र उतार कर आगामी आनंद की प्रतीक्षा में लेटा हुआ था.....

रात के लगभग ग्यारह बजे का समय रहा होगा । जब धर्मदास ने अपना आह्वान प्रारंभ किया ।

अद्भुत आश्चर्य ।

बाली उसका पति और वहां खड़े सारे लोग आश्चर्य से दंग रह गए ....

उन्होंने देखा कि वह केले का झाड़ जमीन से उखड़ने लगा .....

वह केले का झाड़ अपने आप उखड़ कर कूद कूद कर धर्मदास के घर की ओर चल पड़ा ....

वे सारे लोग भी उस केले के चलते हुए पेड़ के पीछे पीछे जाने लगे.....

गांव वालों के लिए यह बेहद आश्चर्यजनक और असंभव घटना थी .....

उनके सामने एक केले का पेड़ किसी जीवित प्राणी की तरह दौड़ता हुआ धर्मदास के घर की ओर जा रहा था .....

देखने वाले सभी लोगों को अब समझ में आ गया कि धर्मदास महिलाओं को किस तरह से अपने घर पर आने के लिए विवश करता होगा .....

जब एक निर्जीव केले का पेड़ उसके आह्वान पर जमीन से उखड़ कर जा सकता है तो जीवित महिला की क्या स्थिति होती होगी ?

यह सोचने की बात थी ।

उस केले के झाड़ के पीछे पीछे सारे लोग धर्मदास के घर तक पहुंच गए ॥

जब वह केले का पेड़ धर्मदास के कमरे के अंदर घुसा तो निर्वस्त्र धर्मदास भी दंग रह गया .....

वह समझ गया कि उसका भांडा फूट चुका है ।

गांव वालों ने मिलकर उसकी जमकर पिटाई की और सर मुंड कर उसे गांव से बाहर निकाल दिया ।

इस विद्या के साथ एक दिक्कत यह भी थी कि अगर किसी स्त्री के मामले में वह रंगे हाथों पकड़ा जाए और उसके बाद उसका सर मुंड दिया जाए , उस मुंडे सर मे गाय का गोबर पोत दिया जाये और चोटी वाली जगह पर बजरंगबली के सिंदूर का टीका लगा दिया जाये तो उसकी सारी सिद्धियां साल भर के लिए कुंद हो जाती थी..... गाँव वाले यह बात जानते थे ..... उन्होने वैसा ही किया ....

वह अब साल भर के लिए सामान्य आदमी बन चुका था और साल भर उसे वैसे ही रहना था ....

ऐसी स्थिति मे उसके लिए जंगल सबसे सुरक्षित जगह थी ।

वह घने जंगल मे चला गया ।

साल भर वह जंगल मे ही रहा और उसे जंगल इतना भा गया कि वह फिर वापस गाँव ही नहीं लौटा ...

साल भर के बाद उसकी शक्तियाँ वापस लौट चुकी थीं । अब उसके लिए जंगल मे ही मंगल था ।

धीरे धीरे दस पंद्रह साल गुजर गए । उसे अब अपने अंत समय का आभास हो चुका था । उसके पास सिद्धियों का अथाह भंडार था और उसे योग्य उत्तराधिकारी की तलाश थी । जिसे वह यह सारी शक्तियां देकर स्वयं मुक्त हो जाना चाहता था । अपनी सारी सिद्धियों को किसी को सौंपे बिना वह मुक्त नहीं हो सकता था । इसलिए उसे अपना उत्तराधिकारी खोजना ही था ।

बनारस पहुंचने पर सारे लोग धर्मशाला में रुके । वहां से 3 दिन की यात्रा पर उनको निकलना था लेकिन धर्मदास ने बीमारी का बहाना बनाया । अब सब लोग यह सोचने लगे कि इसे छोड़कर कैसे जाएं ? जब समूह में कोई यात्रा चलती है तो सारे लोग उस समूह के प्रत्येक व्यक्ति के प्रति अपने आप को जिम्मेदार मानते हैं ।

ऐसे समय में जुगनी आगे आई और उसने धर्मदास की सेवा में रुकने का प्रस्ताव रखा । इसे सुनकर बाकी लोग निश्चिंत हो गए और वह अपनी यात्रा पर निकल गए । धर्मशाला के उस कमरे में धर्मदास और जुगनी बाकी रह गए ।

उस समय जुगनी को पता नहीं था लेकिन उसके अंदर दुष्यंत का अंश आ चुका था ....

धर्मदास अपनी सिद्धियों के बल पर वह बात जान चुका था .....

धर्मदास ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में उसी अंश को चुन चुका था ।

यह बात सुनने में बहुत अजीब और असंभव जैसी लग सकती है, लेकिन तंत्र और तांत्रिक के लिए कुछ भी असंभव नहीं है ।

इस विषय पर हमारे धार्मिक ग्रंथों में भी बहुत कुछ लिखा हुआ है । उदाहरण के लिए जैसा कि महाभारत में हम लोग पढ़ते हैं कि अर्जुन ने अपने पुत्र अभिमन्यु को

गर्भावस्था में ही चक्रव्यूह का ज्ञान प्रदान किया था और उसने उसे ग्रहण भी कर लिया था । यह कुछ-कुछ वैसी ही प्रक्रिया थी ।

धर्मदास ने अपनी सिद्धियों के माध्यम से उस धर्मशाला के सारे लोगों को सम्मोहित कर अपने नियंत्रण में ले लिया । अब वह सिर्फ वही देख और समझ सकते थे जो वह उन्हें दिखाना और समझाना चाहता था । यूं कह लीजिए कि उन 3 दिनों में धर्मशाला का पूरा नियंत्रण धर्मदास के हाथों में था ।

धर्मदास ने जुगनी को सम्मोहित करके उसे भी पूरी तरह अपने नियंत्रण में ले लिया ....

जब तक मां के मस्तिष्क पर नियंत्रण ना हो या वह स्वयं उन बातों को सुनने और सीखने की इच्छुक ना हो .....

तब तक गर्भस्थ शिशु को वह ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता .....

समय कम था .....

धर्मदास के पास केवल 3 दिन का समय था ....

इस काल में उसे अपने ज्ञान को सौंपना भी था और अपने जाने की तैयारी भी करनी थी .....

जो काफी जटिल प्रक्रिया थी ।

उतने समय में सब कुछ समझा कर जुगनी को तैयार करना असंभव था ।

इसलिए धर्मदास ने उसे सम्मोहित करके उसके मस्तिष्क को अपनी बात मानने के लिए विवश कर दिया ।

अब जुगनी की स्थिति एक रोबोट जैसी हो चुकी थी जो अपने मालिक की हर आज्ञा को बिना ना नुकुर के स्वीकार करता है चाहे वह आदेश किसी भी प्रकार का हो.....

रात होती और धर्मदास जुगनी को लेकर उस कमरे से गायब हो जाता .....

भगवान विश्वनाथ की नगरी

वाराणसी याने बनारस याने काशी याने मेरे आराध्य महादेव भगवान विश्वनाथ की नगरी .....

भगवान शिव के दिव्य और जागृत विग्रह की स्थापना इस नगरी में हुई है ....

काशी विश्वनाथ का मंदिर अनंत काल से भगवान शिव के पीठ के रूप में मान्यता प्राप्त है...

भगवान शिव एक अद्भुत देवता है और उनके पीठ भी वैसे ही है .....

अगर आप भगवान शिव की नगरी में आते हैं तो आपके अंदर स्वतः एक वैराग्य का भाव उत्पन्न होता है । अंदर से मुक्त होने की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है । आप देखेंगे कि आमतौर पर भगवान शिव की नगरी बहुत ज्यादा भव्य नहीं होती । भगवान शिव के मंदिर भी बहुत ज्यादा सामान्य से होते हैं । उनके आसपास बहुत ज्यादा तामझाम भी नही होता । इसकी वजह यह भी हो

सकती है कि उन पर चढ़ाए जाने वाले पदार्थ बहुत सस्ते हैं और उनके बेचने से बहुत ज्यादा कमाई नहीं होती ।

एक और बात कि भगवान शिव को हम लोग सिर्फ शिवरात्रि और श्रावण मास में ज्यादा याद करते हैं । इसलिए भी शायद वहां रौनक कम हुआ करती है । इसके बावजूद अगर आप भगवान शिव के किसी भी पीठ पर चले जाए ! उनके किसी भी मंदिर में अलग अलग सा आभास अवश्य होगा । काशी विश्वनाथ इस मामले में सबसे विशिष्ट है । यह वास्तव मे महसूस करने की चीज है.....

हम भगवान के दर्शन भी ड्यूटी की तरह करते हैं । दौड़कर गए , देखा सर झुकाया, जो चढ़ाना है चढ़ाया और भागकर बाहर । इसमे हम वहाँ की ऊर्जा और तरंगों का आभास नही कर पाते ।

काशी विश्वनाथ के दर्शन कर लीजिए और बाहर निकल कर आधे घंटे के लिए बैठ जाए । जो भाव आपके अंदर उत्पन्न होगा वह आपने जीवन में कभी महसूस नहीं किया होगा ।

भगवान शिव का जो स्पंदन है , वह सीधे हमारे मस्तिष्क को स्पंदित करता है । शिव की स्थिति आज्ञा चक्र में मानी जाती है ।

हमारे अंदर बैठे हुए शिव जब स्पन्दित होते हैं तब एक विशिष्ट प्रकार का भाव हमारे अंदर पैदा होता है ।
जिसका असर आपको तुरंत दिखाई देगा .....

कुल मिलाकर महादेव की माया अजब गजब है....

उनकी सबसे अलग नगरी है बनारस .....

बनारस अपने घाटों के लिए प्रसिद्ध है और साथ ही वहां के सांडों के लिए भी ...
एक उक्ति है
रांड, सांड, सीढ़ी, सन्यासी ।
इनसे बचे सो वासे काशी ।।

अर्थात जो इन चार तत्वों से अर्थात गणिका, सांड सीढ़ी और साधु से बचकर निकल सकता है वही भगवान शिव की नगरी काशी में सहजता से वास कर सकता है ।

काशी में आप किसी सांड को हाथ नहीं लगा सकते क्योंकि वह नंदी का स्वरूप है । भगवान शिव का गण ! तो उसकी शान काशी में कुछ अलग ही है । अगर वह सड़क पर खड़ा है तो आप उसे हटा कर आगे निकलने का तो सोच भी नहीं सकते । उसकी मर्जी होगी तब वह हटेगा और तब आप जा सकते हैं । या फिर उसके आजू-बाजू में जगह बची है वहां से आपको निकलकर जाना है ।

सांड भी वहां हट्टे कट्टे पाए जाते हैं क्योंकि उनकी सेवा टहल भी होती है ।

इसके बाद आते हैं सीढियों पर । काशी में 84 घाट है । हर घाट में कुछ ना कुछ सीढ़ियां होंगी । यह हुआ आपका तीसरा घटक जिससे आपको बचकर चलना है ।

भगवान शिव की नगरी है तो साधु सन्यासी का होना अनिवार्य है । क्योंकि जहां भोलेनाथ होंगे वहां सभी प्रकार के साधु पाए जाएंगे । आपको वहां पर सर से लेकर पांव तक कपड़ों से ढके हुए साधु दिखेंगे , तो सर

से लेकर पांव तक नंगे साधु भी आपको वहां पर दिखाई देंगे । जितनी सरलता से आपको विभिन्न प्रकार की डिजाइनदार बिंदिया लगाए हुए , टीका लगाए हुए साधु दिखाई देंगे , उतनी ही सरलता से भस्म लपेटे हुए कोई अघोरी आपको दिख जाएगा ।

चित्र विचित्र जितने प्रकार के साधु भगवान शिव ने बनाए हैं वह सारे के सारे उनकी नगरी में उन्मुक्त भाव से विचरण करते हुए आपको दिख जाएंगे ।

इनसे भी आपको बच कर रहना है तब जाकर आप भगवान शिव की नगरी में वास कर पाएंगे । जितना विशिष्ट है बनारस उतनी विशिष्ट है बनारस की यात्रा ।

हो सकता है कि आपको मेरा यह विवरण कुछ अजीब और विषय से हटता सा लगे .... लेकिन जहां मेरे आराध्य भगवान शिव की बात आती है, मैं रुक नहीं पाता.....

गंगा के घाट पर तांत्रिक क्रियाएँ

अगर आप बनारस गए हो तो गंगा के घाट के दूसरी तरफ सुनसान इलाक़ा है ।

वहां पर रेत ही रेत रहती है और काफी लंबा इलाका है जहां पर तांत्रिको का और सिद्ध का डेरा रहता है ।

भगवान शिव का शक्तिपीठ होने के कारण यह अघोरियों का भी प्रिय स्थल है ।

भगवान कालभैरव का जागृत पीठ है इसलिए अभिचार कर्म के इच्छुक व्यक्ति यहां पर भटकते देखे जा सकते हैं ।

ऐसे सभी कार्यों के लिए सबसे उपयुक्त जगह है गंगा के पार का इलाका । जहां रात्रि में शव साधना से लेकर विभिन्न प्रकार की गोपनीय विशिष्ट और अद्भुत तंत्र क्रियाएं चलती रहती है ।

इसलिए सांझ ढलने के बाद आमतौर पर कोई भी नदी के उस पार जाने को तैयार नहीं होता है ।

रात को नदी के उस पार जाने का मतलब है अपने प्राणों को संकट में डालना ।
यदि कोई उस पार चला जाए तो वह सुबह वापस आएगा इस बात की गारंटी नहीं होती है । ऐसी विचित्र है वहां की लीला..... धरमदास और जुगनी रात को धर्मशाला से गायब होने के बाद वहां प्रकट हुए ।

जैसा कि मैंने आपको बताया था । धर्मदास के पास समय कम था । कुल मिलाकर उसके पास तीन राते थी ।

पहली रात को धर्मदास ने जुगनी को गंगा नदी में स्नान करवाया और स्वयं भी स्नान किया । इसके बाद विभिन्न प्रकार की तांत्रिक क्रियाएं की । धर्मदास सिद्धियों का भंडार था । इसलिए उसके लिए शून्य से किसी भी चीज को प्राप्त कर लेना आसान था । उसने साधना की समस्त चीजें प्राप्त करके अपने पास रख ली और उसके बाद जुगनी का अभिषेक प्रारंभ किया । उसके शरीर के विभिन्न अंगों में काजल से अलग-अलग प्रकार के तांत्रिक चिन्ह अंकित की । उनमें से प्रत्येक

चिह्न के ऊपर कुछ विशेष प्रकार के तांत्रिक द्रव्य को समर्पित किया ।

इन सारी प्रारंभिक क्रियाओं के बाद उसने अपने आराध्य देवता का आह्वान किया और उनसे अनुमति प्राप्त की

....

विभिन्न प्रकार की क्रियाएं रात भर चलती रही और सुबह 3 बजे वापस दोनों धर्मशाला में लौट गए ।

जुगनी एक तो गर्भवती थी ऊपर से एक रात्रि में उसके अंदर बहुत सारी शक्तियों का प्रवेश हो गया था । इसलिए दोपहर तक वह बेसुध होकर सोती रही । लगभग 12 बजे उसे होश आया । धर्मदास ने उसे पीने के लिए पानी जैसा एक द्रव दिया जो बेहद नशीला था । उसे पीते ही जुगनी वापस बेहोश हो गई और शाम 6 बजे तक बेहोश रही । इस दौरान धर्मदास उसके पास बैठकर मंत्र जाप करता रहा । उसके चेहरे पर भी तनाव की लकीरें दिख रही थी । क्योंकि जुगनी जितनी पूर्णता से उन सारी सिद्धियों को प्राप्त करती । उतनी ही आसानी से उसकी मुक्ति का मार्ग भी स्पष्ट हो जाता ।

उसके तनाव का कारण यह भी था कि अगर जुगनी किसी वजह से असफल रह जाती तो न सिर्फ उसकी मुक्ति का मार्ग समाप्त हो जाता वही धरमदास स्वयं और जुगनी के साथ-साथ उसका बच्चा भी मृत्यु का ग्रास बन जाता। इसलिए वह बिल्कुल रिस्क लेना नहीं चाहता था और पूरी सावधानी से सारी प्रक्रिया को संपन्न करना चाहता था। वह जुगनी के पास ही बैठा रहा। शाम 6 बजे जब उठी तो सामान्य थी। इसे देखकर धर्मदास ने राहत की सांस ली।

रात फिर से उसे ढेर सारी प्रक्रियाओं से होकर गुजरना था। यह तभी संभव था जब वह पूर्ण स्वस्थ हो।

वह रात फिर पिछली रात के जैसी ही रही। दोनों धर्मशाला से फिर गायब हुए और गंगा के उस पार वाली जगह पर बची हुई तांत्रिक क्रियाएं संपन्न हुई। तांत्रिक क्रियाएं समाप्त होते-होते जुगनी की हालत फिर से वैसी ही हो गई। सुबह होते-होते वह वापस धर्मशाला में लौट आए। धरमदास सारी रात जगा था। उसके पहले की रात भी पूरी तरह से जागकर उसने विभिन्न तांत्रिक क्रियाएं संपन्न की थीं। दिन का समय जुगनी का ध्यान

रखने में लगाया था । यूं कह लीजिए कि पिछले 2 दिन से वह एक बूंद भी नहीं सोया था ।

उन दोनों रात्रियों मे रात भर विभिन्न विचित्र प्रकार की तांत्रिक क्रियाओं के द्वारा धरमदास ने उस ज्ञान को शिशु में समाहित करने के लिए जुगनी को तैयार किया । इसमें उसे लगभग दो रात्रि का समय लगना था । उन 2 रात्रियों में उसने प्रारंभिक चरण को पूरा कर लिया ।

तीसरी रात्रि भाद्रपद माह की अमावस्या की रात्रि थी । अपनी सिद्धियों को एक-एक करके गर्भस्थ शिशु के अंदर समाहित करना प्रारंभ कर दिया ।

यह तभी संभव था जब वे सारी सिद्धियां जुगनी को भी प्राप्त हो जाती ।

इसे आप दूसरी तरह से समझे तो इन सारी सिद्धियों का उत्तराधिकारी तो जुगनी के गर्भ में पल रहा बच्चा था ।
लेकिन उसके जन्म लेते तक उन सारी सिद्धियों की स्वामिनी स्वयं जुगनी हो जाती । उसकी आंखें पूजन समाप्त होते-होते रक्तिम लाल हो चुकी थी । उन आंखों की भयावहता देखकर एकबारगी तो धर्मदास

भी घबरा गया । सुंदरता की प्रतिमूर्ति जुगनी उस समय किसी पिशाचिनी की तरह भयानक लग रही थी ।

उस रात्रि में उसने अपने प्रक्रम को अंतिम मुकाम तक पहुंचाया । सम्मोहित जुगनी की जानकारी के बिना ही उसके माध्यम से गर्भ में पल रहे शिशु के अंदर अपना पूरा ज्ञान और सिद्धियों को समाहित कर दिया ।

वह ज्ञान इतना विशेष और भयंकर प्रभावशाली था कि उसके प्रभाव से जन्म लेते ही शिशु असंभव कार्यों को भी करने में संभव हो सकता था ।

ऐसी स्थिति में उसके प्राणों पर संकट आने की संभावना भी थी । इसे देखते हुए शिशु को किसी प्रकार की परेशानी ना हो इसलिए उसने उस ज्ञान को इस प्रकार से कीलित अर्थात सामान्य शब्दों में कहें तो ताला लगाकर बंद किया कि वह उसके 10 वर्ष की आयु के बाद ही चैतन्य हो सके ।

सुबह लगभग ब्रह्मा मुहूर्त का समय रहा होगा जब वे वापस धर्मशाला के कमरे में लौटे ....

कमरे में लौटने के बाद धर्मदास ने अपने अंतिम यात्रा की तैयारी की , और गर्भस्थ शिशु के अंदर उस ज्ञान के साथ-साथ अपने अंदर के प्राण तत्व का अंश भी समाहित कर दिया .....

जैसे ही वह प्राण तत्व का अंश जुगनी के अंदर समाहित हुआ उसका शरीर अजीब ऊर्जा से भर गया .....

धर्मदास का शरीर उर्जा हीन जैसा हो गया.....

ऊर्जा के आवेश से जुगनी भी बेहोश अवस्था में चली गई.....

उसका सारा शरीर बुखार से तपने लगा.....

लगभग 10 बजे तक उसकी स्थिति वैसी ही रही.....

धीरे-धीरे वह सामान्य अवस्था में आने लगी । उसके बाद वह गंगा तट पर जाकर स्नान करके लौटी तो लगभग सामान्य हो चुकी थी ।

दोपहर 12 बजे के आसपास सभी तीर्थयात्री वापस लौटे ।

उस समय तक धर्मदास काफी कमजोर पड़ चुका था ।

धर्मदास की हालत देखकर उन लोगों ने तुरंत एक वैद्य को बुलाया । वैद्य ने स्थिति को गंभीर बताया और कुछ दवाइयां दी लेकिन संभावनाएं लगभग नगण्य है यह भी बता दिया ।

उस दिन शाम होते होते उसके श्वास की गति मंद पड़ने लगी और उसने सबको बुलाकर अपना अंतिम समय आने की बात कही और मणिकर्णिका घाट के पास ले जाने को कहा ।

उसे एक चादर में डालकर मणिकर्णिका घाट के पास पहुंचाया गया । वहां पहुंच कर उसने गंगाजल पिलाने को कहा ।

एक व्यक्ति गंगाजल लेने के लिए गया लेकिन जब तक वह गंगाजल लेकर वापस लौटता धर्मदास अपना शरीर छोड़ चुका था ।

उसका अंतिम संस्कार मणिकर्णिका घाट में किया गया और सारे लोग वापस लौट आए ।

उस समय यात्रा के साधन इतने ज्यादा विकसित नहीं थे । बहुत सारी यात्रा पैदल करनी पड़ती थी । इसलिए इस पूरे प्रकरण में काफी समय लग गया लगभग डेढ़ महीने के बाद सारे लोग वापस अपने अपने गांव पहुंचे ।

जुगनी की घर वापसी

जुगनी डेढ़ महीने के बाद वापस लौटी तो यहां की दुनिया बदल चुकी थी....

वह भी यह सच जानती थी कि दाऊ उससे शादी नहीं करेगा । फिर भी वह दुष्यंत पर अपना अधिकार समझती थी । इसलिए उसका नई दुल्हन के प्रति विद्वेष भाव पैदा होना स्वाभाविक था ।

इस बात से दुष्यंत की मां भी वाकिफ थी । इस पूरे ड्रामे की डायरेक्टर तो आखिरकार वही थी ।

इसलिए उसे इस समस्या का भी निदान निकालना ही था । अन्यथा समस्या आगे जाकर जटिल हो सकती थी ।

दुष्यंत की मां समझदार थी । उसने अपने एक नौकर कलवा के साथ जुगनी की भी शादी करवा दी । कलवा कोठी मे ही रहता था ।

दुष्यंत की नई पत्नी चपला सुंदर तो थी, लेकिन जुगनी की तुलना में उन्नीस बैठती थी ।

शरीर की दृष्टि से भी वह दुबली पतली थी । दुष्यंत को उसके साथ सहवास में जुगनी जैसा आनंद नहीं आता था । इसलिए वह फिर से जुगनी की तरफ आकर्षित हो गया ।

उधर गोरे चिट्टे मजबूत बदन के दुष्यंत की तुलना में कलवा दुबला पतला और दिमाग से थोड़ा कमजोर था । इसलिए जुगनी को भी दुष्यंत बार-बार याद आता था ।

दोनों की यह असंतृप्ति दोनों के पास आने का कारण बन गई । जुगनी के साथ उसके संबंध चोरी छुपे बनने लगे ।

जैसा कि आप सभी जानते हैं इश्क और मुश्क कभी छुपाए नहीं छुपते ।

चपला को भी दुष्यंत और जुगनी के संबंधों का पता चल गया ।

उस समय महिलाओं को बहुत ज्यादा आपत्ति करने का अधिकार नहीं हुआ करता था । खासतौर से जमींदारों

के घर में तो बिल्कुल नहीं । वहां इसे एक सामान्य घटना के रूप में ही देखा जाता था ।

आठ माह बाद जुगनी एक बच्चे मंगलू की मां बन चुकी थी । वह बच्चा दुष्यंत का ही था , लेकिन उसे कलुआ का नाम मिल गया । ऐसा चलता रहा ।

उसके साल भर के बाद चपला की गोद में भी एक बिटिया आ गई ।

उसी समय जुगनी की गोद में दूसरा बेटा आया । दुर्भाग्य से एक हफ्ते के बाद ही चपला की बेटी चल बसी ।

दुष्यंत की मा ने जुगनी से मनुहार की और उसका बेटा चपला की गोद में डाल दिया ।

अब जुगनी का बेटा दुष्यंत के बेटे के रूप में पलने लगा ।

चपला का दूध सूख गया इसलिए वह बच्चा जुगनी का दूध पीकर बढ़ा हुआ इसलिए उसका लगाव भी जुगनी के साथ ज्यादा था ।

कलवा एक दिन बीमार पड़ा और जांच में पता चला कि उसे टीबी हो गई थी । उस समय इलाज की सुविधा भी इतनी तगड़ी नहीं थी । गांव का देसी इलाज चलता रहा । लेकिन वह 6 महीने के बाद भगवान को प्यारा हो गया । अब जुगनी का कोई नहीं था । इसलिए वह उसी कोठी में रह गई ।

एक तरह से वह अब आधिकारिक रूप से दुष्यंत की दूसरी पत्नी के रूप में स्थापित हो चुकी थी । वह बुद्धिमान भी थी और व्यवहार कुशल भी । इसलिए धीरे-धीरे खेत के कामकाज में भी उसका दखल बढ़ता गया ।

वह अपने नौकरानी होने वाले भाव को सदैव कायम रखती थी । दुष्यंत और उसकी मां व पत्नी को मालिक वाला सम्मान बराबर देती थी । उसका बेटा उसने चपला की गोद में डाला था इसलिए दुष्यंत और उसकी मां दोनों उसका एहसान मानते थे । उसके इस भले व्यवहार से दुष्यंत और उसकी मां दोनों उस पर विश्वास भी करते थे ।

चपला की स्थिति ठीक इसके विपरीत थी , वह जुगनी को अपनी राह का कांटा मानती थी । उसने कभी भी उसके बेटे को हृदय से स्वीकार नहीं किया था । चपला को यह सब सहन नहीं हो रहा था क्योंकि उसका अधिकार कोई और छीन रहा था । ईर्ष्या और द्वेष की भावना उसके अंदर बढ़ती जा रही थी ।

जुगनी का काम तमाम

एक दिन जुगनी अपने छोटे बेटे के साथ गोठान में जहां पर पैरा पड़ा रहता है । वहाँ काम कर रही थी । पैरा का मतलब होता है फसल काटने के बाद बची हुई घास, जो गाय को खिलाने के काम आती है । वह एक जगह इकट्ठा करके रखा जाता है । घर पर कोई नहीं था और ऐसा शानदार अवसर चपला छोड़ना नहीं चाहती थी.....

उसने दरवाजा बंद करके पैरे में आग लगा दी.....

सूखे पैरे में आग तेजी से बढ़ती चली गई और दरवाजा बंद होने की वजह से जुगनी बाहर भी नहीं निकल पाई । जब तक गांव वाले आकर आग को बुझाते तब तक जुगनी और उसका छोटा बेटा आग की चपेट में आकर बुरी तरह से जल चुके थे । छोटे बेटे की वहीं पर मृत्यु हो गई । जुगनी भी बुरी तरह से जल चुकी थी लेकिन उसके प्राण बचे हुए थे । दुष्यंत जब घर पहुंचा तब जुगनी ने उसकी गोद में दम तोड़ दिया ।

इधर चपला ने बड़ी ही कुशलता से पूरे मामले से अपना पल्ला झाड़ा और अपने बच्चे की मौत पर छाती फाड़ फाड़ कर रो पड़ी । जुगनी का बेटा मंगलू खेत में काम करने गया हुआ था । खबर सुनकर वह भी वापस आया । मां और छोटे भाई की दशा देखकर वह सन्न रह गया और अंतिम संस्कार के बाद वह अचानक कहीं गायब हो गया । उस समय उसकी उम्र 10 साल की थी । उसे खोजने की बहुत कोशिश की गई लेकिन वह नहीं मिला।

समय आगे बढ़ता गया दुष्यंत जुगनी के जाने से बहुत ज्यादा विचलित था । वह फिर से गांजा और शराब में खुशी तलाशने लगा । चपला एक बार फिर गर्भ से हुई । इस बार उसकी गोद में बेटा आया । एक-एक करके उसके तीन बेटे हुए और उसके बाद दो बेटियां भी हुई ।

इस घटना को लगभग 15 साल हो चुके थे दुष्यंत अब नाम मात्र का जमींदार रह गया था क्योंकि शराब और गांजे ने उसके शरीर को खोखला कर दिया था । उसकी माता जी की मृत्यु हो चुकी थी और पूरा कारोबार अब चपला के नियंत्रण में था । बड़ा बेटा विनोद लगभग

13 साल का हो चुका था । चपला ने कामकाज सीख लिया था और सब कुछ सही चल रहा था ।

भोलू

एक दिन दूसरे गांव से एक युवक भोलु आकर गांव में झोपड़ी बनाकर रहने लगा । उसे काम की तलाश थी और चपला को भी खेत के काम के लिए नौकर की जरूरत थी । भोलु को चपला ने अपने खेत पर काम में लगा दिया । वह युवक बड़े मन से काम करता और धीरे-धीरे उसने चपला के मन में जगह बना ली । जब भी कोई काम होता तो सबसे पहले चपला उसे याद करती ।

कुछ समय के बाद उसे खेत से हटाकर कोठी में काम पर लगा लिया गया । अब बच्चों को कहीं ले जाना हो तो या चपला को कहीं जाना हो या घर का कोई काम हो तो भोलु सारे काम करता । धीरे-धीरे वह चपला का सबसे विश्वासपात्र नौकर बन गया .....

कुछ दिनों के बाद गांव की ही एक लड़की चम्पा से भोलू की शादी हो गई । शादी होने के बाद भोलू अपनी पत्नी के साथ कोठी में हीं रहने लग गया । कोठी में नीचे का एक कमरा पिछवाड़े की तरफ़ उसको दे दिया गया । जहां वह अपनी पत्नी के साथ रहता ।

उस समय दालान के अंदर यह कुआं नही हुआ करता था ।

गर्मी के मौसम में बाहर वाले कुएं का पानी सूख गया । चपला ने विचार किया कि दालान में कुआँ खोदा जाए । जैसा कि स्वाभाविक था घर के अंदर होने वाले इस कार्य की जिम्मेदारी भोलू को दी गई ।

उस दिन भोलू के चेहरे पर एक अलग ही चमक थी । दरअसल इस विचार के पीछे जो दिमाग था वह भोलू का ही था । उसके भाव से ऐसा लग रहा था जैसे उसे कुछ मिल गया हो । जब वह वापस घर पहुंचा तो उसकी पत्नी चम्पा ने उसके चेहरे की चमक को देखकर पूछा - आज तुम इतने खुश क्यों हो ?

भोलू बोला - अब वह दिन आ गया है ! जिसके लिए मैंने सालों इंतजार किया है !

चम्पा उसकी बात आधा समझी और आधा नहीं समझ पाई । अपने पति को खुश देखकर वह भी खुश थी । कुएं की खुदाई का कार्यक्रम चालू हुआ । कुएं की खुदाई करने के लिए भी विशेष किस्म के मजदूर होते

हैं । जो बड़ी कुशलता से गड्ढा बनाते भी हैं और उसके अंदर की मिट्टी बाहर निकालने की व्यवस्था भी करते जाते हैं । अगर कोई अकुशल मजदूर इस काम में लगे तो कुएं की दीवार धसक कर गिरने की संभावना रहती है । जो उसके मौत का कारण भी बन सकता है । लगभग 20 फुट गहरा कुआं 15 दिन के प्रयासों से तैयार हो गया । यह पूरा काम भोलु की देखरेख मे हुआ ... गर्मी के दिनों में खोदने के बावजूद उस कुएं में पानी आ गया था ।

भोलू और कुएं का रहस्य

घर के सारे लोग जब रात को सो जाते , तब भोलू अपनी पत्नी की नजर बचाकर उस कुएं के पास आकर अनेक प्रकार की क्रियाएँ करता । एक दिन रात को उसकी पत्नी चम्पा की नींद अचानक खुल गई । उसने बिस्तर पर पति को नहीं देखा तो वह निकल कर बाहर दलान में आई । उसने देखा भोलु कुए के अंदर से निकल कर बाहर आ रहा है .....

भय के मारे उसकी चीख निकल पड़ी !

यह तो भला हो कि घर में किसी ने उसकी चीख सुनी नहीं ।

भोलू उसे खींच कर अपने कमरे में ले गया । उसने कस कर दो झापड़ मारे और पूछा - तुझे कमरे से बाहर निकलने किसने कहा ?

चम्पा डर के मारे कांपने लगी .....

इसके पहले भोलू ने उसे डांटा तक नहीं था । वह उसे बहुत प्यार करता था और साथ ही उसका हर तरह से

ख्याल भी रखता था । भोलू का यह स्वरूप उसकी पत्नी चंपा के लिए बिल्कुल नया था ।

चंपा सुबक-सुबक कर रो रही थी । भोलू गुस्से से आगबबूला हो रहा था । रात होने की वजह से वह जोर से चीख भी नहीं सकता था ।

इसलिए उसने चंपा के बाल पकड़े और गुर्राया - रात में मैं क्या करता हूं ? बिस्तर पर हूं या नहीं ? यह देखने की दोबारा कोशिश मत करना ! वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा ! और हां इस बात का जिक्र भी तुम्हारे मुंह से बाहर नहीं आना चाहिए ! नहीं तो उसी कुएँ में डूबा कर मार डालूंगा ।

अपने पति के मुंह से ऐसी बातें सुनकर चंपा के प्राण मुँह को आ गए ।

उस दिन से चंपा पति से भयभीत रहने लगी । जैसे ही वह उसके पास आता , वह अपने आप में सिमटकर सिकुड़ने लगती । जब तक वह उसके आसपास रहता वह मन ही मन घबराती रहती ।

एक हफ्ते और बीत गए । चंपा देखती ! भोलू रोज आधी रात को कमरे से बाहर निकलता । वह छुप कर देखती तो वह उसे कुएं में उतरता हुआ दिखाई देता । उसके एक घंटे बाद वह वापस कमरे में आता । उस समय चंपा चादर ओढ़ कर सोने का नाटक करने लगती । वह निश्चिंत होकर उसके बगल में सो जाता । रोज उसके साथ प्रेम क्रीड़ा करने वाला भोलू , उस पूरे हफ्ते में उसके शरीर के स्पर्श से भी बचता रहा ।

एक हफ्ते के बाद भोलू रात के अंधेरे में फिर चंपा के पास आया । इतने दिनों की दूरी की वजह से दोनों प्रेम क्रीडा करने के लिए आतुर थे । घमासान समाप्त होने के बाद जब भोलू शांत हुआ तो चंपा ने धीरे से उससे पूछा - तुम कुएं में क्या करते हो ?

भोलू ने उसकी बात को टालने की कोशिश की । लेकिन चंपा भी ठान कर बैठी थी कि इस बात का पता लगाकर ही छोडेगी ।

चंपा ने अपने स्त्री सुलभ गुणों का इस्तेमाल करते हुए आखिरकार भोलू को राज का खुलासा करने के लिए मना ही लिया ।

भोलू भी जानता था कि चंपा से बातों को बहुत दिनों तक छुपा कर रखना संभव नहीं होगा । इसकी जानकारी होगी तो यह सहयोगी के रूप में भी भूमिका निभा सकती है ।

उसने चंपा को कहा - कल मैं तुझे जंगल लेकर जाऊंगा और वहीं पर तुझे सारी बात बताऊंगा ।

चंपा यह बात सुनकर घबराई कि जंगल में ले जाकर कहीं कुछ गड़बड़ ना कर दे ।

उसकी वास्तविकता को जानने की उत्कंठा इतनी ज्यादा थी कि वह राजी हो गई । रात उसी प्रकार से प्रेम क्रीड़ा में गुजर गई ।

सुबह हुई और उसके बाद दिन भर का कामकाज चलता रहा । शाम के 5 बजे भोलू चंपा को लेकर गांव से बाहर

निकला । उसने सबको बता दिया था कि दूसरे गांव जा रहा है । ज्यादा देर हो जाएगी तो सुबह आएगा ।

भोलू की गुफा

गांव से तुरन्त बाद जंगल चालू हो जाता था । जंगल के अंदर जाने का सोचते हुए चंपा घबरा रही थी । उस समय हल्की हल्की रोशनी थी । धीरे-धीरे जंगल करीब आ गया और दोनों जंगल के अंदर जाने लगे । अंदर जाने के लिए किसी प्रकार का रास्ता नहीं था । गोलू की चाल से ऐसा लग रहा था कि वह वहां के चप्पे-चप्पे से वाकिफ है ।

लगभग आधा किलो मीटर जंगल में चलने के बाद। एक छोटी-सी पहाड़ी दिखाई दी । पास जाने पर उस पहाड़ी के अंदर एक छोटी सी दरार दिखाई दे रही थी । भोलू चंपा को लेकर उस दरार से अंदर घुस गया ....

चंपा भय जिज्ञासा के मिले-जुले भाव के साथ चल रही थी...

अंदर एक गुफा जैसा कक्ष बना हुआ था । जहां पर एक गोल काला पत्थर रखा हुआ था । जिसके ऊपर सिंदूर पोता हुआ था ।

भारत मे जैसा की आप जानते हैं कि गांव में धार्मिक आस्था बहुत प्रबल होती है । किसी भी धार्मिक प्रतीक चिन्ह को देखकर वह सर झुकाना अपनी जिम्मेदारी समझते हैं । उसको देखकर चंपा ने भी अपना सर झुका कर नमन किया । भोलू उसके सामने दंडवत मुद्रा में लेटा हुआ था ।

प्रणाम करके उठने के बाद वह चंपा से बोला - देख चंपा ! एक न एक दिन मुझे यह सब तुझे बताना ही था ! तू मेरी पत्नी है ! मेरे इस कार्य में आज नहीं तो कल सहयोग करना ही है । तुझे लेकर मैं इसलिए यहां आया हूं क्योंकि जो बात बताने वाला हूँ , वह हम दोनों के अलावा किसी तीसरे आदमी के कान तक नहीं जानी चाहिए ।

चम्पा ने सिर हिलाकर सहमति दे दी .....

भोलु ने चंपा को सामने बैठाया और आगे बताना चालू किया - मैं दुष्यंत चंद्राकर का जुगनी से हुआ बेटा हूँ , या तुम कह सकती हो कि मैं दुष्यंत चंद्राकर का सबसे बड़ा बेटा हूँ ।

चंपा को ऐसा लगा जैसे कोई बहुत बड़े बम का विस्फोट हो गया । वह सोच भी नहीं सकती थी कि उसका पति जमींदार का बेटा है । वह तो उसे मामूली नौकर ही मानती थी । यह सत्य सुनकर चंपा दंग रह गई ।

भोलू ने आगे बताना चालू किया - आज से 15 साल पहले की बात है । मेरी मां यही दुष्यंत चंद्राकर की कोठी पर ही काम करती थी । उसके बाद उसने शुरू से लेकर आखिरी तक पूरी कहानी बता दी जो आप लोग पहले ही पढ़ चुके हैं ।

अंत में उसने कहा - मैं उस दिन खेत पर काम कर रहा था, जब मुझे घर में आग लगने की खबर मिली । मैं बेतहाशा घर की ओर दौड़ा क्योंकि सारी दुनिया में मेरी माँ ही ऐसी थी जो मेरा भरपूर ख्याल रखती थी । वह मेरा पूरा जीवन थी । उसकी गोद में रखकर जब मैं सोता था तो मुझे ऐसा लगता था जैसे सारी दुनिया मेरी है । मैं दौड़ता हुआ घर पहुंचा ।

वहां जो दृश्य मैंने देखा । वह आज भी मेरी आंखों के सामने ताजा है । उसकी याद करता हूं तो मेरी नस नस में तनाव आ जाता है । मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं । मेरी आत्मा कराह उठती है । दर्द का सागर मेरे अंदर उमड़ पड़ता है । आंखों से आंसुओं की धारा बह निकलती है .....

तुम खुद सोचो ... दस साल का एक बच्चा ! अपने सामने अपनी मां के जले हुए शरीर को देख रहा था !

कोयले की ढेरी की तरह दिखाई दे रही थी वह मां !

जिसने सुबह उसे नाश्ता करा कर भेजा था !

जिसकी गोद में रात को सर रखकर मैं सोने वाला था !

वह मां !

कोयले का ढेर बनी हुई पड़ी थी ।

उसका पूरा शरीर जल चुका था । साड़ी गल कर उसके शरीर में चिपक गई थी .....

बगल में मेरा मासूम छोटा भाई भी जला हुआ पड़ा था .....

वह दृश्य देखना कितना दुर्भाग्य जनक रहा होगा इसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकती । वह सब कुछ मैंने 10 साल की आयु में देखा है । उसको देखने के बाद मुझे समझ नहीं आया कि मैं क्या करूं ?

मैं वहां से निकला और गांव से बाहर भागता चला गया .....

भागते भागते मैं जंगल में घुस गया और इस गुफा के अंदर तक पहुंच गया .....

मां का अंतिम संस्कार था, मुझे पूरे गांव में खोजा गया । लेकिन मैं नहीं मिला । वे लोग गांव के चप्पे-चप्पे में मुझे खोज रहे थे, लेकिन मैं तो यहां जंगल के अंदर गुफा में बैठा हुआ था । आखिर उन्होंने मां का अंतिम संस्कार कर दिया था ।

उस गुफा मे मुझे रोते रोते रात हो गई .....

रात होने के बाद मुझे डर लगने लगा .... क्योंकि मैं था तो 10 साल का बच्चा ही .....

वह रात मैंने डरते डरते इसी गुफा में गुजारी । अगले दिन वापस जाने का विचार किया, लेकिन फिर मां की जली हुई देह सामने आ गई और मैं इसी गुफा में बैठा रह गया....

दिनभर इसी गुफा में बैठकर मैं रोता रहा ...

धीरे-धीरे शाम हो गई...

भूख भी बड़े जोरों की लग रही थी लेकिन यहां खाने के लिए क्या मिलता ?

शाम को मुझे गुफा में मां की छवि दिखाई देने लगी ।

उस समय तो मुझे पता नहीं था मैंने सोचा कि या तो मा ही है लेकिन वास्तव में वह उसकी आत्मा का सूक्ष्म रूप था । जो उस गुफा में मेरी देखभाल करने के लिए आया था । वह अपने साथ खाने की पोटली भी लेकर आई थी । उसे रखकर वह गायब हो गयी ....

मैं इतना भूखा था कि मैं तुरंत उस पर झपट पड़ा और झटपट झटपट पूरा खाना खा गया । खाने के बाद मेरा ध्यान आया कि अरे माँ तो मर चुकी है फिर यहाँ कैसे ?

लेकिन तब तक वह गायब हो चुकी थी । मैं 2 दिन का भूखा था । खाना खाकर काफी देर तक तो मैं सोचता रहा ।

फिर मुझे नींद आ गई ।

रात आधी गुजर चुकी होगी ।

जब अचानक मैंने देखा ....

मेरी मां वहां पर सूक्ष्म रूप में खड़ी थी । उनके साथ एक बुजुर्ग व्यक्ति भी था । दोनों धूएं जैसे आकार में थे ।

मां ने मुझे बताया कि चपला ने उसके साथ क्या किया । यह सुनकर मैं गुस्से में चीख उठा कि मैं उसे मार डालूंगा ।

मां ने मुझे समझाया - बेटा तू बहुत छोटा है । तू उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएगा, तुझे मेरी और तेरे मासूम

भाई की मौत का बदला लेना है । यह बाबा धर्मदास है । यह तुझे इस लायक बनायेंगे कि तू उसका बदला ले सके ।

उस दिन के बाद यह गुफा मेरा प्रशिक्षण केंद्र बन गई ।

उस के अगले उस दिन से एक काली आकृति हमेशा मेरे आस-पास रहती । मेरी जो इच्छा होती वह उसे पूरा कर देती । मेरे खाने-पीने का सारा इंतजाम अपने आप हो जाता ।

उससे ज्यादा एक बच्चे को चाहिए भी क्या ?

एक हफ्ते तक वैसा ही चलता रहा और मैं इस गुफा में ही रहा । इस गुफा के पीछे तरफ एक तालाब है । वहां से मेरे पानी की जरूरत पूरी हो जाती ।

खाना वह काली आकृति ला दिया करती । मैंने उसका नाम काली दाई रख दिया था । काली दाई की वजह से मुझे किसी चीज की जरूरत महसूस नहीं हुई और उस पूरे हफ्ते में उसी गुफा में रहा ।

एक बात बड़ी अजीब थी ....

वह मुझे जो रोटी खिलाती थी वह पूरी की पूरी आटे की रोटी जैसी नहीं थी । उसमें कुछ काली-काली चीजें भी मिली हुई रहती थी ।

भूख की वजह से पहले दिन तो मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया ।

दूसरे तीसरे दिन जब मेरा ध्यान गया तो मैंने काली दाई से उसके बारे में पूछा ।

उसने बताया - बेटा यह एक दवा है जो तुझे खिला रहे हैं ताकि तू ताकतवर बने और आगे चलकर अपनी माई का बदला ले सके ।

इतना सुनने के बाद मैंने कुछ और पूछने की जरूरत नहीं समझी । वाकई उस 1 हफ्ते के अंदर मुझे खुद ऐसा महसूस होने लगा कि मैं ताकतवर हो गया हूं ।

एक हफ्ते के बाद रात को बाबा धर्मदास फिर उस गुफा में दिखाई दिए । अभी भी वे उसी प्रकार से सूक्ष्म रूप में ही थे ।

उन्होंने मेरे जन्म से पहले की कहानी मुझे सुनाई । धर्मशाला में हुई घटना के बारे में भी बताया और अपने बारे में भी बताया कि वह किस प्रकार से साधनाएं किया करते थे ।

उन्होंने अपनी चमत्कारिक सिद्धियों का प्रदर्शन भी किया ।

मैं छोटा बालक था तो उन्होंने मुझसे पूछा कि - तू क्या खाएगा ।

उस समय मेरे ध्यान में जलेबी आई मैंने कहा - जलेबी खाऊँगा बाबा ।

बाबा ने हवा में हाथ हिलाया और उनके हाथ में जलेबी का दोना आ गया । ऐसा लग रहा था जैसे एकदम ताजी-ताजी बनी हुई जलेबियां हो । वह भी थोड़ी नहीं कम से कम आधा किलो जलेबी रही होंगी ।

मैंने उसे देखा तो मेरा यह विश्वास भी दृढ़ हुआ कि बाबा बहुत जानकार आदमी है । उसने इस प्रकार के अनेक चमत्कार मुझे आने वाले दिनों मे भी दिखाए ।

उसके बाद बाबा ने काली दाई को कुछ निर्देश दिया । काली दाई ने उस दिन से मुझे नई चीजें खिलानी चालू कर दी। इसमे कच्चा मांस और जिंदा मछलियों से लेकर सब कुछ था । जब मैं हिचकिचाता तो वह मुझे माँ के बदले की बात याद दिलाती और मैं तयार हो जाता ...

वह प्रक्रिया लगभग एक महीने तक चली होगी । मुझे उसी प्रकार से काली दाई एक वक्त रोटी खिलाती थी और उस रोटी में काले काले दाने हुआ करते थे । इस दौरान लगभग रोज वह मुझे एक कटोरे मे रक्त पिलाती । मुझे पता नहीं था कि वह किसका रक्त था ।

एक महीने के बाद काली दाई ने कहा - आज तुझे भूखे रहना होगा । रात को बाबा तुझे आगे की बातें सिखाएंगे ।

मैंने सहमति में सर हिलाया । उस दिन मुझे भयंकर भूख लग रही थी लेकिन भूखा रहना था , इसलिए मैं भूख सहन करके बैठा रहा । ऐसा लग रहा था जैसे मैं भूख से मर जाऊंगा । अंतड़ियों मे भयानक मरोड़ उठ रही थी ।

मंत्र साधना की शुरुआत

धीरे धीरे रात आ गई । आधी रात के वक्त बाबा फिर से गुफा के अंदर प्रकट हुए । उन्होंने मुझे पूरे कपड़े उतार कर तालाब में नहा के आने के लिए कहा । मैं गया और तालाब में नहा कर वापस लौटा ।

जब मैं वापस आया तब तक यह पत्थर सिंदूर में पुत चुका था और बाबा उसके सामने बैठकर कुछ-कुछ बुदबुदा रहा था ।

उसने मुझे सामने बैठने का इशारा किया । मैं उसके सामने बैठ गया । बाबा के हाथ में एक लंबी हड्डी थी जो किसी के हाथ की हड्डी जैसी दिख रही थी । वह उसने मेरे गोद में रख दी और कुछ मंत्र बुदबुदाने लगा ।

उसके बाद उसने अपनी जेब में हाथ डाला और काले रंग की एक डब्बी निकाली । उसमें काजल जैसा कुछ था । उस काजल को उसने मेरे माथे पर लगा दिया और मेरी दोनों आंखों में भी उस काजल को लगा दिया । बचा हुआ काजल मेरी नाभि में छोड़ दिया ।

थोड़ी देर तक तो सब शांत रहा लेकिन फिर जहां-जहां काजल लगा हुआ था उस हिस्से में भयंकर जलन होने लगी ।

मैं उन हिस्सों को सहलाना खुजलाना चाहता था ।

लेकिन !

मेरे हाथ बिलकुल नहीं हिल रहे थे ।

ऐसा लग रहा था जैसे मेरे शरीर से मेरा नियंत्रण छूट गया है । मैं अपने शरीर का कोई भी हिस्सा नहीं हिला पा रहा था ...

मेरी पलकें भी ऊपर नीचे नहीं हो रही थी...

आंख फटी की फटी थी...

मैं जिस अवस्था में बैठा था उसी अवस्था में बैठा रहा ।

आंखे लगातार खुली रहने की वजह से मेरी आंखों से आंसू बहते रहे ....

लगभग दो तीन घंटे तक उसी स्थिति में बैठा रहा और मेरे सामने बाबा मेरी आंखों में देखता हुआ बैठा था ।

बीच में बाबा कुछ बोलता और मुझसे उसे दोहराने के लिए कहता । इस प्रकार उसने मुझे करीब 10 मंत्र सिखाएं और उनका उच्चारण करते रहने के लिए कहा ।

रात भर उन मंत्रों का जाप करता रहा....

बाबा मेरे सामने बैठा रहा .....

मेरी आंखें पूरी रात खुली रही । ठीक ऐसा जैसे कि त्राटक के समय होता है ।

इसी सिंदूर पोते पत्थर पर देखते हुए मुझे मंत्र जाप करना था ।

सुबह लगभग चार बजे बाबा धरमदास वहां से गायब हो गया .....

बाबा जाते जाते मुझे बोला - जब तक मैं वापस ना आऊँ ....तब तक तुझे यही बैठकर मंत्र जाप करना है.....

मैं वहां बैठकर जाप करता रहा । सुबह हो गई थी ।

मेरा मंत्र जाप जारी था । दिनभर मंत्र जाप के बाद शाम होते-होते वह पत्थर अपनी जगह पर हल्का-हल्का हिलने लगा ....

पहले मुझे लगा कि मुझे ऐसा आभास हो रहा है ....

लेकिन वास्तव में वह पत्थर हिल रहा था ...
ऐसे ही शाम हो गई ।

पत्थर हल्का-हल्का हिलता रहा और मैं उसे देखकर मंत्र जाप करता रहा .....

अभी भी मेरे हाथ पाव नहीं हिल रहे थे....

मैं मूर्ति जैसा बैठा हुआ था .....

वह पूरी रात उसी प्रकार मंत्र जाप में गुजरी ।

पत्थर अब भी अपनी जगह पर बीच-बीच में हिलता डुलता ॥

मुझे ऐसा आभास होता कि मेरे मंत्र जाप करने की वजह से वह हिल रहा है.....

मैं बड़ा खुश होता कि मैं सफल हो रहा हूं ।

आखिरकार में 10 साल का बच्चा ही था .....

वह पूरी रात उसी प्रकार मंत्र जाप करते हुए गुजर चुकी थी और अगला दिन भी आ चुका था ।

वह दिन पूरा मैंने मंत्रजाप मे गुजारा ....

शाम होते होते बाबा फिर गुफा में प्रकट हुए ...

जैसे ही वह गुफा में प्रकट हुए मेरे हाथ पैर वापस सामान्य होने लगे ।

अब मैं उन्हें हिला सकता था लेकिन बाबा ने मुझे इशारा कर दिया था कि मुझे अब भी उसी पत्थर को देखते हुए मंत्र जाप करना है ।

मेरी बगल में बाबा धर्मदास भी बैठ गये ।

अब हम दोनों मंत्र जाप कर रहे थे ॥

ठीक आधी रात बाबा धर्मदास ने एक छुरी निकाली और मेरा दाहिना हाथ चीर दिया॥

मेरे हाथ से खून की धारा बहने लगी ...

उस खून की धारा को पकड़कर उसने हाथ को पकड़ कर इस पत्थर के ऊपर कर दिया ...

वह पत्थर तब हिल रहा था...

जैसे ही बाबा ने मेरे हाथ को उस पत्थर के ऊपर किया ...

पत्थर बीच से फट गया.....

ऐसा लगा जैसे उसने मुंह खोल दिया हो....

मेरे खून की धार उस फटे हुए हिस्से में गिरने लगी.....

ऐसा लग रहा था जैसे वह पत्थर मेरा खून पी रहा हो...

धीरे-धीरे उस खून की धार के साथ वह पत्थर मेरे हाथ की ओर आने लगा .....

हाथ के चीरे वाले जगह पर जहां से खून निकल रहा था वहां आकार चिपक गया ।

ऐसा लग रहा था जैसे वह वहां से खून चूस रहा वह हो .....

वह उसी प्रकार मेरे हाथ में चिपका रहा और धीरे-धीरे उसने शायद मेरे पूरे शरीर का खून चूस लिया ..... मेरा शरीर सफ़ेद पड गया ॥

मैं बेहोश होने लगा.....

उसके बाद ...

पता नहीं मैं कितनी देर तक बेहोश रहा ....

जब मुझे होश आया .....

तो !

दिन का समय हो चुका था ...

और मैं गुफा में बेहोश पड़ा हुआ था ।

वहां पर बाबा भी नहीं थे ।

और न ही काली दाई ....

मुझे बड़े जोरों की भूख लग रही थी ।

कमजोरी भी महसूस हो रही थी ।

देवता सिद्धि

वह पत्थर वापस अपनी जगह में बैठ चुका था ।
मैं धीरे से उठ कर बैठा और उसकी तरफ देख कर बोला - मेरा पूरा खून तुम पी गए ... भूख लग रही है काली माई भी नहीं है । अब मुझे खाना कौन खिलाएगा ?

तभी !

एक बुलंद आवाज गूंजी - बोल ... क्या खाएगा...

उस समय मेरे मुंह से निकला - समोसा जलेबी ।

एक अट्टहास गूँजा और जोर से हंसने की आवाज आई ।

मुझे लगा कि कोई मेरे साथ मजाक कर रहा होगा ...

मैं निराश होकर...

शांत होकर...

थकावट की वजह से लेट गया ।

मुश्किल से 10 मिनट बीते होंगे कि मुझे जलेबी की खुशबू आने लगी ...

पहले मुझे लगा मेरा भ्रम होगा । लेकिन । आठ दस बार गहरी सांस खींचने के बाद मुझे लगा । वाकई जलेबी की खुशबू है ।

मैं उठ बैठा .....
देखा तो सामने बांस के टोकने में जलेबियां भरी हुई थी और उसी के बाजू में आठ दस गरम समोसे रखे हुए थे ...

ऐसा लग रहा था । जैसे उनको अभी-अभी बनाया गया हो ।

मैं दो दिन का भूखा तो था ही....

मैं समोसे पर टूट पड़ा और कुछ ही देर में सारे समोसे मेरे पेट के अंदर जा चुके थे । उसके बाद जलेबी की बारी थी । जलेबी कम से कम एक किलो जरूर रही होगी । आधा खा लेने के बाद मुझे तृप्ति हो गई । उसके बाद खाने की हिम्मत नहीं बची ।

मैंने उस पत्थर की ओर देखा और कहा - बस पेट भर गया ।

मेरा इतना कहना था कि वह दोनों टोकने वहां से गायब हो गए ।

अगला हफ्ता मेरा उसी प्रकार उस पत्थर के साथ गुजरा ।
सुबह नाश्ता करता । नहाता । फिर जंगल में घूमने निकल जाता ।

यह ध्यान रखता था कि गांव की तरफ न जाऊ ।
क्योंकि बाबा ने मना किया हुआ था ।

शाम होते ही मैं उस पत्थर के सामने बैठ जाता और मंत्र जाप चालू कर देता । मंत्र जाप जैसे-जैसे आगे बढ़ता

वह पत्थर अपनी जगह पर हिलना चालू करता । उसे देख कर मेरा भी जोश बढ़ता । तीन-चार दिन के बाद यह स्थिति आ गई कि वह पत्थर हवा में ही उठकर स्थिर हो गया ।

इसे देखकर मैं और उत्साहित होता गया और मंत्र जाप करता गया ...

मेरे खाने की व्यवस्था ठीक वैसे ही होती ।

जब मुझे भूख लगती मैं उस पत्थर से बोल देता कि मुझे यह चाहिए और वह सामग्री मेरे सामने तुरंत या थोड़ी देर में प्रकट हो जाती ।

मजे के साथ मैं उसको खाता और फिर अपने काम में लग जाता ।

छठवें दिन उठते उठते वह पत्थर जाकर छत से चिपक गया और जब मंत्र जाप पूरा हुआ तब तक वह छत पर चिपका रहा ।

मंत्र जाप पूरा होने के बाद वह वापस अपने स्थान पर आकर स्थिर हो गया ।

कुल मिलाकर मेरे लिए वह एक खेल जैसा था और मैं बड़े उत्साह से उसे कर रहा था ।

मुझे बड़ा अच्छा लगता जब मेरे मंत्र जाप करने से वह पत्थर ऊपर की तरफ जाता था ।

तालाब के अंदर का जादुई संसार

मैं कोशिश करता कि उसको और ऊपर और ऊपर और ऊपर ले जाऊँ । जब वह छत तक पहुंच गया तब मुझे बड़ी खुशी हुई । ऐसा लगा जैसे मैंने कोई किला फतह कर लिया हो । इस प्रकार लगभग 1 हफ्ते तक मेरा मंत्र जाप वैसे ही चलता रहा.....

एक हफ्ते के बाद बाबा फिर से प्रकट हुआ ।

उसके बाद वह मुझे साथ में लेकर इस तालाब के अंदर चला गया ।

मुझे शुरू में डर लगा ।

लेकिन धीरे धीरे.....

हम लोग पानी के अंदर जाते चले गए ।

थोड़ी देर में हम पानी के अंदर थे.....

अजीब बात यह थी कि पानी के अंदर भी सांस लेने में कोई परेशानी नहीं हो रही थी ॥

या यूं कह लीजिए कि डूबने जैसा एहसास नहीं हो रहा था .....

काफी दूर जाने के बाद रोशनी वाला एक दरवाजा दिखाई दिया । जहां से हम लोग अंदर घुस गए । अंदर घुसने के बाद ऐसा लगा जैसे हम लोग किसी घर के कमरे में आ गए हो । वहां बिल्कुल पानी नहीं था । एकदम किसी बड़े हाल जैसा लग रहा था । उसकी छत वैसी ही दिखाई देती थी जैसे तालाब के नीचे अंदर आते समय रोशनी दिखाई देती थी । उसकी वजह से कमरे में प्रकाश रहता था ।

उस कमरे में बहुत सारे दरवाजे थे लेकिन सारे के सारे बंद थे। उसमें से एक दरवाजे को खोलकर बाबा मुझे साथ में लेकर अंदर चले गए । एक बड़ा सा गलियारा था जिसमें से गुजरते हुए हम लोग एक और कमरे में पहुंचे ।

कमरा कहने के बजाय उसे गुफा कहना ज्यादा उचित होगा क्योंकि वह ऐसा लग रहा था जैसे पत्थरों से बना हुआ हो ।

चमकीली गुफा

गुफा के पत्थर बहुत ही अजीब किस्म के थे...

अजीब इसलिए क्योंकि उस तरह का पत्थर मैंने आज तक नहीं देखा ....

वह पत्थर एक रंग के नहीं थे बल्कि बहुत सारे अलग अलग रंगों के थे ... उन दीवालों को देखकर ऐसा लगता था जैसे अलग अलग रंग के कंचों को मिलाकर दीवाल बना दी गयी हो...

उस गुफा मे पहुंचने के बाद हमारे पीछे का दरवाजा बंद हो चुका था। गुफा के दूसरे हिस्से में एक खुला दरवाजा था। उस दरवाजे के बाहर आसमान दिखाई देता था।

यह बड़ी अजीब सी बात थी .....

क्योंकि ऐसा तभी हो सकता है जब हम किसी ऊंची जगह पर बैठे हो .....

हम लोग तो तालाब के अंदर नीचे की तरफ बढ़े थे .....

खैर.....
जो भी हो....

उस गुफा से आसमान का नजारा दिखाई देता था ।

गुफा के अंदर एक कोने में बड़ा सा सिंहासन जैसा लगा हुआ था । जिसके पास एक विशालकाय मगरमच्छ बैठा हुआ था ।
वह मगरमच्छ बिल्कुल काले रंग का था । उसकी लंबाई लगभग 15 से 20 फीट की रही होगी और चौड़ाई 4 से 5 फीट के बीच में होगी देखने से ही वह बड़ा भयानक लगता था । बीच-बीच में जब वह मुंह खोलता था तो उसमें से आग की लपटें निकलती थी ।

एक गहरे काले रंग की लगभग चार फुट की पूर्ण निर्वस्त्र महिला उस बड़े से आसन पर बैठी हुई थी ।
धर्मदास ने उसके सामने झुक कर प्रणाम किया उसकी देखा देखी मैंने भी झुक कर प्रणाम किया

उस महिला ने धर्मदास के प्रणाम को अपने सिर को हल्का सा झटका देकर स्वीकार किया और प्रश्नवाचक निगाहों से बाबा की तरफ देखा ।

बाबा बोला - इसे सिखाना है ।

इतना सुनते ही वाह जोर से हंसी उसका अट्टहास बड़ा ही वीभत्स और डरावना था । शायद वह उसकी सहमति का प्रतीक था । जिसे सुनकर बाबा ने फिर झुक कर प्रणाम किया । उसके बाद बाबा उस खुले दरवाजे से होता हुआ उड़कर वहां से चला गया ।

बाबा के उस गुफा से ऐसे अचानक गायब हो जाने से मैं थोड़ा घबराया । लेकिन ! मैं कुछ कर नहीं सकता था । मैंने उस महिला की ओर गौर से देखा । उसके सिर के बाल छोटे-छोटे थे । मुश्किल से डेढ़ या दो इंच के होंगे । सर के बाल साही के कांटे जैसे खड़े हुए थे । उसके कान बड़े बड़े थे । कान की नीचे की लो जिस में बाली पहनते हैं वह उसके कान में पड़े हुए मोटे मोटे छल्लो की वजह से लटककर लंबे हो गए थे । जो कम से कम चार चार इंच के जरूर रहे होंगे ।

उसकी आंखें गहरे लाल रंग की थी । यानी हमारी आंख में जो जगह सफेद होती है वह पूरी की पूरी लाल थी । आँख का जो हिस्सा हमारा काला होता है उसकी आँखों का वह हिस्सा गहरे नीले रंग का था । उन आंखों को देखते ही शरीर में सिहरन सी दौड़ जाती थी । उसके गले मे काले और लाल रंग के बड़े बड़े मनकों की माला थी । एक छोटी सी खोपड़ी उसकी कमर मे बंधी हड्डी की माला से लटकी हुई थी ।
उसका शरीर हृष्ट पुष्ट था । देखने से वह बीस बाईस साल की युवती जैसी लगती थी । उसे देखने से डर लगता था ।

मैं डर और आशंका के भावों के साथ घबराया हुआ वहीं खड़ा था । मेरी इच्छा हो रही थी कि मैं उस गुफा के दरवाजे से कूदकर बाबा के जैसे ही उड़ जाऊं । लेकिन वह भी थोड़ी मुश्किल चीज थी ।
बाबा के गायब होने के बाद उस महिला ने मुझे अपने पास आने का इशारा किया । मैं डर कर वहीं खड़ा रहा । क्योंकि ! उसी के पास वह मगरमच्छ बैठा हुआ था जिसके मुंह से आग की लपटें निकलती थी ।

उसके मुंह से जब आग की लपट निकलती तो मै डर कर एक कदम पीछे हो जाता । मुझे लग रहा था कि मैं यहां कहां फस गया ।

उसने दोबारा मुझे अपने पास आने का इशारा किया । डर के मारे मैं अपनी जगह से नहीं हिला ।

यह देख कर उसने उस मगरमच्छ की पीठ पर एक लात मारी । मगरमच्छ तेजी से मेरी और लपका ! जिस दरवाजे से हम लोग आए थे वह दरवाजा बंद था ! दूसरी तरफ वह महिला बैठी हुई थी । गुफा के खुले दरवाजे से आसमान दिखाई दे रहा था यानी कुल मिलाकर एक तरफ कुआं और एक तरफ खाई वाली स्थिति थी ।
वह मगरमच्छ तेजी से मेरी तरफ लपका । उसका लगभग 2 फीट लंबा जबड़ा पूरी तरह से खुला हुआ था । उसके मुंह के अंदर एक गुफा जैसा द्वार दिखाई दे रहा था । अगर वह मुझे निगल लेता तो मैं उसी गुफा से होता हुआ उसके पेट में समा जाने वाला था । यह सोचकर जैसे ही वह मेरी तरफ आया । मैं गुफा के खुले दरवाजे की ओर दौड़ पड़ा । वह भी मेरी तरफ लपका

। वह जब भी मुंह खोलता उसके मुंह से आग की लपटें निकलती । जो मेरे डर को और बढ़ा देती । ड़रकर मैंने गुफा के दरवाजे से बाहर छलांग लगा दी ।

दस साल का बच्चा ! जिसके पीछे खतरनाक मगरमच्छ खाने के लिए आ रहा हो ! वह और क्या कर सकता था .....

गुफा के बाहर छलांग लगाते ही मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया । क्योंकि । मैं तेजी से नीचे की तरफ गिर रहा था । जहां से मैं कूदा था, यानी कि वह गुफा, काफी ऊंचाई पर थी । जिस दिशा में मैं गिर रहा था वहां बहुत गहरे में नुकीले पत्थरों की बाढ़ मुझे दिखाई दे रही थी । यानी यह तय था कि मैं नीचे गिरुंगा तो मेरा अंत निश्चित है ।

मृत्यु की ओर बढ़ती हुई मेरी वह यात्रा देखकर मैं भयभीत था । अपना निश्चित अंत समझकर मैंने अपने मां को याद किया, बाबा को याद किया और आँख ज़ोर से भींच कर अपने आप को समय के हवाले छोड़ दिया । मै तेजी से नीचे गिर रहा था । बहुत उस संभावित टक्कर के बारे में सोच रहा था जिसके बाद मेरे

शरीर के चिथ्डे उड़ जाने थे और मैं मौत की गहरी नींद में सो जाता .....

तभी .....

अचानक !
मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी खुरदरी जगह पर टिक गया हूं .....

धीरे-धीरे मेरे गिरने की गति कम होने लगी .....

जब मैंने आंख खोल कर देखा तो मैं उसी काले मगरमच्छ की पीठ पर बैठा हुआ था ....

डर के मारे मैंने उसे कस कर पकड़ लिया.....
मुझे समझ में आ गया कि यह मुझे बचाने आया है । या यूं कह लीजिए कि उस समय मुझे वही अपना एकमात्र सहारा लगा । मेरे पकड़ते ही उस मगरमच्छ ने एक गोता लगाया और तेजी से ऊपर की ओर उठ गया । ऐसा लग रहा था जैसे कोई मिसाइल हवा को चीरती हुई आकाश की ओर बढ़ रही हो । बीच-बीच में उसके मुंह से वह आग का गोला भी निकलता .....

पांच दस सेकंड में उसने मुझे वापस उसी गुफा मे लाकर छोड़ दिया । वह स्त्री शायद मेरे डर को समझ गई थी । उसने अपने हाथों का कोई इशारा किया और वह मगरमच्छ वहां से उड़ता हुआ गुफा से बाहर निकल गया ।

गुफा की देवी

वह देवी अपने आसन से उठकर मेरी तरफ आई । मैं जमीन पर पड़ा हुआ था । उसने मुझे उठाया और अपने साथ हाथ पकड़ कर अपने सिंहासन तक ले कर गयी । मैं अभी भी डर रहा था और उसके साथ सहमकर चल रहा था । उसने मुझे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठा लिया । और मुझे अपने सीने से लगा लिया । मेरी घबराहट थोड़ी कम हुई । थोड़ी ही देर में मैं संयत हुआ ।

उसके बाद उसने मुझे अपनी आंखों में देखने के लिए कहा । मैंने डरते डरते उसकी आंखों में देखा । उसकी चमकीली आंखें ऐसी लग रही थी जैसे मेरी आंखों से मेरे शरीर मे घुस जाएंगी । जैसे वे मेरे शरीर के अंदर में उतर जा रही हो । उसके बाद मैं उसके सम्मोहन में आ गया । उसने पूरी तरह मुझे अपने नियंत्रण में ले लिया । अब वह जो भी बोलती , मैं अक्षरश: उसका पालन करता ।

उसने मुझे जमीन पर लेट जाने का आदेश दिया और मैं जमीन पर लेट गया । उसके बाद एक अजीब सी आवाज निकाली जो मगरमच्छ गुफा से निकलकर हवा

में उड़ गया था वह वापस गुफा में आ गया । उसने मगरमच्छ को कोई इशारा किया । मगरमच्छ मेरे चारों तरफ घूमने लगा ।

एक चक्कर पूरा हो जाने के बाद जब वह मेरे सर की तरफ आया उसने अपना मुंह खोल कर आग का भभका छोडा । इसी प्रकार वह मेरे चारों तरफ घूमता जाता और आग का भभका मेरे शरीर की तरफ छोड़ता जाता । मेरा शरीर अब अपने नियंत्रण में नहीं था । इसलिए मैं वैसे ही स्थिर पड़ा रहा । जब वह आग का भभका मेरी तरफ आता तो मुझे ऐसा लगता जैसे मेरे शरीर के उस हिस्से को आग से जला दिया गया हो । तीव्र जलन होती ।

इच्छा थी कि मैं वहां से उठकर भाग जाऊं लेकिन मेरा शरीर मेरा साथ नहीं दे रहा था । मैं बेबस अवस्था में वहीं पर पड़ा हुआ था । मेरा पूरा शरीर एकदम गोरा चिट्टा था । धीरे धीरे मेरे शरीर का रंग गहरा काला होने लगा । ठीक वैसा ही जैसा उस देवी का था .....

उसके बाद मैं बेहोश हो गया ...

न जाने कितने समय के बाद मुझे होश आया ...

काली विद्या

जब मुझे होश आया तो मैं उसी गुफा मे पड़ा हुआ था ....

उसके आगे का सीखना सिखाना मेरा उसी गुफा मे हुआ ।

समय गुजरता गया और मैं बड़ा होता गया .....

लेकिन !

बड़ा होने की मेरी गति बड़ी तेज थी ....

कुछ ही दिनों में मेरे शरीर पर बाल आने लगे और मेरा शरीर किसी युवक की तरह हो गया....

वह सिंहासन वाली देवी मुझे रोज आधी रात को एक मंत्र बताती और मुझे उस का जाप अगले दिन सुबह तक करना रहता । इस प्रकार उसने मुझे 77 मंत्र बताएं । मैं उनका 77 दिन तक जाप करता रहा । इस बीच मेरा शरीर पूर्ण युवक का शरीर हो चुका था ।

अजीब बात यह थी कि वहां पर भूख प्यास कुछ नहीं लगती थी । जब भूख प्यास नहीं लगती थी तो कुछ खाना नहीं पड़ता था और मल मूत्र विसर्जन की जरूरत ही नहीं पड़ती थी ।

इसके बावजूद मेरा शरीर बराबर विकसित हो रहा था ।

जब एक दिन का मंत्र जाकर पूरा हो जाता तो वह युवती मेरे शरीर के किसी एक भाग में चोट करती और वहां से रक्त पान करती .....

रक्तपान करने के बाद जब मैं बेहोश हो जाता तब मुझे एक पत्थर की बनी हुई नाव में डाल दिया जाता । उस नाव के अंदर गहरे काले रंग का द्रव भरा हुआ रहता था । मुझे उसमें डूबा दिया जाता और फिर रात का समय होते ही बाहर निकाल लेते ...

यह रोज का क्रम था ।

यानी 77 अलग-अलग मंत्र उसने मुझे दिए और उसका जाप पूरा होने के बाद वह मेरे शरीर से रक्तपान करती ।

जब 77 दिन जब पूरे हो गए तब तक मैं भी पूर्ण युवक हो चुका था ।

उस समय वह आंखें बंद करके बैठी हुई थी ...

आमतौर पर मैं उसके सामने जाकर बैठ जाता और थोड़ी देर के बाद वह आँख खोलती और फिर मुझे मंत्र बताती थी ।

इसमें एक अजीब बात और थी वह यह कि मेरे शरीर से जैसे ही वह रक्तपान करती तो मैं वह मंत्र भूल जाता था जो मैंने उसके पहली रात को जपा था ।

अब मेरे पास आखरी वाला मंत्र बचा था जो मैंने सतत्तरवी रात को जपा था । मैं उसके सामने बैठ कर उसी मंत्र का जाप कर रहा था ।

वह आंखें बंद करके बैठी हुई थी और लगभग 15 मिनट के बाद उसने अपनी आंखें खोली उसके हाथ में रोज वाला चाकू आ गया ।

अब वह रोज का प्रक्रम था तो मैं भी उसके लिए तैयार था । मैं भी तैयार था कि अब वह मेरे शरीर के किसी भाग पर चोट करेगी और वहां से रक्तपान करेंगी ।

वह धीरे धीरे मेरी तरफ बढ़ी ॥

यह रोज का क्रम था कि वह मेरा एक चक्कर लगाती और उसके बाद चोट करती । रक्तपान करने के बाद उस दिन की प्रक्रिया समाप्त हो जाती थी ।

लेकिन उस दिन मेरे सात चक्कर लगाए । सातवाँ चक्कर पूरा होने के बाद वह मेरे सामने आकर खड़ी हो गई ।

उसने मेरी नाभि मे चीरा लगाया और रक्तपान करने लगी । लगभग दस मिनट बाद वह हटी ॥

रक्तपान करने के बाद उसने मुझे लिटा दिया । जैसा कि रोज होता था मैं अपना आखिरी मंत्र भी भूल चुका था । मुझे लिटाने के बाद मेरे ऊपर आ गई और हम लोग उस अवस्था मे लगभग रात तक रहे । ठीक आधी रात ,

संभवत: अमावस्या की रात रही होगी क्योंकि बाहर चांद की रोशनी बिल्कुल भी दिखाई नहीं दे रही थी ।

उसने मेरे कान में एक मंत्र गुनगुनाया और कहा - अब यही मंत्र तेरे हर काम आएगा। तू मंत्र सिद्ध हो चुका है अब तेरे लिए असंभव कुछ भी नहीं होगा ।

उसके बाद वह धुंधली होती हुई मेरे शरीर में समा गई ।

अब उस कमरे में सिर्फ मै था ...

मैंने इधर उधर देखने की कोशिश जरूर की

लेकिन वह कही नहीं दिखी ....

गुफा के दूसरे हिस्से का दरवाजा खुल चुका था । मैं समझ गया कि मेरे जाने का समय हो गया है ।

मैं वहां से निकला ....

गलियारे से होता हुआ वापस उस बड़े कक्ष मे पहुंचा । उस कक्ष में एकदम सुर्ख लाल रंग की पत्थरों से बनी

हुई लगभग 15 फीट ऊंची एक प्रतिमा थी । मैंने उस प्रतिमा को प्रणाम किया और उसके सामने बैठ गया ...

मुझे वह आखरी मंत्र जो उसने मेरे कान में बताया था, वह याद था ।

वहां बैठकर मैं उसका जाप करने लगा ।

क्योंकि आगे क्या करना है यह तो मुझे मालूम ही नहीं था ....

यहां से बाहर निकलकर गुफा में पहुंचना है....

लेकिन कैसे पहुंचना है ?

इसकी जानकारी भी मुझे नहीं थी .....

मैं वहां बैठकर मंत्र जाप करता रहा ....

अपनी गुफा मे वापसी

लगभग आधा घंटा बीता होगा जब किसी ने मुझे हल्के से उठाया ।

मैंने आंखें खोली तो देखा काली दाई खड़ी थी । उसने मेरा हाथ पकड़ा और बोली - मंत्र जाप करो ।

उसके बाद हम दोनों तालाब के पानी से गुजरते हुए वापस गुफा में पहुंचे ।

मुझे गुफा में छोड़कर वह भी गायब हो गई ....

अब मैं गुफा में बैठा हुआ था । यह सोचते हुए कि आगे क्या करना है । थोड़ी देर में बाबा प्रकट हो गया ...

उसके हाथ में एक झोला था । वह मेरे सामने बैठ गए और उन्होंने कहा - बेटा तुझे अपनी मां की अंतिम इच्छा पूरी करनी है और इसके लिए तुझे वापस अपने गांव लौटना पड़ेगा । वहां जाकर तुझे चपला का खास आदमी बनना पड़ेगा । उसके बाद जिस प्रकार से उसने तेरी मां को नुकसान पहुंचाया ठीक वैसे ही उसकी

आत्मा को शांति पहुंचने लायक नुकसान उसे पहुंचाना है ।

मैंने पूछा - बाबा यह मैं कैसे करूंगा ?

बाबा धरमदास ने कहा - यह झोला मैं तेरे लिए लाया हूं । इस झोले के अंदर बहुत सारी चीजें हैं इनको तुझे उस घर के अंदर ऐसी जगह पर रखना है , जहां किसी की नजर इस पर ना पड़े । बाकी काम यह चीजें अपने आप कर लेंगे ।

जो तुझे सीखना था वह सब कुछ तू सीख चुका है । वह सारी शक्तियां मैंने तेरे अंदर तेरे जन्म से पहले ही डाल दी थी । वे सारी की सारी शक्तियां जागृत हो चुकी है । जो कुछ मैं जानता था वह सब कुछ अब तू भी जानता है ।

मेरी मुक्ति के लिए आवश्यक था कि मैं इस पूरी साधना और सिद्धियों को किसी उत्तराधिकारी को सौंप दूं । तेरे रूप में मैंने अपना उत्तराधिकारी देखा था । जो भी मेरे पास था वह मैंने तुझे दे दिया है अब मैं तुझे कभी नहीं मिलूंगा ।

इसके आगे जो भी मार्गदर्शन तुझे चाहिए होगा तू नीचे लाल रंग की जो प्रतिमा थी वहां पर आकर ले सकता है । अब तुझमें इतनी शक्ति है कि तू जो चाहेगा वह कर सकता है । जो मंत्र तुझे मिला है वह मंत्र दुनिया का सबसे शक्तिशाली मंत्र है । इस मंत्र के द्वारा तू कुछ भी कर सकता है । चलते हुए आदमी को मार सकता है । उड़ती हुई चिड़िया को मार सकता है । तैरती हुई मछली को मार सकता है । किसी का भी नुकसान पहुंचाने में अब तू पूर्ण सक्षम है ।

मंत्र प्रयोग

यह सब सुनकर मुझे बड़ा गर्व महसूस हो रहा था कि मैं अब सब कुछ कर सकता हूं ।

इसके बाद काफी समय तक मैं उस गुफा में ही रहा । काली दाई बीच-बीच में आती और फिर अदृश्य हो जाती । उसने मुझे कहा - अभी तेरा समय नहीं आया है । जब मैं तुझे बताऊंगी तब ही तुझे इस गुफा का त्याग करना है ।

मेरे लिए भी वह कोई बड़ी बात नहीं थी क्योंकि बचपन से मैं जंगल में ही था । गांव में जिससे मेरा सबसे ज्यादा लगाव था । मेरी मां ! वह अब मर चुकी थी । गांव जाने की मेरी बड़ी इच्छा भी नहीं थी । जंगल का जीवन मुझे रास आ चुका था । भूख कि मुझे चिंता नहीं थी क्योंकि वह लाल पत्थर वाला देवता मेरे लिए इच्छा अनुसार हर चीज उपलब्ध करा देता था । जंगल में भी फलदार पेड़ थे । कभी-कभी वहां से भी मेरी पेट पूजा हो जाती थी ।

मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद मेरे लिए कोई चीज असंभव नहीं रह गई थी । किसी पेड़ के नीचे अगर मैं गुजरता और उस पेड़ के फल खाने की इच्छा होती तो मुझे बस उसकी तरफ देखना पड़ता था और 3 बार मंत्र जाप करते ही बार फल अपने आप टूट कर जमीन पर गिर जाता था । यह मेरी बहुत बड़ी उपलब्धि लगती थी ।

कई बार जंगली जानवरों से पाला पड़ा था । एक बार एक जंगली कुत्ता मेरी तरफ आया मैं उससे डर कर दूर दूर भाग रहा था । भागते भागते मैं एक पेड़ पर चढ़ गया । वह कुत्ता नीचे बैठ गया और मेरा इंतजार करने लगा । थोड़ी देर मे उसने अपने पूरे झुंड को बुला लिया । उसमे दस बारह कुत्ते थे । सारे के सारे पेड़ के नीचे मेरे इंतजार मे बैठे थे ।

मैं जब थोड़ा शांत हुआ तब मुझे लगा कि मंत्र इनपर भी काम करना चाहिए । यह खयाल आते ही मेरे अंदर की काली शक्ति वाला शैतान जाग गया । मैंने तीन जंगली कुत्तों को मानसिक रूप से दूसरे कुत्ते पर हमले का आदेश दिया ।

तीन बार मेरे मंत्र जाप के बाद मानसिक रूप से मेरे आदेश देते ही तीन कुत्ते भयंकर अंदाज में दूसरे कुत्तों पर झपट पड़े । उसके बाद वहां भयंकर घमासान हुआ । सारे कुत्ते आपस में एक दूसरे की चीरफाड़ करने लगे । आधे घंटे में सारे कुत्ते मौत की नींद सो चुके थे....

अब यह मेरे लिए एक मजेदार खेल हो गया । सिर्फ 3 बार मंत्र जाप करना पड़ता और मन में सोचना पड़ता और वह चीज हो जाती ।

एक बार एक कबूतर आसमान में उड़ रहा था । मेरी इच्छा हो गई कि आज कबूतर का मांस खाया जाए । मैंने उसकी तरफ देख कर 3 बार मंत्र जाप किया । अचानक वह उड़ता हुआ कबूतर तेजी से जमीन पर आ टकराया और वहीं पर मर गया । मैंने उसे आग जलाकर भूँजकर खा गया ।

इस प्रकार से मैं समय आगे बढ़ता गया । रोज रात को मैं मंत्र जाप करता रहता । धीरे-धीरे मेरी शक्तियाँ और प्रबल होती चली गई । अब कई बार तो मुझे मंत्र जाप

भी नहीं करना पड़ता था । सोचने मात्र से मेरे कार्य हो जाते थे ।

लेकिन ।

इन सारे कार्यों में यह एक विचित्र बात थी कि नुकसान पहुंचाने वाले कार्य मेरे बड़े आसानी से हो जाते थे । एक दिन मैं पेड़ पर चढ़ा और अचानक फिसल कर गिर गया । इस फिसलने से मुझे बड़ा गुस्सा आया । मुझे ऐसा लगा कि इस पेड़ की वजह से मैं गिरा हूं । मेरे मन में विचार आया कि जिस पेड़ ने मुझे गिराया है उस पेड़ को जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं है । मैंने गुस्से से उस पेड़ को देखा और वहां से चला गया ।

जब दूसरे दिन मैंने आकर देखा तो वह पूरा का पूरा पेड़ और उसकी पत्तियां मुरझाने लगी थी । हफ्ते भर के अंदर जब उसकी सारी पत्तियां गिर गयी और पेड़ सूखने लगा । तो मैंने मन ही मन विचार किया कि इसे ठीक हो जाना चाहिए लेकिन वह ठीक नहीं हुआ ....

महीने भर के अंदर वह सिर्फ ठूंठ बनकर रह गया॥

ऐसी विचित्र विचित्र घटनाएं बहुत सारी होती रही और मैं उसके बीच में धीरे-धीरे और ताकतवर बनता चला गया ...

चंदा बुआ और चमकीली जड़ी

एक दिन काली दाई आई .... उसने कहा – चल । अब वापस जाने का समय आ गया है ॥

जैसा कि आप जानते हैं जंगल में कोई देखने वाला होता नहीं तो मैं लगभग निर्वस्त्र ही रहता था ।

उस दिन काली दाई अपने साथ एक धोती भी लेकर आई थी । उसने मुझे धोती पहनना सिखाया ।

फिर बोली - मैं तुझे एक गांव में लेकर जाऊंगी । वहां पर तुझे कुछ दिन रहना है । उसके बाद तू अपने गांव जाएगा । ताकि तेरे पास बताने के लिए रहे कि तू फलाने गाँव से आया है । इस बात का ध्यान रखना कि अपनी पहचान जहां तक हो सके छुपा कर ही रखना । जब तेरी शादी हो जाएगी तब तू अपनी पत्नी को अगर ठीक समझे तो पहचान बता सकता है । यह विद्या पूरी तरह से तुझे सिद्ध हो चुकी है । यह बात ध्यान रखना कि तुझे मरने से पहले यह विद्या किसी न किसी को देकर ही जाना है ताकि यह विद्या आगे भी चलती रहे ।

इतना होने के बाद काली दाई मुझे वहां से दूसरे गांव ले गयी । वहां उसकी रिश्तेदार चंदा रहती थी जिसके यहां उसने मुझे छोड़ दिया । वह लगभग पचास साल की अधेड़ महिला थी । उसका घर झोपड़ी नुमा था । मुझे वहां छोड़कर दूसरे दिन काली दाई वापस चली गई ।

अब मैं उसी महिला के साथ रहने लगा .....
दिन के समय सब सामान्य रहता था । वह मुझे अपने साथ काम पर लेकर जाती । गांव वालों को उसने मुझे अपना भतीजा बताया था । मैं उसे चंदा बुआ बुलाता । चंदा बुआ ने मेरा नाम भोलू रख दिया अब गांव में मैं भोलू के नाम से जाना जाता ।

चंदा बुआ के साथ कुछ विशेष नहीं था । वह एक सामान्य महिला की तरह ही दिखाई देती थी ।

लेकिन .....
वह भी एक काले जादू की जानकारी महिला थी और काफी अच्छे स्तर पर थी .....

उन दिनों छत्तीसगढ़ में काले जादू की जानकार महिलाओं को टोनही कहा जाता था । दिन के समय

सब ठीक रहता था । लेकिन रात होते ही हम दोनों जंगल की तरफ निकल जाते हैं । वहां पहुंचने के बाद वह स्वयं भी निर्वस्त्र हो जाती और मुझे भी निर्वस्त्र कर देती । पहले दिन उसने एक जड़ी की उसने मुझे पहचान कराई । उसके निर्देशानुसार मैंने खोद कर उस जड़ी को बाहर निकाला । उसने एक टुकड़ा अपने मुंह में रख लिया और एक टुकड़ा मेरे मुंह में रख दिया और उसे धीरे-धीरे चबाते रहने को कहा । साथ ही यह भी कहा कि उसे निगलना नहीं है । अगर लार आएगी तो उसे बाहर गिरते रहने देना है अंदर नहीं निगलना है ।

रात का अंधेरा था .....

जंगल का इलाका ....

और शायद कृष्ण पक्ष की दशमी के बाद की कोई तिथि रही होगी.....

क्योंकि चांद की रोशनी बहुत हल्की हल्की सी दिखाई दे रही थी ।

मैंने देखा कि चंदा बुआ के मुंह से टपकती हुई लार चमकती रही और नीचे गिरते हुए वह किसी आग के गोले की तरह या किसी बम विस्फोट की तरह प्रकाश छोड़ती और फिर गायब हो जाती....

यह कुछ कुछ ऐसा था जैसे अंधेरी रात में कभी-कभी तारों का टिमटिमाना लगता है अचानक से रोशनी दिखाई देती है और फिर गायब हो जाती है ....
मेरे मुंह से भी वैसी ही लार निकाल रही थी .....

वह इसी प्रकार रात को लेकर जाती और वहां पर जड़ी-बूटी निकालना सिखाती थी और उनके प्रयोग भी बताती थी ...
इस दौरान उसने मुझे लगभग सात प्रकार की जड़ियों की पहचान कराई । जो कि अलग-अलग काम आती थी यह सारे काम उल्टे उल्टे ही थे ।

एक जड़ी ऐसी थी जिसको किसी घर में रख देने से वहां पर लड़ाई झगड़े चालू हो जाते.....

एक जड़ी ऐसी थी जिसे किसी पुरुष को स्पर्श करा देने से उसका पुरुषत्व समाप्त हो जाता ...

एक जड़ी ऐसी थी जिसे अगर किसी गर्भवती स्त्री को खिला दिया जाए तो उसका गर्भपात हो जाता ...

कुल मिलाकर सारी वस्तुएं दूसरों को नुकसान पहुंचाने वाली ही थी ....

जंगल मे भी मैं बचपन से उसी टाइप की हरकत करता रहता था इसलिए मेरे लिए वह सारी चीजें मजेदार लगी.....

मैं जंगली जैसा जीवन बिता कर आया था तो मेरी हरकतें शुरू शुरू में वैसी ही थी .....

लेकिन ....
धीरे-धीरे लोगों को देखकर मेरे व्यवहार में भी परिवर्तन आने लगा और मैं सामान्य व्यवहार करने लगा ।

फुल्ली और मोहिनी जड़ी का जादू

चंदा बुआ मुझे उन जड़ियों का परीक्षण करने के लिए भी कहती थी ताकि किसी भी प्रकार की गड़बड़ी होने पर वह उसे सुधार सके .....

इस प्रकार के परीक्षण के दौरान बड़े मजेदार मजेदार किस्से हुए । एक बार मोहिनी जड़ी का परीक्षण करने के लिए मैंने सोचा । वह एक पीले रंग की जड़ी थी । उस जड़ी को अपनी हथेलियों में घिसना था और उसे इच्छित व्यक्ति को सूंघा देना था । उसे सुंघाते ही वह पूरी तरह से वशीकरण में आ जाता ।

चंदा बुआ के घर के पास में ही एक और घर था । जहां पर मेरी ही आयु का एक युवक भूरुवा रहता था । उसकी नई नई शादी हुई थी । मुश्किल से दो या तीन महीने हुए होंगे ।

उसकी पत्नी फुल्ली चौदह पंद्रह साल की युवती थी । वह घुंघट लगा कर रखती थी क्योंकि घर में बड़ा भाई और सास ससुर भी थे । उस समय घुंघट रखने का प्रचलन था । कभी कभार उससे सामना हो जाता था । बातचीत लगभग नहीं के बराबर हुआ करती थी । एक दिन वह घर आई तो मैंने सोचा कि इस पर मोहिनी आजमा कर देखा जाए ।

मैंने उसे जड़ी घिसने के बाद किसी बहाने से अपना हाथ सूंघा दिया । उस समय शाम के 6 बजे होंगे । वह अपना काम कर घर चली गई ।
जब वह चली गई तो मुझे लगा कि शायद मोहिनी काम नहीं किया । उस समय सूरज ढलने के साथ सारे काम बंद हो जाते और सात आठ बजते बजते पूरा गांव सो जाता था .....

गांव में घर के बाहर सोने का प्रावधान भी रहता है । मैं खाट पर बाहर लेटा हुआ था और गहरी नींद में था .....

देर रात मुझे लगा कि कोई मेरे बिस्तर पर है ....

वह कोई स्त्री थी .... जो मेरे बिस्तर पर थी । वह फुल्ली थी । वह मुझसे लिपटने लगी ...

मैं भी जवान था ..... तो वासना में बह गया .... और सब कुछ हो गया ।

फुल्ली सब कुछ हो जाने के बाद भी वहां से जाने को तैयार नहीं थी ...

वह एक टांग मुझपर चढ़ाकर मेरे साथ ही लिपट कर सो गई ....

मुझे समझ में नहीं आया कि मैं क्या करूं ?

तो मैंने आखिरकार झोपड़ी मे जाकर चंदा बुआ को उठाया .....

मैंने उसे सारी बात बताई .....
चंदा बुआ के चेहरे पर विजय की मुस्कान खिल उठी.....
ऐसा लगा जैसे उन्हें यह सुनकर बड़ा गर्व महसूस हुआ हो ...

संभवत: उन्हें अपनी सिखाई हुई विद्या के सफल होने का गर्व रहा होगा.....
लेकिन !
समस्या गंभीर थी !
उसका समाधान निकालना भी जरूरी था !
नहीं तो ..... भारी बवाल मचने वाला था .....

उन्होंने मुझसे कहा - इस मोहनी जड़ी का असर एक दिन पूरा रहेगा उससे पहले नहीं जाएगा। इसलिए मैं इसके साथ सो जाती हूं ....तू अंदर झोपड़ी मे सो जा ...

मैंने सहमति में सिर हिलाया और झोपड़ी के अंदर चला गया। चंदा बुआ बिस्तर पर फूली के साथ लेट गई। एक घंटे के बाद फुल्ली फिर से मेरे बिस्तर पर आ गई और फिर सब कुछ दोबारा से हुआ। इसके बाद वह फिर सो गई।

अब मुझे डर लगने लगा कि अगर भुरवा ने देख लिया....

तो....

मेरा क्या होगा ?

उस समय भोर होने वाली थी ....

सुबह चार बजे तक पूरा गांव जागने लग जाता है।

मैं बाहर निकला। चंदा बुआ को उठाकर पूरी बात बताई और वहां से चुपके से निकल गया। वह पूरा दिन मैंने जंगल में गुजारा।

आधी रात के आसपास घर लौटा । दबे पाव अंदर घुसा । छोटी सी लालटेन बत्ती जल रही थी । बिस्तर पर चंदा बुआ अकेली सो रही थी ।

मेरी आवाज सुनकर वह उठी और कुटिल मुस्कुराहट के साथ बोली - शाम तक यही बैठी थी । बहुत समझा बुझा कर भेजा है । तू खाना खा ले । कल तक ठीक हो जाएगी ।

खाना खाकर मैं सो गया । अगले दिन सुबह वह फिर घर आई । लेकिन इस बार बकायदा घुंघट निकाल कर आई थी । उसके व्यवहार में कोई चंचलता नही थी और वह बुआ से सामान्य बात करके चली गई .....

ऐसा कुछ लग ही नहीं रहा था जैसे पिछली रात को यह सब कुछ हुआ हो ....

गाँव वापसी

इस प्रकार मैंने चंदा बुआ के द्वारा दी गई सारी जड़ियों को एक-एक करके इस्तेमाल करके देखा ।

सब सौ टंच खरी उतरी .....

हर प्रयोग एक बार में असर करता था ...

जब सारे प्रयोग मैने सफलतापूर्वक कर लिए तो चंदा बुआ ने मुझे विदा किया और कहा - कभी कोई जरूरत पड़े तो आ जाना । मुझसे जो बन पड़ेगा मैं करूंगी । वैसे तुझे अब इतना कुछ आता है कि मेरी जरूरत शायद ही पड़े ।

बुआ से विदा लेने के बाद उस गांव से निकलकर मैं अपने गांव वापस आया । यहां आने के बाद मैं चपला के खेत में काम करने लगा । कुछ दिनों के बाद चपला ने मुझे अपने घर पर काम में लगा लिया.....

अब मुझे अपना काम पूरा करना था ।

बाबा धर्मदास ने जो झोला मुझे दिया था उस झोले के अंदर की सारी चीजें मैंने उसी गुफा में रख दी थी । उनमें से कुछ कुछ चीजें ले जाकर उस कुएं में डाल देता । बहुत सारी चीजें कुएं के तले में है और बहुत सारी चीजें सीढ़ियों के नीचे गड्ढा बनाकर मैंने दबाया हुआ है ।

सिर्फ यह खोपड़ीयां बची हुई है । जिसको दबाना है । उसके बाद तांत्रिक क्रिया पूर्ण हो जाएगी और फिर उस घर में चालू होगी विनाश लीला....

चंदा असमंजस भय और आश्चर्य की स्थिति में बैठी हुई थी ।
वह जिसे एक सामान्य आदमी समझ रही थी । वह कितना बड़ा काले जादू का जानकार है । यह सोचकर वह गर्व भी महसूस कर रही थी और डर भी .....

सुबह दोनों वापस गांव लौटे ॥

अब चंपा भी इस बदले में भोलू के साथ थी ॥

खोपड़ियों की स्थापना का असर

अगले हफ्ते तक तीनों खोपडियों को कुएं में स्थापित करने का कार्य भोलू ने पूरा कर लिया.....

खोपडियों को स्थापित कर देने के बाद लगभग एक महीने के अंदर दुष्यंत की तबीयत धीरे-धीरे खराब होने लगी .....

पहले उसे खांसी के साथ खून आने की शिकायत चालू हुई । धीरे-धीरे उसका शरीर कमजोर होकर ढीला पड़ने लगा । 6 माह के भीतर भीतर उसकी हालत इतनी कमजोर हो गई कि उसने बिस्तर पकड़ लिया ...

दुष्यंत दारू गांजा जैसे अनेक प्रकार के व्यसनों का आदी था । इसलिए उसकी ऐसी गति होने को दुर्व्यसनों का प्रभाव ही समझा गया । गाँव मे किसी की समझ में यह नहीं आया कि यह भोलू के द्वारा किए गए प्रयोगों का परिणाम है ...

उस समय चपला के बड़े लड़के विनोद की उम्र लगभग 17 साल हो चुकी थी । दुष्यंत के बिस्तर पकड़ने के कुछ

दिनों बाद से उसे रात मे अजीब अजीब से सपने दिखाई देना चालू हो गया । उन सपनों में एक काले रंग का साया उसे अपनी गर्दन दबाता हुआ दिखाई देता था । घर मे चल रही बहुत सारी परेशानियों के चलते उसने काफी दिनों तक यह बात सबसे छुपाई लेकिन रात भर डर के मारे वह सो नहीं पाता था।

एक रात जब वह बिस्तर पर लेटा था, तभी उसे अपने कमरे में एक कोयले जैसे काले रंग के सुर्ख लाल आंखों वाले विशालकाय पुरुष की आकृति दिखाई देने लगी ....

उस आकृति ने उसकी ओर देखकर भयानक अट्टहास किया .....

विनोद की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई ...

थोड़ी देर के बाद .....

वह विशाल आकृति उसके बिस्तर पर चढ़ गई ।

डर के मारे उसकी बोलती बंद हो गयी ....

कुछ देर तक वह वहीं बैठकर विनोद को घूरता रहा !

फिर वह आकृति उसकी छाती पर बैठकर गर्दन को दबाने लगी ।

विनोद के गले से घों घों की आवाज के अलावा कुछ भी नहीं निकल रहा था ....

उसे ऐसा लग रहा था कि आज उसकी मौत हो जाएगी ...

उसने उस पुरुष आकृति को धकेलने की कोशिश की ....

लेकिन !

वह इतना बड़ा था कि उसके धक्के से वह हिला भी नहीं ...

कुछ देर तक गला दबाने के बाद वह आकृति फिर अट्टाहास करती हुई वहां से गायब हो गई । । । ।

जैसे ही विनोद का गला छूटा । वह जोर-जोर से चीखने लगा । डर के मारे वह बिस्तर से उठ नहीं पा रहा था .....

सिर्फ जोर जोर से चिल्ला रहा था....

उसकी चीख सुनकर सारे घर के लोग उसके कमरे की ओर दौड़े.....

वहां जाकर उसकी स्थिति देखकर सब घबरा गए .....

उसकी आंखें बाहर की ओर निकलती हुई नजर आ रही थी ।

वह जोर-जोर से चिल्ला रहा था और अपने हाथों को पटक रहा था .....

काफी देर के बाद बाद शांत हुआ .....

उसने अपनी आपबीती बताई और पिछले दिनों होने वाले अनुभव बताए...

तब जाकर घरवालों को उसकी हालत का पता चला ।

सभी लोग घबरा गए और उस समस्या के समाधान के लिए प्रयास शुरू हुए ...

आस पास के सारे जाने माने बैगा गुनिया बुलाये गए लेकिन नतीजा सिफर रहा ...

जग्गी महाराज

उनके आते ही भोलू उनकी सारी शक्तियों को बांध देता था और उसके बाद उनके किए सारे प्रयत्न नाकाम हो जाते थे । यह रहस्य सिर्फ भोलू ही जानता था...

इस के बाद चपला और ज्यादा भयभीत हो गई ...

उसे किसी ने सलाह दी कि यह बैगा गुनिया के बस की बात नहीं है । किसी सिद्ध तांत्रिक को लाने पर ही यह समस्या हल हो सकती है । उसने समस्या के समाधान के लिए सिद्ध तांत्रिक की खोज चालू की ....
काफी विचार के बाद चपला को इस संकट के समय दुष्यंत के परिवार के गुरुजी जगदीश प्रसाद शर्मा का ध्यान आया । गुरुजी महाकाली के साधक थे । वे लगभग तीन मील दूर एक झोपड़ी में रहा करते थे । उनकी उम्र लगभग 70 वर्ष की रही होगी । दुबले पतले शरीर के शर्माजी को सभी लोग जग्गी महाराज बुलाते थे ।

जग्गी महाराज दुष्यंत चंद्राकर जी के पिताजी के समय से ही उनके परिवार में आने वाली समस्याओं के

समाधान के लिए आते रहते थे । जब से दुष्यंत चंद्राकर की सत्ता आई उसने एक तरह से उस ओर जाना ही छोड़ दिया था । दुष्यंत को इन सब में कोई आस्था नहीं थी, वह इसे सिर्फ ढकोसला मानता था । वह अंग्रेजी शिक्षा का हिमायती था और उसे सारी बातें बेवकूफ बनाने का जरिया लगती थी । वह अपने पिता को भी जग्गी महाराज को बेवजह दान देने से रोकता था । लेकिन । पिता के सामने उसकी एक नहीं चलती थी । उनके जाते ही उसने जग्गी महाराज का दान बंद करवा दिया यहां तक कि एक बार उसने जग्गी महाराज को अपने घर से अपमानित कर भगा भी दिया था ।दुष्यंत के डर से घर का कोई सदस्य भी जगी महाराज के पास नहीं जाता था ।

जुगनी की मौत के बाद सास के बहुत ज़ोर देने पर चपला एक दिन अपनी सास के साथ वहां जरूर गई थी लेकिन उन्होंने स्पष्ट शब्दों में उस की काली करतूत का बयान कर दिया ।

यही नहीं ! उन्होने स्पष्ट शब्दों मे कह दिया - तेरे जैसी हत्यारीन जिस कुल मे हो उसका विनाश नजदीक है ...

जिसके बाद डर के मारे चपला ने उस दिशा की ओर देखना भी छोड़ दिया था ।

पति बिस्तर पर था । बेटे के साथ जिस प्रकार की विचित्र विचित्र घटनाएं घट रही थी , वह किसी बड़ी अनहोनी की ओर संकेत कर रही थी । जिससे बचाव करना बेहद जरूरी लग रहा था । चपला को अब समस्या बहुत बड़ी नजर आ रही थी । जिसके समाधान के लिए गुरुजी एकमात्र रास्ता दिखाई दे रहे थे । लेकिन उनके पास जाने में उसे बहुत ज्यादा झिझक हो रही थी ।

यह एक अकाट्य सत्य है कि जब अपने ऊपर समस्या आती है तो बड़े-बड़े तर्कशास्त्र मर्मज्ञ और नास्तिक व्यक्ति भी भगवान की शरण में जाने के लिए विवश हो जाते हैं । कई चीजें ऐसी होती हैं जिनका कोई हल नहीं होता । विज्ञान के विशेषज्ञ डॉक्टर भी कई बार मरीजों की हालत को देखकर उनके परिजनों को यह सलाह देते हैं कि वह दुआ करें ....

खैर.....

मरता क्या न करता वाली स्थिति थी । अंत में यह तय हुआ कि भोलू , जग्गी महाराज को बुलाने के लिए जाएगा और किसी प्रकार से उन्हें मनाकर घर आने के लिए कहेगा । यह एक बड़ी ग़जब की स्थिति थी ... जिसने मर्ज दिया था .... उसे ही दवा लाने की जिम्मेदारी सौंपी जा रही थी ...

भोलू अंदर ही अंदर इस स्थिति से प्रसन्न था । इससे पहले भी जितने बैगा आए थे वह सारे के सारे लाने की जिम्मेदारी भोलू की ही रहती थी और भोलू उन्हें लेकर आता जरूर था लेकिन इसी बीच उनकी ताकत का अंदाजा लगा के अपनी तरफ से प्रयोग भी कर देता था । जिसके चलते उनकी शक्ति शुन्य हो जाती है ।

विरोधी की ताकत का अंदाज उसके सामने जाने से सटीक होता । उसके बाद किसी को भी निपटा देना भोलू के लिए बाएँ हाथ का खेल था । वह खुशी-खुशी गुरु जी के पास जाने के लिए तैयार हो गया । यह तय किया गया कि भोलू जाकर उनको उनको सारी समस्याएं बताएगा और हवेली पर आने के लिए आमंत्रित करेगा।

जग्गी महाराज बनारस में अपने गुरु के पास रहकर महाकाली की साधना किया करते थे। वहीं दुष्यंत चंद्राकर के पिताजी से एक बार उनकी मुलाकात हुई थी। उनके ज्ञान और साधना से प्रभावित होकर उन्होंने अपने गांव आने का आमंत्रण दिया और आश्रम आदि की व्यवस्था करवाने की बात की। जिसके बाद जग्गी महाराज अपने गुरु से अनुमति लेकर वहां से लगभग तीन मील दूर स्थित एक गांव में आ गए थे।

उनका आश्रम लगभग 2 एकड़ में फैला हुआ था। जिसमें कुछ गाय थी और कुछ हिस्सा खेती का था। जिसमें हुए अनाज से उनका जीवन यापन हो जाता था। यह जमीन दुष्यंत चंद्राकर के पिताजी ने उनको दान में दी थी। नदी के किनारे होने की वजह से फसल भी अच्छी होती थी। उसी जमीन के एक हिस्से में जग्गी महाराज के लिए एक छोटा सा मंदिर भी उन्होंने बनवा दिया था। जग्गी महाराज उसी मंदिर में भगवती की आराधना करते थे।

बेहद सात्विक प्रवृत्ति के जगदीश जी उम्र अधिक हो जाने की वजह से अब कहीं पूजन वगैरह करने के लिए

भी नहीं जाते थे । सारा समय उनका उसी काली मंदिर में गुजरता था । जब तक दुष्यंत के पिता जिंदा थे तब तक मंदिर को विभिन्न प्रकार के दान दक्षिणा मिलती रहती थी । पूजा के लिए सामग्री की कमी भी नहीं होती थी लेकिन दुष्यंत के आने के बाद मंदिर को एक फूटी कौड़ी भी दान में नहीं दी थी । जिसकी वजह से मंदिर की देखभाल और व्यवस्था में कमी आई थी ।
अब वह मंदिर खंडहर जैसा होने लगा था । शुरू शुरू में जग्गी महाराज ने अपने दम पर उस मंदिर का संचालन करने की बहुत कोशिश की , लेकिन 2 एकड़ जमीन में सब कुछ कर पाना संभव नहीं था । ऐसी स्थिति आ जाती थी कि उनके पास भोजन के लिए अन्न भी नहीं बचता था ।

नवरात्रि में मंदिर में ज्योति कलश की स्थापना होती थी और उसके लिए घी सहित सारी सामग्री की व्यवस्था दुष्यंत के पिता जी की तरफ से होती थी । उनके जाने के बाद यह क्रम भी खंडित हो गया । उम्र बढ़ जाने के साथ-साथ साधना और पूजन की क्षमता भी धीरे-धीरे

कम होती गई और उसी के साथ मंदिर में स्थापित विग्रह की तेजस्विता में भी लगातार कमी आई ।

किसी भी मंदिर की मूर्ति की तेजस्विता तब लगातार बढ़ती है , जब वहां का पुजारी या वहां आने वाले साधक निरंतर पूजन हवन आदि संपन्न करते रहते हैं । किसी मंदिर को काफी समय तक इन सब से वंचित कर दिया जाए तो वहां की मूर्ति में स्थापित शक्तियां धीरे-धीरे वहां से विलुप्त होने लगती है । कुछ-कुछ वैसी ही स्थिति उस मंदिर की थी । जग्गी महाराज ने जवानी में काफी साधना की थी । उसकी वजह से उनको कई बातों का पता चल जाता था लेकिन उम्र बढ़ने के साथ-साथ उनकी वह क्षमता भी कम होने लगी थी...

भोलू जब उनके पास पहुंचा तब दोपहर का समय था । उसने जब उस काली मंदिर को देखा तो बाहर ही इंतजार करने लगा । आधे घंटे के बाद जग्गी महाराज बाहर निकल कर आए तो भोलू बाहर इंतजार करता हुआ दिखा ।
उन्होंने उससे पूछा - क्या बात है ?

भोलू ने सारी बात बताई और चपला की तरफ से हवेली में आने का निमंत्रण भी दिया ।

जग्गी महाराज ने कहा - वह हत्यारन क्यों नहीं आई ? अब जब करनी का फल मिल रहा है तो उसे मेरी याद आ रही है । जाकर उसे बोलना , महाराज ने आने से मना कर दिया है ।

भोलू ने सारी बात जाकर चपला को बता दी । चपला समझ गई कि जाकर माफी मांगे बिना बात नहीं बनेगी । अगले दिन दोपहर को फिर भोलू के साथ चपला आश्रम पहुंची ॥ उसने जाते ही जग्गी महाराज के पांव पकड़ लिए और अपने किए की माफी मांगी । साथ ही पूर्वजों की दुहाई देकर रोते रोते घर पधारने की प्रार्थना की ।

महाराज भी पसीज गए और उन्होंने अगले दिन आने का आश्वासन दे दिया .....

अगले दिन जग्गी महाराज हवेली पर पहुंचे । वहां पहुंचते ही उनको बड़ा अजीब सा अहसास हुआ । वह साधक थे । इसलिए किसी नकारात्मक शक्ति का एहसास उन्हें तत्काल हो गया । अंदर पहुंचे और बच्चे

को देखकर वे समझ गए कि किसी प्रकार का प्रयोग हुआ है । सब देखकर उन्होने महाकाली का अनुष्ठान करने की बात कही । चपला तुरंत तैयार हो गई ।

यह तय हुआ कि 15 दिन का अनुष्ठान जग्गी महाराज के मंदिर में होगा और पूर्णाहुति के समय बच्चे को वहां पर ले जाएंगे ।

षट कर्म और मारण प्रयोग

भोलू के लिए यह एक नई चीज थी .... उसने दूसरों को बीमार करने और नुकसान पहुंचाने के अनुष्ठान तो किए थे ।

लेकिन !

किसी समस्या के समाधान के अनुष्ठान के बारे में उसे ज्यादा जानकारी नहीं थी ।

यह एक बड़ी समस्या आ खड़ी हुई थी । इस प्रकार के अनुष्ठान से सबसे ज्यादा दिक्कत भी उसे ही आने वाली थी । ऐसी स्थिति में उसका हल निकालना भी जरूरी था । जब उसे कुछ समझ में नहीं आया तो उसने उसी रात जग्गी महाराज के ऊपर मारण प्रयोग संपन्न करने का विचार किया ।

तंत्र में छह प्रकार के कर्म किए जाते हैं । जिन्हें षटकर्म कहा जाता है । इनके नाम है

1. मोहन
2. उच्चाटन
3. वशीकरण
4. विद्वेषण

5. मारण तथा
6. शांति ।

इसे आप विपरीत प्रकार की जोड़ियां समझ सकते हैं अर्थात एक कर्म दूसरे कर्म का विपरीत या उसको शांत करने वाला कर्म है....

पहला कर्म है मोहन जिसका मतलब होता है कि किसी व्यक्ति को आकर्षित करना । इसका विपरीत कर्म है उच्चाटन । जिसका मतलब है कि किसी व्यक्ति को जो किसी के प्रति आकर्षित है उस आकर्षण को समाप्त करना या संबंधित व्यक्ति के प्रति जो लगाव है उसको समाप्त करके उससे अलग रहने की भावना पैदा करना ।

तीसरे नंबर पर है वशीकरण । इसका मतलब होता है कि किसी स्त्री या पुरुष को पूरी तरह से अपने वश में कर लेना । यह एक ऐसी स्थिति होती है जहां संबंधित स्त्री या पुरुष प्रयोग कर्ता के द्वारा कहे गए उचित अनुचित सभी प्रकार के कार्यों को सहज ही मानकर करने लगता है । इसकी काट है विद्वेषण.... विद्वेषण का मतलब होता है - दो व्यक्तियों के बीच में झगड़ा या

विरोध खड़ा कर देना । ऐसी स्थिति में वह दोनों व्यक्ति आपस में बेवजह उलझते या लड़ते झगड़ते रहते हैं ।

पांचवें नंबर पर आता है मारण प्रयोग । यह षटकर्म में सबसे कठिन और सबसे जटिल क्रिया होती है । इसे करने वाला साधक साधनात्मक रूप से काफी प्रबल होना चाहिए । अधिकांश मारण की क्रियाएं श्मशान में ही संपन्न की जाती है । इन क्रियाओं में अघोरी तथा वाममार्गी साधक ज्यादा प्रबल और सक्षम होते हैं । मारण क्रियाओं में बली की क्रिया भी संपन्न की जाती है । मारण क्रियाएं शमशान की तामसिक शक्तियां ही संपन्न करती है । दूसरे अर्थों में कहें तो कोई तामसिक आत्मा इस प्रकार के प्रयोग में निमित्त बनकर संबंधित व्यक्ति को समाप्त करने के लिए जाती है । मारण प्रयोगों को मुठ भी कहा जाता है ।

मारण प्रयोग करने वाला साधक इस प्रकार के प्रयोगों को जब करता है तो उसमें दो ही स्थिति हो सकती है । या तो वह व्यक्ति जिसे लक्ष्य करके मारण प्रयोग संपन्न किया गया है वह समाप्त हो जाएगा अगर ऐसा

नहीं हुआ तो जिस व्यक्ति ने प्रयोग किया है वह व्यक्ति समाप्त हो जाएगा ।

यह दो प्रकार से संभव है । पहला जिस व्यक्ति पर प्रयोग किया गया है वह स्वयं उच्च कोटि का साधक हो । दूसरा उसकी रक्षा के लिए कोई उच्च कोटि का साधक सामने आ जाए और मारण प्रयोग को वापस लौटा दे । ऐसी स्थिति में प्रयोग करने वाले साधक की मृत्यु निश्चित है । जिस तामसिक शक्ति को इस कार्य में लगाया जाता है वह साध्य या फिर प्रयोगकर्ता का जीवन नष्ट करके ही छोड़ती है । इस प्रकार के प्रयोगों को करने से अधिकांश साधक बचते हैं ।

किसी भी व्यक्ति का मारण प्रयोग संपन्न करने से ब्रह्म हत्या का पाप भी लगता है । इसलिए ऐसे प्रयोग बेहद जटिल और असाध्य स्थितियों में ही किए जाते हैं ।

मारण प्रयोग सात्विक प्रवृत्ति के लोगों, मंत्र साधना करने वाले व्यक्तियों तथा निर्दोष लोगों पर सामान्यतः

बहुत प्रभावी नहीं होते हैं । फिर भी उनको परेशानियां जरूर पैदा होती है ।

मारण प्रयोग की काट है छठवां कर्म अर्थात शांति कर्म । शांति कर्म के द्वारा साधक किसी व्यक्ति की कुंडलीगत, दैहिक, दैविक, आध्यात्मिक या पैतृक दोष या प्रयोग के निवारण के लिए कर्मकांड करता है तथा संबंधित व्यक्ति के जीवन की रक्षा का प्रयास करता है ।

उच्च कोटि के साधक किसी प्रकार के मारण प्रयोग को वापस लौटाने की बजाय उसे शांत भी करने में सक्षम होते हैं । यहां पर मैं यह बता देना जरूरी समझता हूं कि मारण प्रयोग को लौटा देना उसे शांत करने से ज्यादा आसान होता है ।

खैर ....

जैसा की आप लोगों ने पढ़ा ही है कि किसी को नुकसान पहुंचाने वाले प्रयोग करने में भोलू का कोई जवाब नहीं था । वह बचपन से ही इस प्रकार की क्रियाएं लगातार करता रहा । उसे धरमदास बाबा

ने एक से एक प्रक्रियाएं सिखाई जिसकी वजह से वह इस प्रकार की क्रियाओं में सिद्धहस्त तांत्रिक था । वशीकरण क्रिया का एक उदाहरण फुल्ली वाले प्रकरण में आप पढ़ चुके हैं ।

जग्गी महाराज पर प्रयोग

उसने तय कर लिया था कि मारण प्रयोग करना है । मारण प्रयोग के दौरान बली जैसी क्रियाएं भी संपन्न करनी होती है । इसके अलावा भी कभी-कभी तामसिक शक्तियों के आगमन से अजीब अजीब घटनाओं के होने की संभावना रहती है । इन सबके चलते भोलू के लिए मारण प्रयोग हवेली में रहकर सम्पन्न करना लगभग नामुमकिन था । इसे ध्यान मे रख उसने अपनी गुप्त गुफा में जाने का फैसला किया ।

अपने चंपा को गुफा में जाने की बात बताई और रात के लगभग दस बजे वह हवेली से चुपचाप निकल गया और अपनी गुफा की ओर चल पड़ा ।

गुफा में पहुंचने के बाद उसने अपनी प्रक्रिया प्रारंभ किया । थोड़ी ही देर में गुफा का वातावरण भयानक होने लगा । उसका देवता जागृत हो चुका था । पत्थर अपनी जगह पर कंपन्न करने लगा और उसमें दरार खुलने लगा ।

भोलू ने अपने साथ लाए हुए काले मुर्गे को एक झटके में काट दिया और उसके कटे सिर को उस पत्थर के देवता के सामने रख दिया और धड़ को उसके मुंह से लगा दिया । ऐसा लग रहा था जैसे वह उस मुर्गे के भीतर से पूरा खून चूस गया हो । इसके बाद उसने उस रक्त हीन मुर्गे को हवा में उछाल दिया । ऐसा लगा जैसे कोई उसे लपकने को तैयार खड़ा था । वह उसे लेकर गायब हो गया ।

थोड़ी देर में लगभग तीन फुट ऊंचाई की एक काली धूए जैसी आकृती सामने खड़ी हुई .....

भोलू ने खप्पर मे मदिरा डालकर उसके सामने बढ़ाया । कुछ ही क्षणों मे वह खाली हो गया । इस तरह चार बार उसने पात्र भरा । चौथी बार जब पात्र खाली हुआ तो ऐसा लगा कि वह शक्ति तृप्त हुई ... एक हुंकारे की आवाज आई । जैसे आदेश का पालन करने की सहमति प्रकट की हो ।

उस आवाज को सुनते ही मुर्गे के कटे सिर को भोलू ने उस मदिरा पात्र मे रख दिया । उस पात्र को देसी मदिरा

से भर दिया । कुछ ही क्षणों में वह मदिरा का पात्र जिसमें मुर्गे का कटा हुआ सिर रखा था वह खाली हो गया । देखकर ऐसा लगा जैसे वह मुर्गी का सिर पूरे द्रव को पी गया । उस पात्र को भोलू ने फिर से मदिरा से भर दिया । इस बार पात्र पूरा खाली नहीं हुआ । आधा पात्र मदिरा से भरा रहा जिसमें वह मुर्गे का सिर आधा डूबा हुआ पड़ा था ।

उसके बाद भोलू ने उस आकृति को आदेश दिया - जा जग्गी महाराज को समाप्त कर दे ।

वह आकृति उस कटे हुए मुर्गे के मूँड मे समा गयी । उस मुर्गे की आंखें अचानक चमकी .....

ऐसा लगा ... जैसे उसके अंदर उस शक्ति ने प्रवेश कर लिया हो । इसके बाद भोलू ने उस पात्र को अपने दोनों हाथ से उठाया और अपने सर के ऊपर रख कर कुछ मंत्र पढ़ने लगा । मंत्र समाप्त होते ही वह पात्र जिसमे मुर्गे का कटा हुआ सिर था , हवा में ऊपर उठ गया और सनसनाता हुआ वहां से बाहर निकल गया । बाहर

निकल कर वह आसमान की ओर ऊंचा उठ गया और जग्गी महाराज के गांव की दिशा में चल पड़ा ।

इधर गांव में रात को जग्गी महाराज शौच के लिए नदी की ओर गए हुए थे । कल के अनुष्ठान की तैयारी करनी थी, लेकिन अचानक दस्त लग गए थे । तीसरी बार मैदान जाना पड़ा था । वह अभी शौच कर ही रहे थे तभी उन्हें आभास हुआ कि उनकी और कोई प्रयोग आ रहा है ।

आसमान में देखने पर उन्हें कुछ चमकती हुई सी चीज दूर से आती हुई दिख रही थी .....

वे तुरंत समझ गए कि यह मारण प्रयोग है ...

वह जिस स्थिति में थे । उस स्थिति में उनके लिए प्रयोग करना संभव नहीं था और शुद्ध होने के लिए वक्त नहीं था .....

भोलू का मारण पात्र उनके सिर के ऊपर लगभग बीस फूट की ऊंचाई पर आकार घूमने लगा । मारण प्रयोग लगभग उनके पास तक आ चुका था । उन्होंने अपने इष्ट

देवताओं को याद किया तब तक सर के ऊपर वह पात्र गोल-गोल घूमता हुआ अचानक एक धमाके के साथ टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया । उसके बाद मुर्गे का वह मुंड सीधा उनकी छाती से टकराया .....

ऐसा लगा जैसे जग्गी महाराज के सुरक्षा चक्र को भेदने में उसकी शक्ति का काफी हिस्सा नष्ट हो गया हो ।

जैसे ही वह मुर्गे का सिर उनकी छाती से टकराया वह सिर उनसे 10 फुट दूर उछल गया और फिर टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया । उसके साथ ही महाराज को भी जोरदार झटका लगा और वह लगभग दस फुट दूर जाकर गिरे । ऐसा लगा जैसे किसी ने उन्हें उठा कर फेंक दिया हो । जमीन पर गिरते ही वे झटके से पीछे की ओर लुढ़क गए और बेहोश हो गए ।

भोलू का यह प्रयोग अत्यंत प्रभावशाली प्रयोग था, यदि कोई सामान्य व्यक्ति होता तो वह मुर्गी का मुंड सीधे उसके सीने में धंस जाता । उसके शरीर का पूरा खून चूस लेने के बाद ही उसको छोड़ता । जिसके प्रभाव से वही उसकी मृत्यु हो जाती । जग्गी महाराज साधक

थे और उनकी साधना की शक्तियों ने उस प्रहार को झेलकर उनकी प्राण रक्षा की ।

अगले दिन सुबह गांव वालों ने देखा कि जग्गी महाराज अर्धनग्न अवस्था में बेहोश नदी के किनारे पड़े हुए हैं । उनको उठाकर उनके कमरे तक पहुंचाया गया । वैद्यराज को बुलाया गया उसने आते ही बताया कि जग्गी महाराज को लकवा मार चुका है .....

उनकी जबान अस्पष्ट हो चुकी थी । सारा शरीर लगभग निष्क्रिय हो चुका था .... जग्गी महाराज की साधनात्मक शक्ति की वजह से भोलू का मारण प्रयोग उन्हें मार तो नहीं सका लेकिन शारीरिक रूप से उनको अपंग अवश्य कर गया .....

इस घटना के बाद हर किसी को यह समझ में आ गया कि घर में किसी प्रकार की गंभीर तांत्रिक बाधा अवश्य है । जिस के निराकरण की व्यवस्था नहीं की गई तो सब कुछ गड़बड़ हो सकता है ।

तांत्रिकों की खोज चालू हो गई । इधर जग्गी महाराज के साथ घटी हुई घटना के बाद कोई भी स्थानीय

तांत्रिक उस हवेली की तरफ आने से बचने की कोशिश करने लगा । महाराज छत्तीसगढ़ के पहुंचे हुए तांत्रिकों में से एक माने जाते थे । उनकी अवस्था को देखकर बाकी तांत्रिक सहम चुके थे ।

मंत्र पूरा हो जाने के बाद उसने सर्प की आंखों में आंखें डाल कर उसे निर्देश दिया कि वह जाकर विनोद को डस ले । वह सर किसी आज्ञाकारी सेवक की तरह वहां से चला गया ।

विनोद अपने कमरे मे सो रहा था । अचानक उसके कमरे में वह सर्प प्रकट हुआ । उसने विनोद को कान पर डस लिया । उसके काटते ही विनोद जोर से चीखा । पास ही सोई हुई चपला ने विनोद की चीख सुनकर हड़बड़ी में लालटेन की लौ बढ़ाई और उसे वह साँप दिखाई दे गया । उसने देखा कि विनोद के बाएं कान की लौ के पास खून की बूंद दिख रही है । उस साँप ने विनोद को वहीं पर काटा था । ऐसा माना जाता है कि अगर सांप कान पर काट ले, तो उसे बचा पाना नामुमकिन होता है , संभवत इसकी वजह कान का मस्तिष्क के पास होना भी हो सकता है ।

तुरंत आसपास के जहर उतारने वाले बैगाओं को बुलाया गया .....

मंत्र पूरा हो जाने के बाद उसने सर्प की आंखों में आंखें डाल कर उसे निर्देश दिया कि वह जाकर विनोद को डस ले । वह सर किसी आज्ञाकारी सेवक की तरह वहां से चला गया ।

विनोद अपने कमरे मे सो रहा था । अचानक उसके कमरे में वह सर्प प्रकट हुआ । उसने विनोद को कान पर डस लिया । उसके काटते ही विनोद जोर से चीखा । पास ही सोई हुई चपला ने विनोद की चीख सुनकर हड़बड़ी में लालटेन की लौ बढ़ाई और उसे वह साँप दिखाई दे गया । उसने देखा कि विनोद के बाएं कान की लौ के पास खून की बूंद दिख रही है । उस साँप ने विनोद को वहीं पर काटा था । ऐसा माना जाता है कि अगर सांप कान पर काट ले, तो उसे बचा पाना नामुमकिन होता है , संभवत इसकी वजह कान का मस्तिष्क के पास होना भी हो सकता है ।

तुरंत आसपास के जहर उतारने वाले बैगाओं को बुलाया गया .....

लेकिन .... कोई भी उसकी स्थिति में सुधार नहीं ला सका । वह अगले दिन सुबह भोर फटने के साथ ही मौत की नींद सो गया । इस वज्रपात के बाद चपला की स्थिति किसी विक्षिप्त जैसी हो गई ।

उस समय उसके दूसरे बेटे चम्पक ने पूरा कामकाज संभाला । अब एक तरह से जिम्मेदारी की पूरी बागडोर उसी के हाथ में आ गई थी । उसको भोलू का सहयोग मिलता रहता था, जिसकी वजह से वह जल्दी ही पूरा काम सीख गया । चपला धीरे धीरे संभलने लगी थी और उसकी हालत में थोड़ा सुधार होने लगा था । वह खुश थी कि उसका दूसरा बेटा पूरा कारोबार संभालने के काबिल हो गया है .....

लेकिन ! दुष्यंत चंद्राकर अपने जीवन में बहुत सारे झटके सहन कर चुका था । सबसे पहले युवावस्था में उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी । उसके बाद उसकी प्रेमिका जुगनी और उसका बच्चा दोनों अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गए थे । इन सब ने उसे पहले ही बेहद कमजोर बना दिया था । अपने युवा पुत्र की मौत के सदमे को

वह बर्दाश्त नहीं कर पाया । जिसके चलते साल भर के अंदर उसकी मौत हो गई .....

चपला अंदर ही अंदर बुरी तरह से टूट चुकी थी उसे अपनी जिंदगी बोझ लगने लगी थी । भोलू की तांत्रिक क्रियाओं के परिणाम स्वरूप उसके शरीर मे सफ़ेद दाग उभरने लग गए थे ।

चम्पक अब 16 साल का हो चुका था । साल भर के अंदर वह लगभग सारे काम सीख गया था । चपला ने उसकी शादी करवा दी । भोलु का परिवार भी बड़ा हो गया था । उसके घर में भी एक बेटा आ चुका था । उसने अपनी पत्नी चम्पा को भी कुछ विद्याएँ सीखा दी थी ।

कुएं मे स्थापित प्रयोगों के सक्रिय रहने के लिए यह जरूरी था कि उस कुएं के अंदर स्थित समग्रियों का साल मे एक बार जागृत किया जाये । इसके लिए तीन घंटे तक उस कुएं के पास निर्वस्त्र बैठकर जाप करना जरूरी था । यह कार्य भोलू के परिवार का ही कोई व्यक्ति कर सकता था । इसलिए उसने यह विधि भी

चम्पा को सीखा दी थी । प्रयोगों को दो साल हो चुके थे ।

चपला की पूरी देह पर सफेद दाग अपना घर बना चुके थे ....

वह शर्म और संकोच के मारे घर से बाहर नहीं निकलती थी । सारे समय अपने कमरे में ही पड़ी रहती । चपला की दुर्गति देख कर भोलू भी संतुष्ट था ।

भोलू ने अपना बदला ले लिया था । इसलिए वह भी निश्चिंत हो गया था, और अपने परिवार में रमा हुआ था ....

पलटवार

भोलू निश्चिंत हो गया था !

लेकिन .....

किसी भी साधक के लिए निश्चिंत हो जाना !

विशेष रूप से अभिचार कर्म करने वाले साधक के लिए ! बेहद खतरनाक हो सकता है ....

इसे अगर मैं सामान्य भाषा में कहूं तो सामाजिक व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले जिन्हें हम डॉन या डकैत कहते हैं , उनको हर पल सावधान रहना पड़ता है । क्योंकि जिस प्रकार के कर्म हुआ करते हैं उनके शत्रुओं की संख्या भी उतनी ही ज्यादा होती है और कोई भी शत्रु ! किसी भी समय ! किसी भी दिशा से ! किसी भी तरह से ! वार कर सकता है । इसलिए उनको हर समय सावधान रहना पड़ता है ।

अभिचार करने वाले किसी साधक के लिए इस प्रकार की चूक बहुत भारी पड़ सकती थी ....

यही भोलू के साथ भी होने वाला था ....

जग्गी महाराज लकवा ग्रस्त अवस्था में पड़े हुए थे । उन्हें उस हालत मे लगभग 2 साल से ज्यादा समय हो चुका था । वह थोड़ा बहुत बोलने लगे थे, लेकिन सामान्य नहीं हो पाए थे । मंदिर की देखभाल के लिए एक महिला थी । जिसका नाम दमयंती था । दमयंती लगभग 40 साल की महिला थी । वह पहले मंदिर की साफ-सफाई तथा अन्य कार्य किया करती थी जग्गी महाराज के लकवा ग्रस्त होने के बाद से वह उनकी देखभाल भी किया करती थी ।

इसकी कहानी भी बड़ी विचित्र थी । लगभग दस साल पहले वह भटकते भटकते जग्गी महाराज वाले गाँव मे आई थी । वह प्रेत बाधा से ग्रस्त होने के कारण विचित्र प्रकार की हरकतें करती थी और उसे घर वालों ने घर से निकाल दिया था । उसकी हरकतों की वजह से लोग उसे पगली बुलाया करते थे । उस पर बीच-बीच में प्रेत का आवेश आ जाता । जब भी यह आवेश आता उस समय उसकी हरकतें बड़ी विचित्र हुआ करती थी ।

उसकी ताकत इतनी बढ़ जाती थी कि चार चार लोगों के रोकने पर भी वह नहीं रुकती थी ।

हाथ में डंडा लेकर हर दिखने वाले व्यक्ति को दौड़ा कर मारना उसका प्रिय कार्य था । धुले हुए कपड़ों को धूल फेंककर गंदा कर देना और किसी के भी घर के सामने जाकर शौच कर देना इसका रोज का काम था । गांव वाले उससे बुरी तरह तंग आ चुके थे । अंत में उसकी इन हरकतों से परेशान होकर उन्होंने उसे ले जाकर जंगल में छोड़ दिया ।

जग्गी महाराज का खेत और मंदिर गांव के आखिरी छोर पर था । उसके बाद जंगल चालू हो जाता था । जिस दिन गांव वालों ने उस पगली को जंगल में ले जाकर छोड़ा उस दिन महाराज दूसरे गांव में कथा बांचने गए हुए थे । वह रात को वापस घर लौटे थे । इसलिए उन्हें दिन में घटी हुई घटनाओं की जानकारी नहीं थी ।

उसी रात को जग्गी महाराज को स्वप्न में उसे बचाने का निर्देश हुआ । जग्गी महाराज की समझ में नहीं आया कि वह कौन है । अगले दिन उन्होंने गांव के किसी

आदमी से चर्चा की । तब पता चला कि गांव वालों ने उस पगली को जंगल में ले जाकर छोड़ दिया है ।

जग्गी महाराज समझ गया कि रात का निर्देश उसी पगली के लिए है । वह जंगल की ओर चल पड़े जंगल में उन्हें वह पगली मिल गई । उसे देखते जग्गी महाराज को समझ में आ गया कि वह प्रेत बाधा से त्रस्त है । साधनात्मक रूप से और शारीरिक रूप से उस समय वह बेहतर स्थिति में थे ।
उनकी साधना भी अच्छे स्तर पर चल रही थी । वह उसे लेकर अपने काली मंदिर में आ गए । वहां जाकर उन्होंने ने तांत्रिक शक्तियों के द्वारा उसे उस प्रेत से मुक्त करा दिया था ।

जाने के लिए कोई आसरा ना होने की वजह से वह मंदिर में ही ठहर गयी तथा उसकी साफ-सफाई तथा अन्य व्यवस्था करने लगी । इससे जग्गी महाराज को भी मदद हो जाती थी । लकवा मार जाने के बाद उसी महिला ने जग्गी महाराज की देखभाल की ।

जग्गी महाराज की संगत में रहते रहते वह थोड़ा बहुत पूजा पाठ सीख गई थी । जग्गी महाराज के बीमार पड़ जाने के बाद जितना उसे आता था उस हिसाब से वह काली मंदिर में पूजन भी करती थी ।

इधर जग्गी महाराज को यह पता चल चुका था कि उन पर मारण प्रयोग भोलु ने संपन्न किया था । अपनी दयनीय अवस्था से वह बेहद परेशान थे । वे दिन रात महाकाली से यही प्रार्थना करते थे कि वह उन्हें मुक्ति दे दे या फिर इतनी सक्षमता प्रदान कर दें कि वह भोलू को उसके किए का दंड दे सकें ।

कृत्या

भगवती महाकाली अत्यंत कृपालु है और वह अपने भक्तों और साधकों के लिए कोई न कोई मार्ग अवश्य प्रदान करती है । यह बात जग्गी महाराज भी जानते थे ।

जिस अवस्था में जग्गी महाराज पर आघात हुआ था वह अकारण था ... क्योंकि उन्होंने भोलू का कोई अहित नहीं किया था..... वे शारीरिक रूप से अक्षम हो चुके थे इसलिए किसी प्रकार का प्रयोग करना उनके लिए संभव नहीं था । उनकी पीड़ा को पगली दमयंती अच्छी तरह से समझती थी । जब जग्गी महाराज कुछ कुछ बोलने लायक हो गए तो एक दिन उन्होंने दमयंती को अपने ऊपर हुए प्रयोग के बारे में बताया । जिसे सुनकर दमयंती अत्यंत क्रोधित हुई और उसने जग्गी महाराज को कोई ऐसा उपाय करने को कहा जिससे भोलू को उसके किए की सजा मिले ।

उन्होने दमयंती से कहा - वह बड़ा ही शक्तिशाली साधक है और उसकी काट सिर्फ कृत्या साधना ही कर सकती है । तंत्र साधना में सबसे प्रचंड साधना जो मारण प्रयोगों मे प्रयुक्त होती है, उसे कृत्या साधना

कहते हैं । यह भगवान शिव की शक्ति मानी जाती है और इसकी काट सिर्फ वही कर सकता है जिसे स्वयं कृत्या सिद्ध हो । अन्य कोई भी साधना इसके आगे नहीं टिकती है ।

कृत्या साधना का प्रयोग भगवान शिव ने प्रजापति दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करने के लिए किया था । इस संबंध में कथा है कि देवी सती के पिता प्रजापति दक्ष ने एक यज्ञ का आयोजन किया । जिसमें संपूर्ण देवी देवताओं को बुलाया गया था । भगवान शिव से विद्वेष की वजह से उन्होंने भगवान शिव और देवी सती दोनों को नहीं बुलाया....

कैलाश पर्वत पर विराजमान सती ने जब देवलोक के देवताओं को अपने-अपने वाहनों पर बैठकर प्रजापति दक्ष के निवास की ओर जाते हुए देखा तो उनसे इसका कारण पूछा । जब उन्हें यह पता चला कि उनके पिता प्रजापति दक्ष यज्ञ का आयोजन कर रहे हैं तो वह यज्ञ में शामिल होने के लिए आतुर होने लगी । उन्होंने भगवान शिव से इस संबंध में निवेदन किया । भगवान शिव ने स्पष्ट कहा कि जब हमें आमंत्रण नहीं मिला है

तो हमें नहीं जाना चाहिए । देवी सती नहीं मानी और जिद करके भगवान शिव की अनुमति लेकर अकेले ही प्रजापति दक्ष के यज्ञ में शामिल होने के लिए चली गई ।

यज्ञ स्थल पर पहुंचने पर पिता दक्ष का व्यवहार बहुत ज्यादा सम्मानजनक नहीं था जिसे देखकर सती को थोड़ी सकूचाहट भी हुई .....

अपने आने के निर्णय पर थोड़ा पश्चाताप भी हुआ.....

फिर उसने जब यज्ञ स्थल पर जाकर देखा तो सारे देवी देवताओं की वेदियां बनी हुई थी .....

लेकिन !

भगवान शिव के लिए वेदी नहीं बनी थी । जबकि उनके वेदी के बिना कोई भी यज्ञ पूर्ण नहीं हो सकता था । वहां उपस्थित सारे देवी-देवताओं और ऋषियों से उन्होंने इस संबंध में प्रश्न पूछा - आप लोग ऐसे यज्ञ में कैसे सम्मिलित हो रहे हैं जिसमें देवाधिदेव शिव का स्थान नहीं रखा गया है ?

इस पर प्रजापति दक्ष सती पर क्रोधित हो गए और उन्होंने उनसे स्पष्ट शब्दों में कहा कि तुम बिना निमंत्रण के यहां पर आई हो । अगर रहना चाहती हो तो शांति से रुको । अन्यथा यज्ञ स्थल छोड़कर जाने के लिए तुम स्वतंत्र हो.....

इसके अलावा उन्होंने भगवान शिव पर अपमानजनक टिप्पणियां भी की । कहा - वह अवघड नंगे बदन घूमने वाला भस्म लगाने वाला सम्मान का पात्र कैसे हो सकता है ?
इतना सुनते ही सती अत्यंत क्रोधित हुई और उन्होंने अपनी योगाग्नि प्रज्वलित करके स्वयं को यज्ञ कुंड में ही जला दिया ।

इसे देखकर यज्ञ स्थल पर हाहाकार मच गया । जब इस घटना की सूचना भगवान शिव के पास पहुंची तो उन्होंने अपनी जटा को खोल दिया । विध्वंस मुद्रा में आकर अपनी विध्वंसक शक्ति कृत्या को प्रकट कर दिया और उसे आदेश दिया कि यज्ञ का संपूर्ण विध्वंस कर दो ।

कृत्या ने संपूर्ण देवी देवताओं समेत उस यज्ञ स्थल को मटियामेट कर दिया । यहां तक कि वहां उपस्थित ऋषि गण भी उसकी शक्ति का सामना नहीं कर पाए और तितर-बितर होकर इधर-उधर भागने लगे । उसके बावजूद कोई भी उस कृत्या के प्रकोप से बच नहीं पाया ।

प्रजापति दक्ष के शीश का खंडन करके ही वह कृत्या शांत हुई ।

ऐसी प्रचंड शक्ति का नाम है कृत्या....

जो कृत्या सिद्ध कर लेता है, उसके सामने कोई भी अभिचार कर्म हाथी के सामने चींटी की तरह का हो जाता है ।

जो कृत्या साधक पर किसी प्रकार का अभिचार कर्म करता है वह स्वयं अपनी ही मृत्यु को आमंत्रण देता है ।

दमयंती ने उत्तेजित होकर कहा - फिर आप वह साधना कर डालिए । उस दुष्ट को उसके किए की सजा मिलनी ही चाहिए....

जग्गी महाराज बोले - मेरा शरीर जर्जर हो चुका है और उसकी स्थिति ऐसी है की वह इस प्रकार के साधना के तेज को सहन नहीं कर सकता ।

दमयंती ने पूछा - क्या मैं यह साधना कर सकती हूँ ?

वह बोले - बेटा , दमयंती ! कृत्या साधना बेहद उग्र साधनाओं में गिनी जाती है । इसे करने के लिए बेहद साहसी और मजबूत हृदय वाले साधक की आवश्यकता होती है । साधना काल के दौरान अत्यंत भयानक दृश्य और घटनाएं घटित होती रहती हैं । जिससे साधक विचलित होकर साधना बीच में छोड़ दे तो उसके अंदर भी मानसिक विचलन पैदा हो सकता है और वह भी पागल हो सकता है ।

दमयंती बोली - महाराज मैं तो पहले ही पगली हूँ और क्या पागल होंऊगी । रही डरने की बात । तो जिंदगी में इतना कुछ देख चुकी हूं कि अब डरने जैसा तो कुछ बाकी रहा ही नहीं है । अगर मैं इस साधना को कर सकती हूं तो आप मुझे विधि बताओ । मैं इसे जरूर करूंगी । आपने मुझे नया जीवन दिया है । आपके लिए

अगर मैं कुछ कर पाऊं तो यह मेरा सौभाग्य होगा । जिस व्यक्ति ने आपकी यह दुर्गति की है उसको दंडित करने में किसी प्रकार का सहयोग कर पाई तो उसके लिए मैं अपने आपको बेहद भाग्यशाली समझूंगी ।

महाराज पुरानी सोच के आदमी थे । उनको ऐसा लगता था कि कोई स्त्री साधना नहीं कर सकती है । खासतौर से इस प्रकार की कठोर साधनाएं तो बिल्कुल नहीं ....

इसलिए वह थोड़ा झिझक गए और उन्होंने मौन धारण कर लिया । दमयंती उनका आशय समझ गई इसलिए उसने आगे कुछ नहीं कहा ।

उस रात स्वप्न में भगवती ने उन्हें दर्शन दिए और कहा - वह भी शक्ति का अंश है । तुझे क्या लगता है । वह शक्ति को धारण नहीं कर पाएगी ??

इतना कहकर वह लुप्त हो गई....

जग्गी महाराज रात भर इस पर सोचते रहे । उनकी समझ में यह बात आ गई कि भगवती का संकेत वास्तव में दमयंती की तरफ ही है... संभवतः के अभीष्ट की

सिद्धि का माध्यम वही बनने वाली है रात भर का मंथन और भगवती का संकेत सब मिलाकर वह सुबह तक नतीजे पर पहुंच चुके थे ।

अगले दिन उन्होंने अपने पुराने पोथी पत्रे बाहर निकाले । उसमें उनके गुरु के द्वारा दी हुई कृत्या साधना की विधि विधि उन्होंने ढूंढ निकाली ।

तीन दिन के बाद अमावस्या थी । अमावस्या की रात्रि सबसे पहले उन्होंने दमयंती को गुरु दीक्षा प्रदान की । साधना की विधि भी समझाइ । यह साधना अमावस्या के दिन प्रारंभ होकर अगली अमावस्या पर समाप्त होनी थी । पूरे साधना काल में मौन धारण करना था तथा मंत्र जाप के अलावा किसी भी व्यक्ति से किसी भी प्रकार का वार्तालाप करना निषिद्ध था आवश्यकता पड़ने पर संकेतों से बात की जा सकती थी ।

साधना बेहद कठोर थी लेकिन दमयंती भी दृढ़ निश्चय महिला थी । दमयंती लगभग आधी रात को साधना पर बैठ जाती और सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उसकी साधना

पूरी होती । इस दौरान वह नित्य कृत्या साधना के मंत्र की 108 मालाओं का जाप करती ।

साधना काल की विभिन्न प्रकार की भयभीत करने वाली घटनाओं के साथ रुबरु होते हुए उसकी साधना आगे की ओर बढ़ रही थी । सबसे कठिन बात यह थी कि वह अपने साथ घटने वाली घटनाओं को बता भी नहीं सकती थी क्योंकि पूरी साधना काल के दौरान मौन धारण करना भी अनिवार्य था । भगवती के परीक्षणों का सामना करते हुए उसकी साधना आगे बढ़ती रही और अमावस्या को 2 दिन शेष रह गए थे ।

भोलु काफी दिनों से अपनी गुफा की ओर नहीं गया था । अचानक उस दिन उसे ऐसा लगा कि गुफा की ओर जाना चाहिए और इस अमावस्या को वहीं पर साधना करनी चाहिए । अचानक मन में उठे इस विचार को उसने एक संकेत की तरह लिया और अमावस्या के दिन गुफा में जाने का मन बनाया ।

अमावस्या : संहार की रात

दो दिन और गुजरे और अमावस्या की रात भी आखिर आ ही गई ।

दमयंती का साधना का वह आखिरी दिन था । सामने चौकी पर अलग-अलग चीजें रखी हुई थी । एक थाल में एक पानी वाला नारियल रखा हुआ था । पानी वाला वह नारियल लक्ष्य का प्रतीक था । जिस व्यक्ति को लक्ष्य करके वह प्रयोग किया गया है , उसकी मृत्यु होते ही हुआ नारियल अपने आप फट जाता और प्रयोग करने वाले व्यक्ति को अपने प्रयोग की सफलता का पता चल जाता ।

अमावस्या के दिन जब भोलु अपनी गुफा में पहुंचा तो उसके गुफा में पहुंचते ही देवता की भयानक आवाज गूंजी - अपनी रक्षा की व्यवस्था कर ! आज की रात तेरे लिए बहुत मुश्किल होने वाली है !

यह भोलु के लिए अनहोनी स्थिति थी क्योंकि वह अपने आप को सर्व शक्तिशाली मानने लगा था । अपने जागृत देवता के द्वारा इस प्रकार की चेतावनी को सुनकर उसके अंदर घबराहट आने लगी । लेकिन

उसने अपनी घबराहट पर नियंत्रण किया और चेतावनी पर गौर करके उसके निराकरण का उपाय निकालने के विषय में सोचने लगा ।

अर्ध रात्रि आने को थी और उसने अपने साधन बल से यह जान लिया था कि जग्गी महाराज के तरफ से प्रयोग होने वाला है । उसने भी मारण प्रयोग की व्यवस्था प्रारंभ कर ली । उसे सामने रखे हुए मारण पात्र में रखी हुई मदिरा में जग्गी महाराज की छवि दिखाई दे रही थी ।

मंत्र जाप करते करते अचानक उसका माथा ठनका । पात्र में जगी महाराज के साथ-साथ एक स्त्री की छवि भी दिखाई दे रही थी । वह दमयंती की छवि थी । यह एक अनहोनी स्थिति थी । उसने जग्गी महाराज को लक्ष्य करके मारण प्रयोग प्रारंभ किया था लेकिन वास्तव में उसके पास दो लक्ष्य थे और दोनों को आज की रात उसे समाप्त करना ही था अन्यथा उसकी जान खतरे में पड़ जाती । जग्गी महाराज के लिए प्रारंभ किया हुआ उसका मारण प्रयोग लगभग आधा हो चुका

था । उसने यह तय किया कि पहले जग्गी महाराज को निपटा जाए फिर उस महिला को देखेंगे ।

यहीं पर भोलू चूक कर गया । उसने उस महिला को कमजोर समझने की गलती की । जबकि साधना के जगत में महिला तंत्र साधिकाओं की शक्ति बहुत प्रबल हुआ करती है ।

उसका मारण प्रयोग पूरा हुआ । मारण पात्र पहले की तरह फिर से सनसनाता हुआ गुफा से बाहर निकला और जग्गी महाराज की तरफ बढ़ गया । जग्गी महाराज के पास पहुंचकर पुनश्च वह मारण पात्र उसी प्रकार से घूमने लगा । अंत में मुर्गे का वह मुंड निकलकर जग्गी महाराज के सीने में जाकर चिपक गया और उसने जग्गी महाराज के शरीर का पूरा खून चूस लिया । थोड़ी देर में उनका निर्जीव शरीर बिस्तर पर पड़ा हुआ था.....

जग्गी महाराज के पास पहुंचकर पुनश्च वह मारण पात्र उसी प्रकार से घूमने लगा । अंत में मुर्गे का वह मुंड निकलकर जग्गी महाराज के सीने में जाकर चिपक गया और उसने जग्गी महाराज के शरीर का पूरा खून चूस लिया । थोड़ी देर में उनका निर्जीव शरीर बिस्तर पर पड़ा हुआ था.....

इधर दमयंती का मंत्र जाप अपने आखिरी दौर में था ....

रुद्राक्ष की माला से उसका मंत्र जाप जारी था...

काले रंग के वस्त्र धारण करके लाल सुर्ख रंग का कुमकुम का टीका माथे पर लगा कर वह अपने आसन पर किसी देवी की तरह बैठी हुई थी ....

उसका गोरा मुख मंडल तप के तेज से चमचमाता हुआ दिखाई दे रहा था । सामने जलता हुआ सरसों के तेल का चौमुहा दीपक भभककर जल रहा था । ऐसा लग रहा था जैसे कुछ विचित्र घटित होने वाला हो ।

उस दीपक की लौ अचानक से भभक कर आग के गोले जैसी हो जाती !

फिर सामान्य हो जाती !

कभी लंबी होती हुई छत पर पहुंच जाती !

फिर सिमट जाती .....

ऐसा ही उसकी लो नृत्य कर रही थी ....

सामान्यतः साधकों की आंखों में इतनी शुद्धि नहीं होती है कि वे किसी देवी शक्ति को स्पष्ट देख सकें । उनके होने का आभास वातावरण में भारीपन के आ जाने से या किसी विचित्र प्रकार की सुगंध के आने से या अलग-अलग प्रकार की आवाजों से होता है ।

इन आवाजों में जो आवाज सबसे सामान्य रूप से उग्र साधना में सुनाई देती है , वह है.... किसी महिला के विचित्र ढंग से हंसने की आवाज ।

कई बार यह आवाज भयानक अट्टहास के रूप में लगती है ।

तो ! कभी तीक्ष्ण हंसी के रूप में सुनाई देती है !

यह इस बात का प्रमाण है कि साधक जिस साधना को कर रहा है , उससे संबंधित शक्ति वहां पर अपने सूक्ष्म स्वरूप में उपस्थित है ।

यहां एक बात और है कि साधक कई बार उग्र शक्तियों की साधना करता तो है लेकिन उसका शरीर साधनात्मक रूप से इतना सक्षम नहीं होता कि वह उस शक्ति का स्वरूप देख सके....

ऐसी स्थिति में साधक मृत्यु को भी प्राप्त हो सकता है , इसलिए उसकी इष्ट शक्ति अपने प्रचंड स्वरूप में उसके सामने उपस्थित नहीं होती है । इसकी बजाय वह अपने सूक्ष्म रूप में साधक को उपस्थिति का आभास देती है .....

यदि साधक निरंतर साधना करता रहे । योगिक क्रियाएं करता रहे । शरीर पर नियंत्रण रखता रहे तो एक समय ऐसा भी आता है जब उसके सामने वे शक्तियां अपने स्वरूप में भी प्रकट हो जाती है ।

लेकिन !

उन्हें देख पाना बहुत अद्भुत और दुर्लभ है । इसके पीछे प्रमुख कारण यह है कि गृहस्थ में रहते हुए बहुत कम साधक ऐसे होते हैं जो नियमित रूप से साधनाएं या मंत्र जाप कर पाते हैं ....

बहुत कम साधक ऐसे होते हैं, जो अपनी देह और जिह्वा पर नियंत्रण रख पाते हैं ...

बहुत कम साधक ऐसे होते हैं जो अपनी वासना पर नियंत्रण रख पाते हैं .....

इन सब पर नियंत्रण होने से देह सिद्धि होती है ...

जब देह सिद्धि होती है तभी साधक का शरीर इतना प्रबल प्रचंड और सशक्त होता है कि वह देवीय शक्तियों के आगमन को और उनके दर्शन को प्राप्त कर सके...

उस समय उठने वाली प्रचंड ऊर्जा को अपने शरीर में समाहित करके सामान्य रह सकें....

इसी प्रकार से साधकों को साधनकाल मे जो सबसे ज्यादा अनुभव होते हैं वह किसी प्रकार की सुगंध के रूप में होते हैं । आमतौर पर यह सुगंध विचित्र किस्म के अष्टगंध जैसी होती है । इसके अलावा चमेली के फूलों की गंध भी आती है । कुल मिलाकर यह गंध बेहद मादक और अद्भुत होती है .....

अस्तु .....

रात का समय था ....

अमावस्या की काली रात .....

चारों दिशाओं में गहन अंधकार फैला हुआ था ...

पूरा गांव गहरी नींद में सो रहा था....

दृढ़ निश्चय के साथ दमयंती अपने अंतिम दिन की साधना में लीन थी.....

दमयंती के कमरे का दीपक भभक भभक कर जल रहा था । पूरे कमरे में अजीब सी मादक खुशबू फैली हुई

थी ! कुछ अघटित घटने का सन्देश देते हुए वातावरण में असामान्य परिवर्तन दिखाई दे रहा था.....

उसका मंत्र जाप लगातार जारी था ।

धीरे-धीरे कमरे का वातावरण विचित्र प्रकार के भारीपन से भर चुका था ।
आसमान में बिजली कड़कने लगी थी .....

बेमौसम की बारिश हो रही थी ...

बेहद भयानक और डरावना वातावरण बन चुका था ।
हवा तक भारी होने लगी थी । ऐसा लग रहा था जैसे प्राणवायु कम होती जा रही है ...

तभी ।

अचानक .....

एक विशालकाय विकराल काले रंग की
आकृति .....
जिसके चारों और अद्भुत आभामंडल बिखरा हुआ था .....

वह दमयंती के सामने प्रकट हुई.....

वह आकृति लगभग 10 फुट ऊंची थी । उसके लंबे लंबे बाल पीठ पर बिखर कर नितंबों से नीचे तक आ चुके थे । वे ऐसे लग रहे थे जैसे पतले पतले सांप उस आकृति के सर से नीचे की तरफ चले आ रहे हो ....

जीभ लपलपाती हुई उस विकराल आकृति की आंखें सूर्य की तेजस्विता को मात देने वाली चमक के साथ चमक रही थी । लाल सुर्ख रंग की आंखों को देखने मात्र से ऐसा लगता था , जैसे आग की लपटें निकल रही हों ।

लंबे लंबे दांत बाहर की तरफ निकले हुए थे ....

सारा शरीर किसी सूखे हुए कंकाल की तरह दुबला पतला था । शरीर में मुंडो अस्थियों की माला लटकी हुई थी । कुल मिलाकर सामान्य आदमी अगर उस आकृति को देख ले तो शायद उसकी मृत्यु हो जाए ... इतनी भयानक आकृति थी ...

उस आकृति ने कमरे के अंदर प्रकट होते ही जमीन पर अपने बाएँ पैर से आघात किया । ऐसा लगा जैसे वहां भूकंप का झटका आ गया हो । हड़बड़ा कर दमयंती ने अपनी आंखें खोली और सामने का दृश्य देखकर उसकी रूह तक कांप गई....

सिंह गर्जना जैसी आवाज के साथ उस आकृति ने प्रश्न किया - बोल क्या इच्छा है तेरी ?

भयभीत दमयंती की प्राण आत्मा सब कुछ कांप रही थी .... उसे एक बार देखने के बाद दोबारा नजर उठा कर देखने की हिम्मत तक उसकी नहीं हुई ।

उस आकृति ने दोबारा प्रश्न किया - बोल तू क्या चाहती है ?

बड़ी मुश्किल से डरते डरते उसने दोबारा उस आकृति की ओर देखा....

लेकिन.....

उसकी अग्निशिखा सी जलती हुई आंखों को देख पाना उसके लिए संभव नहीं था । उसने फिर डर कर मुंह झुका लिया और सर झुका कर बैठ गयी ।

तीसरी बार उस आकृति ने पूछा - तूने मुझे प्रसन्न किया है । बोल तेरी क्या इच्छा है ?

अबकी बार दमयंती ने ऊपर देखने की हिम्मत नहीं की । सर झुकाए झुकाए ही कहा - हे माता । आप जग्गी महाराज की इच्छा पूर्ण करो और उनके शत्रु का विध्वंस करो ।

आकृति की गंभीर सिंह गर्जना सी आवाज फिर से आई - प्राण तो तेरे भी संकट में है । तू कहे तो मैं तेरी प्राण रक्षा कर सकती हूँ ।

दमयंती ने कहा - माता । मेरे प्राणों का कोई मोल नहीं है । मैं तो अकारण ही जी रही हूँ । मुझे आश्रय देने वाले जग्गी महाराज पर जिसने भी यह कर्म किया है, उसे उसके किए की सजा मिलनी चाहिए । आप उसकी व्यवस्था करें ।

कृत्या की भयंकर आवाज गूंजी - जैसी तेरी इच्छा.....

इतना सुनते ही अब तक किसी तरह अपने आप को संभालने वाली दमयंती अपने ही आसन पर बेहोश होकर गिर गई ...

कृत्या अपने स्थान के लिए चल चुकी थी और जैसा कि आप लोग जानते हैं , कृत्या का वार अचूक होता है । उसके बाद कोई काट नहीं होती । जिस लक्ष्य के भेदन के लिए कृत्या निकल जाए वह लक्ष्य समाप्त होना अखंड सत्य है ।

कृत्या भोलू की गुफा की दिशा में बढ़ चुकी थी.....

उधर जग्गी महाराज के विध्वंस की सूचना गोलू के पास पहुंच चुकी थी । जग्गी महाराज के बाद भोलू अपने दूसरे शिकार यानी दमयंती के लिए प्रयोग के अंतिम चरण तक पहुंच चुका था । उसने मारण शक्ति को जागृत कर उसे मदिरापान कराया । इस बार लगभग 6 पात्र मदिरापान के बाद संतृप्त हुई । मदिरा पात्र भरकर उसमें मुर्गे के मुंड को उसने स्थापित किया । दो बार पात्र पूरा खाली हो गया । तीसरी बार पात्र भरा का भरा

ही रहा । अपना अंतिम मंत्र जपते हुए मारण पात्र में मदिरा चढ़ाने के बाद उस पात्र को भोलू ने ऊपर उछाल दिया ।

वह पात्र भी अपने लक्ष्य की ओर बढ़ गया.....

वह मारण पात्र गुफा की दरार से होता हुआ बाहर निकला, उसके कुछ ही क्षण के बाद कृत्या गुफा की दरार से अंदर प्रविष्ट हुई .....

भोलू के देवता ने उसे रोकने का प्रयास किया ।

लेकिन ! असफल रहा ।

कृत्या का प्रहार किसी चट्टान के आघात की तरह भोलु के सिर पर जाकर लगा और उसके सिर के हजारों टुकडे होकर बिखर गए । चारों तरफ खून के छींटे बिखर गए । ऐसा लगा जैसे उस गुफा की दीवारों पर खून की होली खेली गई हो ।

उसका सिर कटा धड़ उसी लाल रंग के पत्थर पर गिर पड़ा । उसकी रक्त की धारा उसके आराध्य देवता के चरणों में बहने लगी ।

कृत्या की शक्ति का प्रहार बहुत वजनी चट्टान के प्रहार की तरह होता है ! उसके प्रहार से भोलू का सिर कई टुकड़ों में फट गया ! साथ ही उस गुफा की दीवारे भी टूट गई और थोड़ी देर में भरभरा कर गोलू और उसके देवता के विग्रह के ऊपर गिर गई । उसका पूरा शरीर उन्हीं पत्थरों के ढेर में दब गया । यूं कह लीजिए कि उसकी समाधि सी बन गई । अब उस गुफा का रहस्य और उसके पीछे का तालाब सब कुछ एक अनंत रहस्य चक्र में दफन हो चुका था.....

इस प्रकार से भोलू का अंत हो गया । काले तंत्र के अद्भुत जानकार होने के बावजूद वह भी मृत्यु को प्राप्त हो गया .....

दमयंती के लिए किया हुआ उसका मारण प्रयोग भी पूर्ण हो चुका था । उसका मारण पात्र अपने लक्ष्य की ओर बढ़ चुका था । मारणपात्र उसी प्रकार से सनसनाता

हुआ जग्गी महाराज के साधना कक्ष तक पहुंच गया था

.....

जग्गी महाराज का शव दूसरे कमरे में पड़ा हुआ था । साधना कक्ष में दमयंती बेहोश पड़ी थी । मारण पात्र जाकर उसके उपर स्थित हुआ । उसमें स्थित मुंड निकलकर दमयंती के शरीर से जा चिपका । उसने दमयंती के शरीर का सारा का सारा खून चूस लिया । कुछ ही क्षणों में दमयंती निषप्राण अवस्था में वहां पर पड़ी हुई थी ।

जग्गी महाराज के गांव में गांव वालों ने सुबह जब दमयंती को मन्दिर में नहीं देखा तो उसकी तलाश में जग्गी महाराज के घर में जाकर देखा । वहां उनको दोनों की लाशें अलग-अलग कमरे में रक्तविहीन पीली अवस्था में पड़ी हुई मिली । इस अनहोनी से गांव वाले बुरी तरह से भयभीत हो चुके थे । डरते डरते उन्होंने दोनों का अंतिम संस्कार कर दिया ।

इधर भोलू जब घर नहीं लौटा तो हवेली में उसकी खोज चालू हुई । भोलू अपने गांव जाने की बात कहकर

बीच-बीच में इस तरह से गायब हो जाता था । उसके बाद एक-दो दिन में वापस आ जाता था । इसलिए एक-दो दिन तक लोगों ने इंतजार किया ।

चंदा को शक हुआ कि कहीं यह गुफा में तो नहीं गया है ?

लेकिन !

गोपनीयता बरतते हुए वह भी शांत बनी रही ।

कई बार भोलू दो-तीन दिन तक गायब हो जाता था और गुफा में अपनी साधना आदि करके फिर वापस लौटता था । चंदा ने इस बार भी वैसा ही कुछ होगा सोच कर ज्यादा ध्यान नहीं दिया ।

एक रात भोलू की आत्मा चंदा के कक्ष धुंधले स्वरूप में प्रकट हुई ।

भोलू की आत्मा ने कहा - मेरी मृत्यु हो चुकी है । मेरा शरीर गुफा में है । उसे वहीं पड़े रहने देना क्योंकि उसके बारे में अगर तुम बताओगी तो तुम्हारा वहां रहना भी

मुश्किल हो जाएगा । जैसा मैंने बताया है वैसे ही साल में एक बार पूजन अवश्य संपन्न करना । आने वाली पीढ़ियों को मेरी सिखाई हुई चीजें सिखाना और इस पूजन की विधि को बताना । ताकि तंत्र प्रयोग का यह प्रकोप इस परिवार पर अनंत काल तक बना रहे ।

चंदा ने सहमति में सिर हिलाया और सारी रात तकिए पर सिर रखकर हुलस हुलस कर रोती रही । उसकी आंखें सूज कर लाल हो गई सुबह लोगों ने पूछा तो वह फिर रो पड़ी लेकिन उसने किसी को कुछ भी नहीं बताया । गांव वालों ने सोचा कि पति के गायब होने के दुख में बेचारी रो रही है उनकी सहानुभूति उसके साथ बनी रही.....

गांव वालों को भोलू जब एक हफ्ते तक नहीं दिखा तो उन्होंने खोजबीन की । चंदा से भी उन्होंने पूछा । चंदा ने बताया कि मुझे बताकर नहीं गए हैं । धीरे-धीरे गांव वालों ने मान लिया कि भोलू कहीं लापता हो गया है । उसका शरीर नहीं मिला था इसलिए चंदा भी सुहागन के ही वेश में रहती थी । उस तथ्य को छुपाने के लिए यह जरूरी था ।

वह गुफा ऐसी जगह पर स्थित थी जहां पर कोई गांव वाला नहीं जाता था । इसलिए वह गुफा उसी प्रकार से गुप्त रही । उसका राज चन्दा के अलावा कोई नहीं जान पाया ....

चंदा उसी प्रकार प्रतिवर्ष अनुष्ठान करती रही और उसके बाद आने वाली पीढ़ियां भी हवेली के अंदर ही काम भी करती रही और बीच-बीच में इस प्रकार के अनुष्ठान भी संपन्न करते रहे । इसकी वजह से हर पीढ़ी में सबसे बड़ा पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो जाता था और उसके कुछ समय के बाद उसका पिता भी.....
कई पीढ़ियों से इसी प्रकार चंद्राकर परिवार में अनहोनी घटनाएं घटित होती चली आ रही थी और इस पीढ़ी के साथ लगभग 20 साल से खोरबहरीन भी उसी हवेली के अंदर निवास करते हुए अपने अनुष्ठान को जारी रखे हुए थी .....

इसी कारण उस कुए के अंदर रखी हुई तांत्रिक सामग्रियां लगातार उस परिवार के लिए अभिशाप के रूप में कार्य कर रही थी और उसी अभिशाप को समाप्त करने का निमित्त बन गया था मैं.....

छिन्नमस्ता प्रयोग

कई पीढ़ियों से इसी प्रकार चंद्राकर परिवार में अनहोनी घटनाएं घटित होती चली आ रही थी और इस पीढ़ी के साथ लगभग 20 साल से खोरबहरीन भी उसी हवेली के अंदर निवास करते हुए अपने अनुष्ठान को जारी रखे हुए थी .....

इसी कारण उस कुए के अंदर रखी हुई तांत्रिक सामग्रियां लगातार उस परिवार के लिए अभिशाप के रूप में कार्य कर रही थी और उसी अभिशाप को समाप्त करने का निमित्त बन गया था मैं.....

इतनी जानकारी होने के बाद अब उन सारी तांत्रिक सामग्रियों को पूर्ण विधि-विधान के साथ शांत करना जरूरी था । ताकि .... आगे किसी प्रकार की समस्या ना आए ।

मेरे जीवन में यह पहली बार था कि इस प्रकार की कोई समस्या सामने आई थी जब किसी काले जादू की जानकार महिला से मेरा सामना हुआ था । मेरी

जानकारी में यह नहीं था कि इस प्रकार की सामग्रियों को कैसे शांत किया जाता है । मैंने कपालिनी से इसके विषय में भी पूछा लेकिन वह मौन रही । हो सकता है किसी प्रकार की प्रतिबद्धता हो । जिसकी वजह से वह मुझे इसके संबंध में जानकारी नहीं दे पा रही थी । ऐसी स्थिति में मेरे पास जो सबसे जबरदस्त उपाय था , वह थे मेरे डोम बाबा । ।

मैंने मनोहर चंद्राकर को बताया – आपकी समस्या के समाधान के लिए उपाय निकालने के लिए जा रहा हूं । हो सकता है उसके लिए कुछ सामग्री की आवश्यकता पड़े । मैं आपको एक-दो दिन में सूचित कर दूंगा ।

उन्होंने मुझसे पूछा - इस बोरे का क्या करना है ?

मैंने उनसे पूछा - क्या आप के घर में कोई ऐसा छोटा खाली कमरा है जिस तरफ कोई जाता नहीं हो । एक-दो दिन के लिए इसे वहीं पर रखना पड़ेगा । मैं आवश्यक बंधन कर दूंगा लेकिन उस कमरे में कोई जाना नहीं चाहिए । हो सके तो उसके आसपास भी नहीं जाना चाहिए ।

दाऊ जी ने कहा - हाँ एक कमरा है । ऊपर वाली मंजिल में है और उसमें लोहे के बक्से वगैरह भरे पड़े हैं । वहां कोई आम तौर पर नहीं जाता । उसमें कोई खिड़की भी नहीं है और दरवाजा भी मजबूत है । लेकिन क्या इसे घर में रखना जरूरी है ? कहीं दूसरी जगह रखवाने से नहीं चलेगा क्या ?

मैंने कहा - यह सारी तांत्रिक सामग्री है मैं इसे बांध कर चला जाऊंगा । लेकिन । अगर किसी ने इसे खोल दिया तो फिर आपको समस्या हो सकती है । घर में रहेगा तो आप उस पर नजर रख पाएंगे और कोई आदमी उस तक आसानी से नहीं पहुंच पाएगा । वैसे भी एक-दो दिन की बात है उसके बाद इसकी परमानेंट शांति हो जाएगी । इतना सुनकर दाऊजी सहमत हुए ।

उस बोरे को एक लोहे के संदूक में डाल दिया गया और उस कमरे में रखवा दिया गया । सभी को कमरे से बाहर चले जाने के लिए कहा । मैंने काले रंग का धागा मंगवाया था । स्मशान भैरव के मंत्र का जाप करते हुए काली रस्सी को मैंने उसके चारों तरफ लपेट दिया । संदूक के चारों तरफ सिंदूर से महाकाली का मंत्र जपते

हुए सीमा रेखा भी बना दी । संदूक के ऊपर त्रिकोणी यंत्र भी बना दिया । उसके बाद मैं कमरे से बाहर निकला । ताला लगाया और ताले के ऊपर भी मंत्र जाप करते हुए कुमकुम और सिंदूर का टीका लगा दिया । उस ताले को लाल कपड़े से अच्छी तरह बांध लिया । उसके बाद शमशान भैरव के मंत्र का जाप करते हुए उस लाल कपड़े के ऊपर भी काले रंग का धागा अच्छी तरह से लपेट दिया ।

भैरव बाबा के निमित्त दरवाजे के दोनों तरफ सरसों के तेल के दो दीपक जला कर रख दिया । दोनों दियो में लगभग एक 1 लीटर तेल रहा होगा यानी 2 दिन वह आसानी से चल सकते थे....

अब मुझे डोम बाबा से मिलना था । डोम बाबा से मिलने के लिए मैं शिवनाथ नदी के मसान घाट पर पहुंचा । उस समय लगभग 4 बज रहे थे । बाबा अपनी दैनिक जिम्मेदारियां निभा रहे थे । मुझे देख कर मुस्कुराए और इंतजार करने के लिए कहा । लगभग आधा घंटे में उनका कार्य समाप्त हुआ । उसके बाद उन्होंने मुझे साथ आने का इशारा किया । नदी की घाट

पर बनी हुई सीढ़ियों पर जाकर बैठ गए ... मैं भी उनके साथ जाकर बैठ गया ।

जैसा कि आप लोग भी जानते होंगे मसान घाट में शव को जलाने वाले डोम को या तो शराब की बोतल दी जाती है या उसके लिए उसे पैसे दिए जाते हैं । यह एक सामान्य सी प्रक्रिया है जिसका लगभग हर श्मशान में पालन होता है । बाबा के पास भी एक बोतल थी उन्होंने उसको मुंह पर लगाया और दो घूट मारने के बाद मेरी तरफ बढ़ा दिया । मैंने भी उस में से दो घूंट मारे और डोम बाबा की तरफ बढ़ा दिया । फिर चर्चा प्रारंभ हुई.....

मैंने उन्हें चंद्राकर परिवार की सारी कहानी बता दी । पूरी कहानी सुनने के बाद उन्होंने एक जोर का अट्टहास लगाया और कहा - तो तेरा भी टोनही से सामना हो गया । चल आगे तेरे काम आएगा ।

उन्होंने बताया - वास्तव में नकारात्मक शक्तियां भी बेहद प्रभावशाली होती हैं । अगर उनका नित्य अनुष्ठान किया जाए और कई बार वे इतनी शक्तिशाली हो

जाती है कि उन्हें नियंत्रित करना बहुत मुश्किल होता है । अगर दमयंती ने कृत्या साधना की बजाय कोई और साधना की होती तो संभवतः भोलू अवश्य उस साधना का निराकरण कर पाता । कृत्या ही एकमात्र ऐसी संहारक शक्ति है जो इतनी तीव्र गति से प्रहार करती है कि संबंधित व्यक्ति जानकार होते हुए भी अपने प्रयोग को संपन्न नहीं कर पाता है और उसकी संहारक शक्ति के सामने विवश होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है.... वर्तमान में यह सारी शक्तियां खोर बहरीन से संबंधित है तो इसका एक तरीका तो यह है कि खोरबहरीन अगर समाप्त हो जाए तो यह सारी शक्तियां भी अपने आप नष्ट हो जाएंगी । दूसरा तरीका यह है कि अगर तुम इन सारी शक्तियों को शांत कर दोगे या नष्ट कर दोगे तब भी खोर बहरीन की शक्तियां समाप्त हो जाएंगी और चंद्राकर परिवार इस समस्या से मुक्त हो जाएगा ।

मैंने पूछा - बाबा क्या करना होगा।

बाबा आंखें बंद करके ध्यानस्थ हो गए । जैसा की आप लोगों ने मेरे पहले अंक तांत्रिक अघोरानंद में पढ़ा होगा कि डोम बाबा मेरे अग्रज गुरु भाई है । वे साधना क्षेत्र

में विशेष रूप से अघोर साधना में सिद्धहस्त साधक है । जब भी मुझे किसी विषय में मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है या मेरे पास कोई रास्ता दिखाई नहीं देता तब मैं उनके पास आता हूं । वह मुझे स्पष्ट मार्गदर्शन देते हैं जिस पर चलकर मैं अपना कार्य पूर्णता के साथ संपन्न कर पाता हूं ।

लगभग 5 मिनट बाद उनका ध्यान टूटा । उन्होंने मुझसे कहा कि तुम छिन्नमस्ता प्रयोग संपन्न करो और साथ ही काले रंग के बकरे की बलि भी प्रदान करो । यह सारा कार्य श्मशान में ही संपन्न करना होगा । इस प्रकार साधना संपन्न होने के बाद जब तुम वापस उस घर में जाओ तो कुछ प्रक्रियाएं संपन्न करना और 11 माला का मंत्र जाप करना । जिसके बाद देवी का आवेश वहां पर उपस्थित स्त्री के ऊपर आएगा । फिर आगे का मार्गदर्शन वह करेगी ।

मैंने उनसे कहा - छिन्नमस्ता देवी के बारे में कुछ बताएं ?

डोम बाबा बोले - महामाया की लीला अपरंपार है। उनकी माया का विस्तार ही यह संसार है। जगदंबा के 10 स्वरूप माने गए हैं जिनको महाविद्या कहा जाता है उनमें से एक स्वरुप है छिन्नमस्ता। इसमें दो शब्द है पहला है छिन्न , जिसका मतलब होता है कटा हुआ। दूसरा शब्द है मस्ता या मस्तिका इसका मतलब होता है सिर या मुंड। छिन्नमस्ता का मतलब हुआ एक ऐसी देवी जिसका सिर खंडित है या जिसका सिर कटा हुआ है।

इनके उद्भव के संबंध में जो कथा है वह भी बड़ी विचित्र है। देवी के दो प्रिय सखियां हैं जिनका नाम है जया और विजया। एक समय जब वे देवी के साथ विचरण कर रही थी तब उनको बड़े जोर की भूख लगी। वे अत्यंत क्षुधातुर होकर देवी से अपनी भूख को शांत करने की प्रार्थना करने लगी। उस समय वहां पर कुछ भी उपलब्ध नहीं था। उनकी क्षुधा सुनकर देवी को भी क्षुधा की उत्पत्ति होने लगी .....

बार-बार उनके याचना को सुनकर व्यथित देवी ने स्वयं अपना सिर काट दिया और उनकी गर्दन से रक्त की तीन

धाराएं निकलने लगी । जिसमें से एक धारा जया के मुख में गई । दूसरी धारा विजया के मुख में गई और तीसरी धारा स्वयं देवी छिन्नमस्तिका के कटे हुए शीश के मुख मे आकर गिरने लगी । उनका स्वरूप इसी प्रकार का है ।

वह विपरीत रति में संलग्न रती कामदेव के ऊपर खड़ी हुई है । उनका कटा हुआ मुंड उनके हाथ में है । उनके गर्दन से निकलती हुई तीन धाराओं में से एक रक्त धारा उनके हाथ में रखे हुए मुंड पर गिर रही है और जया विजया अगल बगल में खड़ी होकर बाकी दोनों रक्त धाराओं से अपनी क्षुधा को शांत कर रही हैं ।

शत्रु सम्हार तथा तांत्रिक प्रयोगों के निवारण के लिए छिन्नमस्तिका साधना से श्रेष्ठ कोई साधना नहीं है । उनकी क्षुधा हर प्रकार के शत्रुओं का सर्वनाश करने में सक्षम है । इसलिए प्रचंड मारण प्रयोग और तांत्रिक प्रयोगों में इसी महाविद्या का प्रयोग होता है । तुमको समय-समय पर इन सारी महाविद्याओं का प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ेगी । इसलिए इनमें से प्रत्येक महाविद्या के मंत्रों का जाप करना चाहिए । इतना कहकर वे शांत हो गए....

मैंने उनके चरण स्पर्श किए और वापस अपने घर आ गया । यह सारी जानकारी होने के बाद मैंने आवश्यक सामग्रियों की एक लिस्ट बनाई और मंगलवार की रात अनुष्ठान करने का तय किया ।

दाऊ जी को लिस्ट मैंने लिखवा दी और साथ ही मैंने उनसे यह भी कहा कि अगर कोई ऐसी सरल स्वभावी महिला हो जो पूजा पाठ जैसे कार्यों में ज्यादा रत रहती हो तो उसे भी बुला ले क्योंकि ऐसी महिलाओं के ऊपर शक्तियों का आगमन आसानी से हो सकता है ।

सोमवार का दिन कार्यालय के कार्य में व्यतीत हो गया । कार्यालय से आने के बाद मैं लगभग डेढ़ दो घंटे सो गया और रात्रि लगभग 9 बजे मैंने अपने गुरुदेव के ग्रंथों में से छिन्नमस्ता साधना की विधि निकाली और सारी रात उनके मंत्र जाप में रत रहा ।

अगर आप किसी भी देवी या देवता का अनुष्ठान करने जा रहे हो तो यह अत्यंत आवश्यक है कि आप अपने घर में भी संबंधित देवी या देवता का अनुष्ठान मंत्र जाप करके जाएं । प्रत्येक देवी देवता का अनुष्ठान करने से

पहले उनकी अनुमति और आशीर्वाद अगर ले लिया जाए तो अनुष्ठान सफल भी होता है और उनकी कृपा प्राप्ति की संभावनाएं भी बढ़ जाती है ।

अगले दिन मंगलवार था और मुझे दाऊजी के यहां अनुष्ठान करने जाना था क्योंकि अनुष्ठान रात को करना था इसलिए मंगलवार के दिन भी मैं कार्यालय चला गया । बुधवार के लिए मैंने छुट्टी भर दी। मंगलवार की रात्रि को पूजन होना था और उसके बाद वापस दाऊजी के घर में भी पूजन करना पड़ता । यह सब करते करते सुबह हो जाती ऐसी स्थिति में कार्यालय जाने की संभावना कम थी ।

मंगलवार की शाम को लगभग 5:30 बजे मैं घर पहुंचा । दाऊजी को 7 बजे तक गाड़ी भेजने के लिए मैंने कहा था । नहा धोकर मैं पूजन कक्ष में बैठा । गुरु पूजन संपन्न करके मैं गुरु मंत्र की मालाएं संपन्न कर रहा था । मेरे गुरु ने मुझे नित्य प्रति कम से कम चार मालाएं मंत्र जाप करने का निर्देश दिया था। जिसका पालन करने का मैं हर संभव प्रयास करता था । उस दिन भी मैंने गुरु मंत्र की चार माला ही संपन्न की ।

उसके बाद मैंने छिन्नमस्ता देवी का ध्यान किया.....

भास्वन्मण्डलमध्यगां निजशिरश्छिन्नं विकीर्णालकम् ।
स्फारास्यं प्रपिबद्गलात् स्वरुधिरं वामे करे बिभ्रतीम् ॥
याभासक्तरतिस्मरोपरिगतां सख्यौ निजे डाकिनी ।
वर्णिन्यौ परिदृश्य मोदकलितां श्रीछिन्नमस्तां भजे।।

इसके बाद भगवती छिन्नमस्ता के मूलमन्त्र का रुद्राक्ष माला से 11 माला जाप किया

।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्र वैरोचनीयै हूँ हूँ फट् स्वाहा ।।

जब संपन्न होने के बाद मैंने आरती की और तैयार होकर बैठ गया मैंने अपना तांत्रिक झोला भी साथ में रख लिया था । जिसमें आवश्यक सामग्रियां रखी रहती थी ।

ड्राइवर गाड़ी लेकर सात बजे आ गया । हम लोग घर पहुंचे और उसके बाद उस कक्ष में से तांत्रिक सामग्रियां जो कुएं से निकली थी उन से भरे हुए बोरे को निकाल कर गाड़ी में रख लिया । साथ में काला बकरा भी था और कुछ शराब की बोतल भी ।

इसके बाद गाड़ी मसान घाट की ओर चल पड़ी । वहां के डोम से पहले ही बात हो चुकी थी और उसको कहा गया था कि वह एक चिता सजा कर रखें । जब हम लोग पहुंचे तो हमने देखा कि डोम पूरी तैयारी करके रख चुका है चिता सजी हुई थी । बकरे का पूजन किया और उसे उसी चिता के पास बांध दिया गया । इस चिता में कुएं से मिली सामग्रियों का दाह संस्कार होना था क्योंकि उसमें कुछ मुंड भी थे ।

श्मशान जागरण की क्रिया प्रारंभ हो रही है । मैंने डोम को सूचित किया कि वह चिता में आग लगा दे...

चिता थोड़ी देर में जलने लगी । मैंने डोम को चिता मे मदिरा डालने का निर्देश दिया ...

उसने जैसे ही मदिरा की बोतल खोली और बोतल से मदिरा डालना प्रारम्भ किया .....

चिता के अंदर पढ़ी हुई तांत्रिक सामग्रियां हिलने लगी जैसे बाहर निकल पड़ना चाहती हों । उनके ऊपर रखे हुए मोटे मोटे लकड़ी के पट्टे अपने आप ऊपर की तरफ उठ जाते कभी दाएं बाएं खिसकने लगते । यह देख कर मैं अपने स्थान से उठा तथा सबसे पहले श्मशान काली मंत्रों से चिता को घेरना प्रारंभ किया.....

मेरे तीन चक्कर लगाते की हलचल बंद हो गई लेकिन मैं किसी प्रकार का रिस्क नहीं लेना चाहता था....

मैंने चिता के चारों तरफ श्मशान भैरव पीठ की स्थापना करते हुए कोनों में सिंदूर लगे हुए नींबू को स्थापित कर

श्मशान जागरण की क्रिया प्रारंभ हो रही है । मैंने डोम को सूचित किया कि वह चिता में आग लगा दे...

चिता थोड़ी देर में जलने लगी । मैंने डोम को चिता मे मदिरा डालने का निर्देश दिया ...

उसने जैसे ही मदिरा की बोतल खोली और बोतल से मदिरा डालना प्रारम्भ किया .....

चिता के अंदर पढ़ी हुई तांत्रिक सामग्रियां हिलने लगी जैसे बाहर निकल पड़ना चाहती हों । उनके ऊपर रखे हुए मोटे मोटे लकड़ी के पट्टे अपने आप ऊपर की तरफ उठ जाते कभी दाएं बाएं खिसकने लगते । यह देख कर मैं अपने स्थान से उठा तथा सबसे पहले श्मशान काली मंत्रों से चिता को घेरना प्रारंभ किया.....

मेरे तीन चक्कर लगाते की हलचल बंद हो गई लेकिन मैं किसी प्रकार का रिस्क नहीं लेना चाहता था....

मैंने चिता के चारों तरफ श्मशान भैरव पीठ की स्थापना करते हुए कोनों में सिंदूर लगे हुए नींबू को स्थापित कर

दिया और उनके सामने मांस और मदिरा का भोग भी रख दिया ....

हलचल शांत हो चुकी थी और चिता की अग्नि धीरे-धीरे भभक रही थी मैं आसन पर बैठकर अपने मंत्र जाप में लीन हो गया । लगभग आधे पौन घंटे तक शांति बनी रही । एक घंटे का समय व्यतीत होते होते चिता की अग्नि भरपूर लपटों तक आ चुकी थी । चिता में से हृदय विदारक रोने की आवाजें निकल रही थी । ऐसा लग रहा था जैसे किसी बच्चे को बुरी तरह से मारा जा रहा है .....

वह ऐसी ध्वनियाँ थी जिसे सुनकर सुनने वाले की अंतरात्मा तक हिल जाए । मुझे भी विचलन का आभास होने लगा लेकिन किसी तरह से मैंने अपने आप को शांत किया और मंत्र जाप करता रहा....

उस समय रात के लगभग 10 बज चुके थे पूरा शमशान साँय साँय कर रहा था....

अचानक चमगादड़ का एक झुंड गोल गोल चक्कर मारने लगा .....

वह तेजी से मेरी तरफ आते और फिर कट कर पूरी चिता का एक चक्कर लगाते और दूर निकल जाते .....

चमगादड़ आमतौर पर रोशनी की तरफ नहीं आते हैं उनका इस प्रकार से चिता की रोशनी में आ जाना किसी अनहोनी की ओर संकेत कर रहा था.....

श्मशान के कुत्ते भयानक स्वर में विलाप करने लगे .... ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने कुछ देख लिया हो और उससे डर कर वह रुदन कर रहे हो .....

थोड़ी देर में विचित्र किस्म की आकृतियां दिखाई देने लगी ॥अजीब अजीब प्रकार की आकृतियां जिनके आकार जितने विचित्र थे उतने ही उनके शरीर की स्थितियां भी विचित्र थी । अधिकांश पूरी तरह निर्वस्त्र थे । किसी की एक आंख थी . किसी की कई आंख । कोई 1 फुट लंबा था तो कोई 10 फुट लंबा . कोई 3 - 4 फुट चौड़ा था तो कोई बांस के डंडे जैसा पतला । कुल मिलाकर जितने प्रकार के आकार प्रकार की कल्पना की जा सकती है, उन सारे आकार प्रकार के चित्र विचित्र जीव दिखाई दे रहे थे .....

शमशान जागरण की प्रक्रिया लगभग पूर्ण हो चुकी थी.....

तभी .....

चिता के दूसरी तरफ सामने खोरबहरिन प्रकट हो गई । उसे अचानक से इस प्रकार सामने देख कर डोम भयभीत होकर भागने की कोशिश करने लगा और वही बगल में गिरकर बेहोश हो गया ....

मैंने डोम को सुरक्षा घेरा बनाकर उसके अंदर ही बैठने के लिए कहा था । किसी भी स्थिति में उठकर ना भागने की चेतावनी भी दी थी ।

लेकिन .....

खोरबहरीन और इतनी सारी विचित्र आकृतियों को देखकर वह अपना आपा खो बैठा और आसन छोड़कर घेरे से बाहर निकला और बेहोश हो गया....

खोरबहरीन मेरा ध्यान आकर्षित करने के लिए अब डोम पर प्रहार कर सकती थी ....

यदि ऐसा होता तो मेरी साधना में विघ्न पड़ सकता था । इसलिए मैंने तत्काल महाकाल भैरव का आह्वान किया .....

यं यं यं यक्ष रूपं दश दिशि विदितं भूमि कम्पायमानं

सं सं सं संहार मूर्ति शुभ मुकुट जटा शेखरं चन्द्र बिम्बं

दं दं दं दीर्घ कायं विकृत नख मुख चौर्ध्व रोमं करालं
पं पं पं पाप नाशं प्रणमतं सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ १ ॥

रं रं रं रक्तवर्णं कटक कटितनुं तीक्ष्णदंष्ट्रा विशालं
घं घं घं घोर घोषम घ घ घ घ घर्घरा घोर नादं
कं कं कं कालरूपं धग धग धगितं ज्वलितं कामदेहं
दं दं दं दिव्य देहं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ २ ॥

लं लं लं लम्ब दन्तं ल ल ल ल लुलितं दीर्घ जिह्वाकरालं
धूं धूं धूं धूम्रवर्ण स्फुट विकृत मुखंमासुरं भीम रूपं
रुं रुं रुं रुण्डमालं रुधिरमय मुखं ताम्र नेत्रं विशालं

नं नं नं नग्नरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥
३ ॥

वं वं वं वायुवेगं प्रलय परिमितं ब्रह्मरूपं स्वरूपं
खं खं खं खड्गहस्तं त्रिभुवन निलयं भास्करं
भीमरूपं
चं चं चं चालयन्तं चल चल चलितं चालितं भूत
चक्रं
मं मं मं मायकायं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥
४ ॥

खं खं खं खड्गभेदं विषममृतमयं काल
कालान्धकारं
क्षि क्षि क्षि क्षिप्र वेग दह दह दहन नेत्रं
संदीप्यमानं
हूं हूं हूं हूंकार शब्दं प्रकटित गहन गर्जितं भूमिकंपं
बं बं बं बाललिलम प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं
॥ ५ ॥

धूम्रवर्ण काली आकृति स्पष्ट होते ही मैंने चिता पर भोग द्रव्य समर्पित किया । उनको ध्यान करते डोम की रक्षा का निवेदन किया और पुनः अपने जाप मे लग गया । भैरव रक्षा के देवता हैं और श्मशान के सभी शक्तियों के स्वामी भी इसलिए उनके संरक्षण में कोई भी व्यक्ति श्मशान में किसी प्रकार की हानि का अनुभव नहीं कर सकता यह एक अकाट्य सत्य है इसलिए मैं डोम की तरफ से निश्चिंत हो गया और अपने साधना में लग गया ।

चिता के दूसरी तरफ वह भी अपने प्रयोग में लगी हुई थी । चिता पर सजी हुई एक जलती हुई बड़ी लकड़ी अपने आप मेरी तरफ उठकर आने लगी ....

चिता के दोनों तरफ से बड़े-बड़े विशालकाय मगरमच्छ भी मेरी तरफ आने लगे जैसा कि आप लोग भी जानते होंगे यह सब तंत्र की माया है लेकिन उसे देखने से साधक का भयभीत होना भी स्वाभाविक है । लेकिन मुझ से लगभग 1 फुट की दूरी पर आकर वह लकड़ी नीचे गिर गई संभवतः रक्षा घेरे से टकरा गयी होगी .....

उसके साथ ही वे सारे विशालकाय मगरमच्छ भी लुप्त हो गए ....

मेरा मंत्र जाप निरंतर जारी था....

तभी .....

चिता में से एक विशाल धुंधली सी आकृति प्रकट हुई ....

जिसका संपूर्ण शरीर की आकृति तो दिखाई दे रही थी मगर सिर दिखाई नहीं दे रहा था .....

डोम बाबा के निर्देशानुसार मैंने उनको वह काला बकरा तत्काल समर्पित किया और साथ ही भोग द्रव्य भी चिता पर प्रदान किया ... बलि से तृप्त होकर वह आकृति बली लेकर लुप्त हो गई.....

उधर खोर बहरीन अपने प्रयोग में लगी हुई थी । उसने अपनी शक्तियों को केंद्रित करके फिर मुझ पर मारण प्रयोग का प्रहार किया । उसकी तरफ से एक आग का गोला मेरी तरफ लपका .....

यहीं पर खोरबहरिन से गलती हो गई ....

जैसे ही वह शक्ति मेरी तरफ लपकी ऐसा लगा जैसे वह दिव्य शक्ति उसके और मेरे बीच में आ गई हो । जितनी तेजी से खोर बहरीन की शक्ति मेरी तरफ आई थी उतनी ही तेजी से उसके छोटे छोटे टुकड़े-टुकड़े होकर अग्निपिंड चारों तरफ बिखर गए ऐसा लगा जैसे कोई बड़ा अनार जल रहा हो .....

बात वहीं पर खत्म नहीं हुई ....

इस घटना को खोर बहरीन विस्फारित नेत्रों से देख रही थी ....

उसे जैसे विश्वास नहीं हो पा रहा हो कि उसकी शक्तियों के साथ ऐसा भी हो सकता है.....

एक क्षण बाद .....

खोर बहरीन का शरीर हवा में उछलता हुआ लगभग 20 फीट पीछे की तरफ गिर गया । ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके सीने पर जोर की लात मारी हो । कल्पना कीजिये

कि वह लात कितनी जोर की होगी कि उसका पूरा शरीर इतनी दूर तक फेका गया । नीचे गिरते ही खोरबहरिन वहां से लुप्त हो गई....

भयानक आवाज और चीखने चिल्लाने का दौर काफी देर तक चलता रहा और उसके बाद पूरे श्मशान में शांति छा गई.....

लगभग 11 बजे मेरा जाप पूर्ण हो गया । चिता पूरी तरह से जल चुकी थी .....

उसके साथ ही जल चुकी थी खोरबहरीन की सारी तांत्रिक सामग्रियां .....

अब तक डोम को भी होश आ गया था ..... वह अपनी बड़ी बड़ी आंखों से आश्चर्य से मेरी तरफ देख रहा था ।

मैंने बचा हुआ बोतल उसकी तरफ बढ़ाया उसने एक ही सांस में उसको पी लिया ... तब जाकर वह थोड़ा सा शांत हुआ और पीछे की तरफ लुढ़क गया .....

इसके बाद आगे की प्रक्रिया भी संपन्न करनी थी ।

इसलिए मैं उठकर में श्मशान से बाहर आया । रात

लगभग 11:30 बजे हम लोग वापस हवेली में पहुंचे । सभी लोग बेचैनी से इंतजार कर रहे थे ....

बच्चे सो चुके थे .....

वहां मैंने देखा दाऊजी और उनकी पत्नी के अलावा एक लगभग 50 साल की महिला भी बैठी हुई थी । दाऊजी ने उनसे मेरा परिचय कराया उनका नाम माधुरी था और वे दाऊजी के द्वारा बनाए गए मंदिर की देखभाल करने वाले पुजारी देवकीनंदन की पत्नी थी । पुजारी भी वहाँ मौजूद थे ।

मनोहर जी की पत्नी को मैंने कहा कि जब मैं संकेत करूं कि देवी का आगमन हो चुका है तो वे स्वयं आगे बढ़कर उनको चरण स्पर्श करके आरती धूप दीप आदि प्रस्तुत करें और तिलक करें । उसके बाद वे मार्गदर्शन प्रदान करेंगी । उन्होंने सहमति में सिर हिलाया ।

उनको अपने सामने एक कुर्सी पर लाल रंग का आसन लगाकर बिठाया । उनकी तीन परिक्रमा की अपने गुरुदेव को प्रणाम किया । माधुरी जी के चरणों

में कुमकुम का टीका लगाया और उनको अगरबत्ती दिखाकर मैं मंत्र जाप करने लगा .....

लगभग 5 माला मंत्र जाप होते होते वह महिला अपने आसन पर हिलने लगी ... 11 माला पुरी होते होते उसकी आंखें बड़ी और सुर्ख लाल हो चुकी थी ..... मैंने संकेत किया और दाऊजी की पत्नी ने धूप दीप देवी को समर्पित किया ....

मैंने हाथ जोड़कर उनसे निवेदन किया की मार्गदर्शन करें कि इस समस्या का समाधान किस प्रकार से हो सकेगा ....

देवी शक्तियां जब किसी स्त्री के ऊपर आती हैं तो कई बार वे अनियंत्रित भी हो जाती है । एक बार की घटना है कि एक देवी मूर्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पुनर्स्थापित करना था । मूर्ति लगभग 50 किलो की रही होगी । जिस युवती पर देवी का आगमन हुआ था । वह लगभग 35 किलो की दुबली पतली 16 वर्ष की स्कूल जाने वाली युवती थी । वह जिद पर अड़ गई की मूर्ति को वह अपने सर पर उठाकर ले जाएगी । बड़ी मुश्किल

से उसको मनाया गया । वरना आप सोच सकते हैं कि 35 किलो की युवती अगर 50 किलो वजनी मूर्ति को अपने सर पर लेकर जाएगी तो उसका क्या होगा ?

ऐसी स्थिति में सावधानी रखनी पड़ती है .....

मैं पूरी तरह से किसी प्रकार की परिस्थिति के लिए सावधानी के साथ तैयार था....

माधुरी जी अचानक अपनी कुर्सी से उठी और तेजी से दौड़ पड़ी । मैं भी अपने आसन से उठ कर उसके पीछे दौड़ा । वह कुएं में छलांग मारने वाली थी कि मैंने उसे पीछे से पकड़ लिया ..... तब तक उनके पति और मनोहर जी भी आ चुके थे ..... हम तीनों ने बड़ी मुश्किल से उनको पकड़ कर वापस आसन पर बैठाया ।

मैंने निवेदन किया - माता ! आप मार्गदर्शन करो ! उसके अनुसार हम लोग कार्य करेंगे । आप स्वयं कष्ट मत करो .....

काफी देर तक उछल कूद मचाने के बाद वह शांत हो गयी और आंख बंद करके ध्यान की मुद्रा में बैठ गयी ।

कुमकुम और चावल हल्दी तथा लगभग सारी पूजन सामग्री वहाँ एक थाली में सजाकर सामने रखी हुई थी । उन्होंने कुमकुम और चावल उठाया और अपने माथे से लगाने के बाद हथेली को खोला । उन चावलों को देखते हुए मंत्र जाप करने लगी । उस समय उसे देखने पर ऐसा प्रतीत होता था जैसे कोई सिद्धहस्त साधक कोई प्रयोग संपन्न कर रहा हो । मैं उनके सामने ही खड़ा हुआ था । मंत्र पढ़ने के बाद उन्होने चावल मेरे हाथ में दिया और संकेत से उसी कुएं में डालने के लिए कहा ।

चावल जैसे ही मेरे हथेली पर गिरे । उनके अंदर गंभीर ऊष्मा का एहसास हुआ । वे काफी गर्म थे । ऐसा लग रहा था जैसे तवे से उठाकर हाथ पर डाल दिया गया हो । मैं जल्दी से दौड़ कर गया और उन चावलों को कुएं के अंदर डाल दिया ।

जैसे ही चावल कुएं मे गिरे , जोर से चीखने की आवाज आई । ऐसा लगा जैसे किसी को चोट लगी हो और वह दर्द से कराह रहा हो ।

इतना कहकर उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरा और कुर्सी पर निढाल होकर गिर पड़ी । पुजारी जी और घरवाले घबराकर मेरी तरफ देखने लगे ।

मैंने कहा - आप चिंता ना करें । शक्ति का आवेश आने पर शरीर बुरी तरह से थक जाता है । जिसकी वजह से वह निढाल हो गई है । अगर ग्लूकोस या इलेक्ट्रोल हो तो घोल कर ले आइए और चाय बनाकर लाइए । वे जल्द ही ठीक हो जाएंगे ।

लगभग 5 मिनट तक उस स्थिति में रहने के बाद माधुरी जी हड़बड़ा कर उठी । हम सबको इस प्रकार से अपनी ओर देखता देखकर वह संकोच में आ गयी । उनको स्वस्थ देखकर सभी प्रसन्न हुए । इलेक्ट्रोल पिलाया गया और उसके बाद चाय का दौर चला .....

यह सब करते करते रात के एक बज चुके थे । मेरे सोने की व्यवस्था ऊपर वाले मंजिल पर की गई थी । मैं वहां जाकर गहरी नींद मे सो गया । रात ज्यादा हो जाने के कारण पुजारी तथा उनकी पत्नी भी हवेली में ही सो गए ।

अगले दिन कुए के दक्षिण भाग में छिन्नमस्ता देवी का हवन संपन्न किया गया और उसकी सारी राख कुए के अंदर ही डाल दी गई । महीने भर तक नियमित रूप से गंगाजल को कुएं में डाला गया , उसके बाद ही उस कुएं के पानी का इस्तेमाल किया गया ....

खोरबहरीन अस्पताल में भर्ती थी । जिस रात श्मशान में हवन हुआ था । उस दिन आधी रात को उसे दिल का दौरा पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई.....

इस घटना को लगभग 10 साल हो चुके हैं और अब मनोहर जी के परिवार में सुख शांति है और उनके सभी बच्चे भी जीवित और स्वस्थ हैं । भगवती की कृपा से सब कुछ कुशल मंगल है .....

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके
शरण्ये त्रयंबके गौरी नारायणी नमोस्तुते

न गुरोरधिकम ! न गुरोरधिकम !!
न गुरोरधिकम !!!

॥ श्री गुरु चरणार्पणम ॥

अनिल शेखर "अमस"

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. परेतिन की शादी ।